सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 01, अंक 359, नई दिल्ली । शुक्रवार, 08 मार्च 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हमेशा चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए इससे सफलता मिलेगी या तो शिक्षा।

03 साउथ दिल्ली में बदमाशों ने घर में घुसकर युवक को मार डाला...

06 इंतजार, अभी और इंतजार

08 शिव लोक कल्याणकारी हैं तो संकट विनाशक भी

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा 27 फरवरी को ए.एस. परिवहन के निर्देश पर जियोटैगिंग पर एक अवधारणा और सॉफ्टवेयर डेमो के माध्यम से जाने के लिए समय निर्धारित किया गया। जानें

संजय बाटला

नई दिल्ली। 27 फरवरी 2024 को एएस ट्रांसपोर्ट के निर्देश के आधार पर, आरवीएसएफ अनुपालन के लिए वाहनों की जियोटैगिंग पर श्री बख्शी और श्री केडिया द्वारा एक अवधारणा और सॉफ्टवेयर डेमो के माध्यम से जाने के लिए 30 मिनट का समय दिया गया। इस डेमो की प्रस्तुति पाइनव्यू टैक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड कुण्डली हरियाणा द्वारा प्रदान की गई और इस डेमो को देखने के लिए परेश कुमार गोयल, अवनेश कुमार शर्मा, नलिनी नौटियाल, अनिरुद्ध, एस. वी. बक्शी, दवे फाल्गुनी, इमरोज खान, विपिन शेखर, हरीश शर्मा, हर्ष प्रभाकर, महमूद अहमद, पटने यशस्वी, शशांक जुजारे उपस्थित थे। यह डेमो आरवीएसएफ अनुपालन के लिए वाहनों की जियोटैगिंग पर था जिसमें दिखाया और बताया गया वह नीचे आपके लिए प्रस्तुत है:-

आरवीएसएफएस पर स्क्रैपिंग तस्वीरों की जियो टैगिंग के तकनीकी समाधान के लिए प्रस्ताव

प्रस्तुतकर्ता:- पाइनव्यू टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड कुंडली-हरियाणा,

वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में, एमएसटीसी पोर्टल विशेष रूप से बोली लगाने के लिए सरकारी वाहनों की पेशकश करता है, जो विशेष रूप से पंजीकृत वाहन स्क्रैपिंग सुविधाओं (आरवीएसएफ) को सेवा प्रदान करता है, जो कि अंतिम जीवन सरकारी वाहनों के लिए नामित हैं। जबकि पूरे भारत में लगभग 100 आरवीएसएफ फैले हुए हैं, दिल्ली और उसके आसपास उल्लेखनीय एकाग्रता देखी गई है। हालाँकि, यह उल्लेखनीय है कि एंड-ऑफ-लाइफ वाहन (ईएलवी) पूरे देश में उपलब्ध हैं।

- यह स्पष्ट है कि आरवीएसएफ ईएलवी प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण संख्या वाहनों को उनके पंजीकृत स्थान पर नहीं लाने का विकल्प चुन रही है। इसके बजाय, कई आरवीएसएफ अपनी स्वयं की निर्दिष्ट सुविधाओं के अलावा अन्य स्थानों पर ईएलवी को नष्ट करने का विकल्प चुन रहे हैं।

समस्या

- एक बढ़ती हुई चिंता सामने आई है जहां कुछ आरवीएसएफ पूरे भारत से वाहन प्राप्त कर रहे हैं लेकिन उचित निपटान प्रक्रियाओं का पालन नहीं कर रहे हैं। इसके बजाय, वे अपनी लाइसेंस प्राप्त सुविधाओं के अलावा अन्य स्थानों पर वाहनों का निपटान करके पर्यावरण और श्रम नियमों जैसे अनिवार्य कानूनों के अनुपालन को नजरअंदाज कर रहे हैं। यह न केवल सभी आरवीएसएफ के लिए निष्पक्ष और समान अवसर बनाए रखने के लिए एक चुनौती है, बल्कि उन लोगों के लिए लॉजिस्टिक चुनौतियां भी पैदा करता है, जो अपनी निर्दिष्ट सुविधाओं के लिए वाहनों को लाकर नैतिक रूप से व्यापार करने का लक्ष्य रखते हैं।

समाधान

- इन चुनौतियों पर काबू पाने के लिए, समाधान एक तकनीकी समाधान का कार्यान्वयन है जो वाहन निपटान प्रक्रिया में पारदर्शिता, जवाबदेही और नियमों का पालन सुनिश्चित करता है। इस समाधान का मुख्य घटक एक मोबाइल एप्लिकेशन है जो स्क्रैप किए जा रहे वाहन की तस्वीर के साथ-साथ भौगोलिक स्थान भी कैप्चर करेगा।
- GSR653(E) दिनांक 23 सितंबर 2021 के तहत अधिसूचित आरवीएसएफ के लिए सीएमवीआर नियमों में संशोधन किया जाना चाहिए
- उक्त नियम के नियम 12 में उप नियम 3 जोड़ा जाना चाहिए ₹प्रत्येक आरवीएसएफ स्क्रैपिंग के लिए आरवीएसएफ में प्राप्त ईएलवी की तस्वीरें अपलोड करेगा, और तस्वीरें वाहन के चेसिस नंबर और पोर्टल पर स्क्रैपिंग प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करने वाली होनी चाहिए। मोर्थ (सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय) द्वारा नामांकित एक मोबाइल ऐप के माध्यम से। यह पोर्टल ऐसी प्रत्येक तस्वीर पर जियो-टैगिंग के साथ ऐसी तस्वीरें प्राप्त करेगा। चूंकि प्रत्येक आरवीएसएफ को अपनी सुविधा में ईएलवी के स्क्रैपिंग की प्रक्रिया करनी होगी।

मोबाइल ऐप

प्रत्येक आरवीएसएफ को एक विशेष मोबाइल एप्लिकेशन और एक अद्वितीय लॉगिन आईडी से सुसज्जित एक निर्दिष्ट अद्वितीय मोबाइल डिवाइस का उपयोग करना होगा। यह उपकरण, जिसमें एक एकीकृत कैमरा भी शामिल है, उपयोगकर्ताओं को टूटे हुए वाहनों की तस्वीरें खींचने और सबमिट करने की अनुमति देता है, प्रत्येक छवि पर स्वचालित रूप से स्थान टैग जोड़ता है।

- यह ध्यान रखना अनिवार्य है कि ये तस्वीरें उन्हें कैप्चर करने के लिए उपयोग किए जाने वाले डिवाइस में संग्रहीत नहीं हैं। इसके बजाय, वे तुरंत पूर्वनिर्धारित यू.आर.एल. पर प्रेषित हो जाते हैं। इसके अलावा, डिवाइस को किसी भी अन्य डिवाइस के साथ स्क्रीन साझा करने की क्षमताओं को प्रतिबंधित करने के लिए

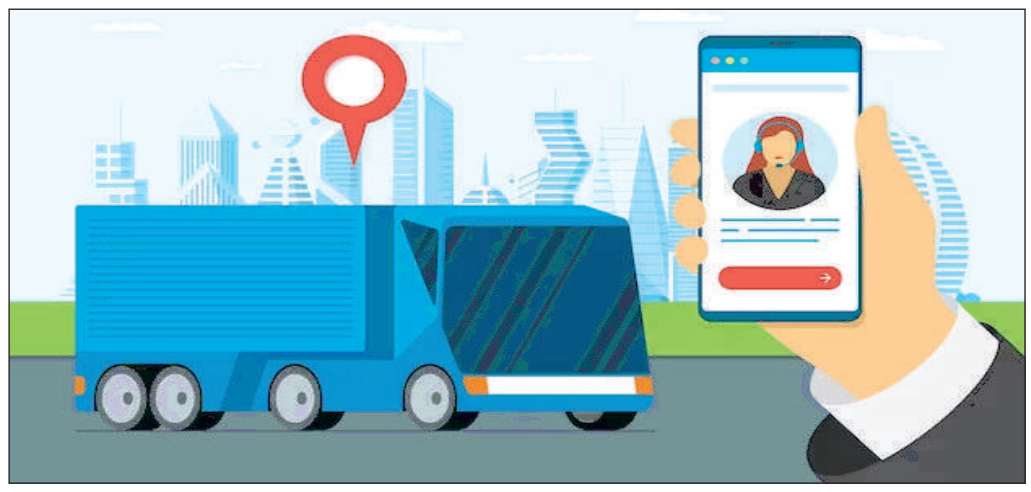

डिज़ाइन किया गया है, चाहे उसका स्थान कुछ भी हो।

- इसके अलावा, सिस्टम को बाहरी तकनीकी उपकरणों या अन्यत्र स्थित अन्य गैजेट्स का उपयोग करके वैकल्पिक स्थानों की तस्वीरें कैप्चर करने की संभावना को रोकने के लिए संरचित किया गया है। यह कठोर उपाय फोटो खींचने की प्रक्रिया के दौरान स्थान की सटीक स्थापना सुनिश्चित करता है।

फोटोग्राफ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया

- मोबाइल ऐप में लॉग इन करने पर, आरवीएसएफ उपयोगकर्ताओं को वाहन का चेसिस नंबर दर्ज करना चाहिए।
- फिर उपयोगकर्ता को प्रत्येक वाहन के लिए 5-10 तस्वीरें जमा करने के लिए कहा जाता है, जिसमें आरवीएसएफ में वाहन में प्रवेश करने पर एक प्रारंभिक तस्वीर, चेसिस नंबर का एक केंद्रित शॉट और स्क्रैपिंग प्रक्रिया की बाद की तस्वीरें शामिल हैं।
- अगली स्लाइड्स में कुछ उदाहरण दिए गए हैं

अक्षांश 28.61389166666667 देशांतर 77.05188833333334
देश नाम, भारत का पता
टी-92, संडे मार्केट रोड, नन्हे पार्क, ओम विहार, उत्तम नगर, दिल्ली, 110059, भारत इलाका दिल्ली

अक्षांश 28.6146975 देशांतर 77.0520881
देश नाम
भारत का पता
62, नन्हे पार्क, संजय एन्क्लेव, उत्तम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली, 110059, भारत इलाका, नई दिल्ली

*निश्चित अक्षांश/देशांतर: 28.613804/77.05197
त्रिज्या: 50.0 मीटर
आप वर्तमान निर्धारित स्थान से बाहर हैं

कब्जा
अक्षांश 28.614691666666666 देशांतर 77.05205166666666
देश नाम, भारत का पता
आरजेड-37/38, ब्लॉक बी, संजय एन्क्लेव, उत्तम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली, 110059, भारत इलाका नई दिल्ली

अक्षांश 28.6146726 देशांतर 77.0520478
देश नाम, भारत का पता
आरजेड-37/38, ब्लॉक बी, संजय एन्क्लेव, उत्तम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली, 110059, भारत इलाका नई दिल्ली

स्वचालित फ़्लैगिंग प्रणाली

- यदि कोई आरवीएसएफ अपनी निर्दिष्ट सुविधा के अलावा किसी अन्य स्थान से तस्वीरें जमा करने का प्रयास करता है, तो एक स्वचालित लाल झंडा उत्पन्न होता है।
- इसके साथ ही, संबंधित आरवीएसएफ, राज्य सरकार के परिवहन आयुक्त और सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) को एक तत्काल ईमेल अधिसूचना भेजी जाती है।

आरवीएसएफ: यूजर इंटरफेस

- मोबाइल ऐप एक उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफ़ेस प्रदान करता है जहां आरवीएसएफ उपयोगकर्ता उनके द्वारा उत्पन्न निपटान प्रमाणपत्र (सीओडी) देख सकते हैं।
- उपयोगकर्ता अपलोड की गई तस्वीरों के साथ वाहनों की एक व्यापक सूची तक पहुंच सकते हैं और लंबित सबमिशन की स्थिति को ट्रैक कर सकते हैं।
- आरवीएसएफ और सरकार के पास पूर्वनिर्धारित तरीके से मासिक रिपोर्ट हो सकती है।

निष्कर्ष

- इस प्रस्तावित तकनीकी समाधान का उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाना, कदाचार पर अंकुश लगाना और सभी आरवीएसएफ के लिए एक निष्पक्ष कारोबारी माहौल बनाना है। इस प्रणाली को लागू करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी हितधारक स्क्रैपिंग प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले पर्यावरण, श्रम और अन्य अनिवार्य कानूनों का अनुपालन करें।
- हम अपने वाहन निपटान प्रक्रियाओं की बेहतरी के लिए इस प्रस्तावित समाधान को परिष्कृत और कार्यान्वित करने के लिए आगे की चर्चा और सहयोग के लिए तैयार हैं।

जनहित में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय अगर इसे शुरु करता है तो आर.वी.एस.एफ. स्क्रैप के लिए वाहनों को नियत स्थान पर वाहन को स्क्रैप करने के लिए नियम अनुसार बाध्य हो जाएंगे।

नमो भारत में साहिबाबाद से मोदीनगर नॉर्थ तक कर सकेंगे सफर; सुबह छह से रात आठ बजे तक चलेगी ट्रेन

परिवहन विशेष न्यूज

बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलकाता से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हरी झंडी दिखाकर मुरादनगर से मोदीनगर नार्थ स्टेशन के लिए नमो भारत ट्रेन को रवाना किया था।

नई दिल्ली। नमो भारत ट्रेन में साहिबाबाद से मोदीनगर नॉर्थ स्टेशन तक यात्री शुक्रवार से सफर कर सकेंगे। दूसरे चरण में दुहाई से मोदीनगर नॉर्थ स्टेशन तक कॉरिडोर पर ट्रेनों का संचालन शुरू हो जाने के बाद अब शुक्रवार से इसे आम यात्रियों के लिए खोल दिया जाएगा। सुबह छह बजे पहली ट्रेन साहिबाबाद से मोदीनगर के लिए रवाना होगी। 34 किलोमीटर लंबे इस रूट पर रात आठ बजे तक नमो भारत ट्रेनों की सेवाएं मिलेंगी।

बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलकाता से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हरी झंडी दिखाकर मुरादनगर से मोदीनगर नार्थ स्टेशन के लिए नमो भारत ट्रेन को रवाना किया था। एनसीआरटीसी ने उद्घाटन के बाद शुक्रवार से इसे यात्रियों के लिए नियमित रूप से संचालित करने का निर्णय लिया था। एनसीआरटीसी के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पुनीत वत्स ने बताया कि उद्घाटन के बाद अन्य तैयारियों की वजह से गुरुवार को यात्रियों के लिए संचालन नहीं किया गया अब शुक्रवार से रोजाना संचालन किया जाएगा।

10 हजार से ज्यादा लोगों ने डाउनलोड किया कनेक्ट एप

नमो भारत ट्रेन में सफर करने के लिए लोग स्टेशनों पर बने टिकट काउंटर, स्मार्ट कार्ड या मोबाइल एप के माध्यम से ऑनलाइन टिकट बुक करा सकेंगे। ऑनलाइन बुकिंग करने पर एक क्यूआर कोड जनरेट होगा, इसे स्टेशन पर लगे स्कैनर के जरिए स्कैन करना होगा। इस क्यूआर कोड में ही यात्रा का ब्योरा दर्ज होगा। एनसीआरटीसी के अधिकारियों ने बताया कि नमो भारत ट्रेन में सफर करने के लिए अब तक 10 हजार से ज्यादा लोग कनेक्ट एप को डाउनलोड कर चुके हैं।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन (पहले इसे फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन के नाम से जाना जाता था) की ओर से शुभकामनाएं

International Federation of Electric Vehicle Association

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत के माननीय प्रधान मंत्री ने भारत के लिए एक विशाल लक्ष्य निर्धारित किया है - 2070 तक नेट-शून्य प्राप्त करना। इस विशाल कार्य को प्राप्त करने के लिए हरित (इलेक्ट्रिक) गतिशीलता महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने इसे प्राप्त करने के लिए कई उत्पादक और प्रगतिशील नीतिगत उपाय किए हैं।

इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन, i-FEVA विकास और नीति वकालत के लिए एक एसोसिएशन है। 2019 से, परीक्षण उपकरणों का अपना हिस्सा भारतीय वाणिज्य और उद्योग मंडल (टीआईआईसीसीआई) निवेश रोड शो आयोजित करने के लिए विदेशी मिशनों और सरकारों की सहायता (साझेदारी) कर रहा है; व्यापार और निर्यात प्रोत्साहन शिखर सम्मेलन; निवेश वकालत, व्यापार नेटवर्किंग, प्रौद्योगिकी विनिमय, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आदि के लिए बड़े पैमाने पर व्यापार सम्मेलन।

i-FEVA नेटवर्किंग, वकालत, परामर्श और के माध्यम से उद्योग, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों, नागरिक समाज और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच तालमेल बनाकर नीति निर्माण, निवेश और व्यापार-अनुकूल वातावरण और व्यापार विकास का समर्थन करता है। प्रशिक्षण। कोरिया, यूके, मलेशिया, दिल्ली, मुंबई और बैंगलोर में अपने सचिवालय और क्षेत्रीय समितियों के साथ, i-FEVA विभिन्न क्षेत्रों EV, स्थिरता, NET शून्य और अपशिष्ट प्रबंधन पर दृढ़ता से काम करता है।

आपकी प्रतिष्ठा को देखते हुए, हम आपको बोर्ड/पैनल के सदस्यों के रूप में आमंत्रित करना चाहते हैं,

i-FEVA से जुड़ने के लाभ

1. व्हाट्सएप प्लेटफॉर्म अन्य ईवी और एसेसरीज कंपनी के साथ तेजी से बातचीत करेगा।
2. ईवी उद्योग ओईएम, राज्य और केंद्र सरकारों के साथ भौतिक बातचीत के लिए मंच।
3. वैश्विक व्यापार और राजनीतिक नेताओं से ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से मिलने का मंच।
4. ईवी सेमिनार, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सम्मेलन।
5. फ़ोइन ओईएम सहयोग
6. विदेशी OEMs के साथ प्रौद्योगिकी और ज्ञान साझा करना
7. भारतीय और वैश्विक कॉर्पोरेट दिग्गजों के साथ नेटवर्किंग के अवसर।
8. ईवी व्यवसाय को बढ़ाने और नए ईवी बाजार और अवसर विकसित करने के लिए साझा मंच।
9. नीति, रणनीति, योजना, कार्यान्वयन और उद्योग प्रतिक्रिया के लिए सरकार का समर्थन करें।
10. आयात निर्यात पर विशेष प्रशिक्षण
11. वेबसाइट और सोशल मीडिया प्रमोशन
12. जीएसटी एवं आयकर मार्गदर्शन
13. निःशुल्क समाचार पत्र संपादकीय प्रतिदिन
14. आपके व्यवसाय की ब्रांडिंग और प्रचार
15. उत्कृष्टता केंद्र
16. आपके उत्पाद के प्रकार परीक्षण और अंशांकन के लिए समर्थन और मार्गदर्शन
17. उत्पाद विकास, डिज़ाइन, विपणन, बिक्री के लिए सहायता
18. बैंकिंग, वित्त, बीमा सहायता
19. भुगतान वसूली समर्थन
20. कानूनी सहायता
21. सदस्य निर्देशिका
22. स्टार्टअप समर्थन
23. महिला उद्यमियों और सेवानिवृत्त व्यक्तियों को उनके कौशल को बढ़ाने में सहायता करें
24 रोजगार सृजन सहायता

पुष्टि की एक पंक्ति की अत्यधिक सराहना की जाएगी।

नमस्कार,
Neelam Choudhary
अध्यक्ष के निजी सचिव
9910048126,
8929903155,
011-40113924
इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक वाहन एसोसिएशन (i-FEVA)
www.fevaev.com,
ईमेल:
चेयरमैन@fevaev.com।

[redacted] शर्मा कौशांबी बस अड्डे में संविदा पर चालक थीं और 13 माह तक नौकरी की। इस दौरान उन्होंने गाजियाबाद से लखनऊ, गोरखपुर सहित अन्य शहरों में बसें चलाईं।

छह हजार रुपये में नहीं चला घर, पहली महिला बस चालक प्रियंका ने छोड़ी नौकरी; फिर थामा ट्रक का स्टीयरिंग

परिवहन विशेष न्यूज

प्रियंका ने बताया कि वर्ष 2015 में पति की मौत के बाद उन्होंने ट्रक चलाया था। परिवहन निगम से भर्ती निकलने पर सरकारी नौकरी के लिए उन्होंने आवेदन कर दिया। आवेदन के बाद जॉब लगी। लेकिन छह हजार रुपये ही मिले इसमें घर का खर्च चलाना मुश्किल था।

साहिबाबाद (गाजियाबाद)। सूबे की पहली महिला बस चालक प्रियंका शर्मा का छह हजार रुपये में घर नहीं चला तो परिवहन निगम की नौकरी छोड़ उन्होंने ट्रक चलाना शुरू कर दिया। शर्मा कौशांबी बस अड्डे में संविदा पर चालक थीं और 13 माह तक नौकरी की। इस दौरान उन्होंने गाजियाबाद से लखनऊ, गोरखपुर, रायबेरली, अयोध्या, देहरादून, हरिद्वार, ऋषिकेश सहित अन्य शहरों में बसें चलाईं। वह पक्की नौकरी के लिए परिवहन निगम के अपर प्रबंध निदेशक और प्रबंध निदेशक से गुहार भी लगा चुकी हैं। बिहार के बांका जिला की रहने वाली प्रियंका शर्मा दिल्ली के शालीमार बाग में रहती हैं। वर्ष 2022 में वह कौशांबी बस डिपो में संविदा पर चालक की नौकरी पर लगीं। उन्होंने बताया कि परिवहन निगम से कम और समय पर वेतन नहीं मिलने से परेशानी हो रही थी। छह हजार रुपये से बच्चों की पढ़ाई और घर नहीं चल पा रहा था। जिसकी वजह से दो माह पहले परिवहन निगम की नौकरी छोड़कर फिर से ट्रक चलाना शुरू कर दिया। प्रियंका ने बताया कि वर्ष 2015 में पति की मौत के बाद उन्होंने ट्रक चलाया था। परिवहन निगम से भर्ती निकलने पर सरकारी नौकरी के लिए उन्होंने आवेदन कर दिया। आवेदन के बाद जॉब लगी। लेकिन छह हजार रुपये ही मिले इसमें घर का खर्च चलाना मुश्किल था। ऐसे में उन्होंने परिवहन निगम की नौकरी छोड़ दी और दोबारा ट्रक चलाने लगी।

बच्चों को देखने के लिए दो माह पहले प्रियंका ने छुट्टी ली थी। इसके बाद से वह डिपो नहीं आई।

-शिवबालक, सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक, कौशांबी डिपो

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस क्या है और क्यों मनाया जाता है, जानिए

हो सकता है कि आपने मीडिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के बारे में सुना हो. या फिर अपने दोस्तों को इस बारे में बातचीत करते हुए सुना होगा. मगर ये दिन क्यों मनाया जाता है? ये कब मनाया जाता है? ये कोई जश्न है? या फिर, विरोध का प्रतीक है? क्या महिला दिवस की तरह कभी अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस भी मनाया जाता है? और इस साल अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कौन-कौन से कार्यक्रम होंगे?

पिछली एक सदी से भी ज़्यादा वक्त से दुनिया भर में लोग आठ मार्च को महिलाओं के लिए एक ख़ास दिन के तौर पर मनाते आए हैं.
आइए जानने की कोशिश करते हैं कि इसकी क्या कहानी है?

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की शुरुआत कैसे हुई?

1910 में क्लारा जेटकिन नाम की एक महिला ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बुनियाद रखी थी.
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस या महिला दिवस, कामगारों के आंदोलन से निकला था, जिसे बाद में संयुक्त राष्ट्र ने भी सालाना जश्न के तौर पर मान्यता दी.
इस दिन को ख़ास बनाने की शुरुआत आज से 115 बरस पहले यानी 1908 में तब हुई, जब क़रीब पंद्रह हज़ार महिलाओं ने न्यूयॉर्क शहर में एक परेड निकाली.
उनकी मांग थी कि महिलाओं के काम के घंटे कम हों. तनख़्वाह अच्छी मिले और महिलाओं को वोट डालने का हक़ भी मिले.
एक साल बाद अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का एलान किया. इसे अंतरराष्ट्रीय बनाने का ख़याल सबसे पहले क्लारा ज़ेटकिन नाम की एक महिला के ज़हन में आया था.
क्लारा एक वामपंथी कार्यकर्ता थीं.
वो महिलाओं के हक़ के लिए आवाज़ उठाती थीं. उन्होंने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सुझाव, 1910 में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन में कामकाजी महिलाओं के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में दिया था.
उस सम्मेलन में 17 देशों से आई 100 महिलाएं शामिल थीं और वो एकमत से क्लारा के इस सुझाव पर सहमत हो गईं.
पहला अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटज़रलैंड में मनाया गया.
इसका शताब्दी समारोह 2011 में मनाया गया.
तो, तकनीकी रूप से इस साल हम 112वां अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने जा रहे हैं.
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को औपचारिक मान्यता 1975 में उस वक्त मिली, जब संयुक्त राष्ट्र ने भी ये जश्न मनाना शुरू कर दिया.
संयुक्त राष्ट्र ने इसके लिए पहली थीम 1996 में चुनी थी, जिसका नाम 'गुज़रे हुए वक्त का जश्न और भविष्य की योजना बनाना' था.
आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, समाज में, सियासत में, और आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की तरक्क़ी का जश्न मनाने का दिन बन चुका है.
जबकि इसके पीछे की सियासत की जो जड़ें हैं, उनका मतलब ये है कि हड़तालें और विरोध प्रदर्शन आयोजित करके औरतों और मर्दों के बीच उस असमानता के प्रति जागरूकता फैलाना है, जो आज भी बनी हुई है.

8 मार्च ही क्यों?

जब क्लारा जेटकिन ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का सुझाव दिया था, तो उनके ज़हन में कोई ख़ास तारीख़ नहीं थी.
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस तो 1917 में जाकर तय हुआ था, जब रूस की महिलाओं ने 'रोटी और अमन' की मांग करते हुए, ज़ार की हुकूमत के ख़िलाफ़ हड़ताल की थी.
इसके बाद ज़ार निकोलस द्वितीय को अपना तख़्त छोड़ना पड़ा था.
उसके बाद बनी अस्थायी सरकार ने महिलाओं को वोट डालने का अधिकार दिया था.

लोग इस दिन जामुनी रंग के कपड़े क्यों पहनते हैं?

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पहचान अक्सर जामुनी रंग से होती है क्योंकि इसे 'इंसाफ़ और सम्मान' का प्रतीक माना जाता है.
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की वेबसाइट के मुताबिक़, जामुनी, हरा और सफ़ेद अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रंग हैं.
वेबसाइट के मुताबिक़,
'जामुनी रंग इंसाफ़ और सम्मान का प्रतीक है. हरा रंग उम्मीद जगाने वाला है, तो वहीं सफ़ेद रंग शुद्धता की नुमाइंदगी करता है.'
हालांकि इस रंग से जुड़ी परिकल्पना को लेकर विवाद भी है. महिला अधिकार कार्यकर्ता कहते हैं, ₹महिला दिवस से ताल्लुक़ रखने वाले इन रंगों की शुरुआत 1908 में ब्रिटेन में महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक संघ (WSPU) से हुई थी.

क्या कोई अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस भी है?

हां, एक अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस भी है, जो 19 नवंबर को मनाया जाता है.
हालांकि, इसे मनाने का चलन ज़्यादा पुराना नहीं है. अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाने की शुरुआत 1990 के दशक से हुई थी और अभी इसे संयुक्त राष्ट्र से मान्यता भी नहीं मिली है.
ब्रिटेन समेत दुनिया के 80 से ज़्यादा देशों के लोग अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस मनाते हैं.
अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस के आयोजकों के मुताबिक़, ये दिन 'मर्दों के दुनिया में, अपने परिवारों और समुदायों में सकारात्मक मूल्यों के योगदान' के जश्न के तौर पर मनाया जाता है और इसका मक़सद पुरुषों के पॉज़िटिव रोल मॉडलों के बारे में दुनिया को बताने, मर्दों की बेहतरी को लेकर जागरूकता फैलाने के साथ-साथ, औरतों और मर्दों के आपसी रिश्तों को सुधारना है।

महिला दिवस कैसे मनाया जाता है?

कई देशों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश रहता है. इन देशों में रूस भी शामिल है, जहां आठ मार्च के आस-पास के तीन चार दिनों में फूलों की बिक्री दोगुनी हो जाती है.
चीन में राष्ट्रीय परिषद के सुझाव पर बहुत सी महिलाओं को आठ मार्च को आधे दिन की छुट्टी दे दी जाती है.
इटली में महिलाओं को आठ मार्च को मिमोसा फूल देकर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है.
ये परंपरा कब से शुरू हुई, ये तो साफ़ नहीं है.
मगर, माना ये जाता है कि इसकी शुरुआत दूसरे विश्व युद्ध के बाद रोम से हुई थी.
अमेरिका में मार्च का महीना महिलाओं की तारीख़ का महीना होता है. हर साल राष्ट्रपति की तरफ़ से एक घोषणा जारी की जाती है, जिसमें अमेरिका महिलाओं की उपलब्धियों का बखान किया जाता है.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2023 की थीम क्या है?

2024 के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के लिए संयुक्त राष्ट्र की थीम 'महिलाओं में करें निवेशः समृद्धि में लाएं तेज़ी' है.
हालांकि इस साल के अभियान की थीम 'इंस्पायर इंक्लूजन' है.
इसमें समाज के सभी पहलुओं में विविधता और सशक्तिकरण के महत्व पर ज़ोर दिया गया है.
अभियान का विषय लैंगिक समानता हासिल करने में समावेशन की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देता है.
यूएन वीमेन की बेवसाइट के मुताबिक लैंगिक समानता हासिल करने के लिए अभी अतिरिक्त 360 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष की ज़रूरत है.

महिला दिवस की ज़रूरत क्यों है?

पिछले दो साल के दौरान अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, यूक्रेन और अमेरिकाा जैसे कई देशों में महिलाएं अपने अपने देशों में युद्ध, हिंसा और नीतिगत बदलावों के बीच अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही हैं.
अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान की सत्ता में वापसी ने मानव अधिकारों के मामले में तरक्क़ी को बाधित कर दिया है, क्योंकि महिलाओं और लड़कियों को उच्च शिक्षा हासिल करने से रोक दिया गया गया है.
उनके घर से बाहर ज़्यादातर काम करने पर और किसी पुरुष संरक्षक के बग़ैर लंबी दूरी का सफ़र करने पर पाबंदी लगा दी गई है.
तालिबान ने महिलाओं को हुक्म जारी किया है कि वो घर से बाहर या दूसरे लोगों के सामने अपना पूरा चेहरा ढक कर रखें.

ईरान में विरोध प्रदर्शन

ईरान में 22 साल की महसा अमीनी नाम की महिला की मौत के बाद विरोध प्रदर्शन भड़क उठे थे. महसा को क़रीब दो साल पहले 13 सितंबर 2022 को ईरान की मॉरिलिटी पुलिस ने गिरफ़्तार किया था.
उन पर सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के अपने बाल दुपट्टे से ढंकने के सख़्त नियम को तोड़ने का इल्ज़ाम था.
उसके बाद से पूरे ईरान में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए, जिनका सिलसिला अब तक जारी है.
ईरान में कई महिलाएं और पुरुष अब महिलाओं के लिए बेहतर अधिकारों की मांग उठा रहे हैं. वो मौजूदा सियासी नेतृत्व में भी बदलाव चाहते हैं.
प्रदर्शनकारियों ने नारा दिया- 'औरतें, ज़िंदगी, आज़ादी'.
ईरान की हुकूमत इन विरोध प्रदर्शनों को 'दंगा' कहकर प्रदर्शनकारियों से बेहद सख़्ती से निपट रही है. विरोध प्रदर्शनों और सरकार के इन्हें कुचलने की कोशिशों में सैकड़ों लोग मारे गए.
24 फ़रवरी 2022 को रूस की सेना ने यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया था.
संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक़, युद्ध शुरू होने के बाद से यूक्रेन में खाने पीने की कमी, कुपोषण और ग़रीबी के मामले में औरतों और मर्दों के बीच फ़ासला बढ़ गया है.
युद्ध के चलते क़ीमतों में उछाल और क़िल्लत के कारण यूक्रेन में महिलाओं के प्रति हिंसा की घटनाओं में बहुत इज़ाफ़ा हो गया है.
24 जून 2022 को अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने रो बनाम वेड के एक ऐतिहासिक क़ानून को पलट दिया. इस क़ानून के तहत अमेरिकी महिलाओं को गर्भपात का अधिकार हासिल था.
सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के बाद से पूरे अमेरिका में इसके ख़िलाफ़ शोर उठा और विरोध प्रदर्शन हुए.
बहुत सी अमेरिकी महिलाएं, गर्भपात के लिए मेक्सिको जाने का विकल्प चुन रही हैं. क्योंकि, 2021 में एक ऐतिहासिक फ़ैसले के बाद, मेक्सिको में गर्भपात कराना जायज़ कर दिया गया था.
हालांकि, पिछले कुछ वर्षों के दौरान महिलाओं की स्थिति में सुधार भी आया है. दस साल के संघर्ष के बाद नवंबर 2022 में यूरोपीय संसद ने एक क़ानून पारित किया.
इससे 2026 तक बाज़ार में सार्वजनिक कारोबार करने वाली कंपनियों के बोर्ड में महिलाओं की अधिक नुमाइंदगी सुनिश्चित हो सकेगी.
यूरोपीय संघ ने कहा, ₹ऊपरी ओहदे पर बैठने की क़ाबिलियत रखने वाली बहुत सी महिलाएं हैं और अपने नए यूरोपीय क़ानून से हम ये सुनिश्चित करेंगे कि इन महिलाओं को उन ओहदों तक पहुंच पाने का असली मौक़ा मिल सके.₹
इसी बीच, आर्मेनिया और कोलंबिया में पिता बनने पर छुट्टी से जुड़े क़ानूनों में भी बदलाव किया गया है. वहीं, स्पेन ने माहवारी पर सेहत की छुट्टी लेने और गर्भपात की सुविधाएं बढ़ाने वाले क़ानून पारित किए हैं.
अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी ने बताया था कि बीजिंग में 2022 में हुए शीतकालीन ओलंपिक खेल लैंगिक रूप से सबसे ज़्यादा संतुलित थे.
इन खेलों में शामिल कुल खिलाड़ियों में 45 फ़ीसद महिला एथलीट थीं. भले ही पुरुषों और महिलाओं के बीच लैंगिक समानता पूरी तरह से हासिल नहीं की जा सकी. लेकिन, नए दिशा निर्देशों के ज़रिए महिलाओं के खेलों की संतुलित रिपोर्टिंग को बढ़ावा ज़रूर दिया गया.
2023 के फ़ीफ़ा महिला फ़ुटबॉल विश्व कप का विस्तार किया गया है और 36 टीमों ने उसमें हिस्सा लिया.
उन मुक़ाबलों से पहले अमेरिका के फ़ुटबॉल परिसंघ ने एक ऐतिहासिक समझौता किया था. जिसके तहत महिलाओं और पुरुषों की टीमों को बराबर भुगतान किया गया.
ऐसा पहली बार हुआ जब किसी खेल में महिलाओं और पुरुषों को एक समान पैसे दिए गए. महिला खिलाड़ियों ने बराबर वेतन की मांग करते हुए कई मुक़दमे दायर किए थे और कई सालों से अपने हक़ की लड़ाई लड़ रही थीं.
बीते वर्ष (2023 में) क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था आईसीसी ने भी अपने वैश्विक आयोजनों में महिलाओं को पुरुषों को एक समान प्राइज़ मनी देने का एलान किया.

राष्ट्र का आधार हैं महिलाएं

कंचन शर्मा

सरकारी स्तर से बढक़र पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर सभी संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से ही महिला उत्थान व महिला सम्मान को सुनिश्चित बनाया जा सकता है। बातें कहने भर से नारी सम्मानित नहीं होगी'

प्रत्येक वर्ष की भांति अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस कल शुक्रवार 8 मार्च को मनाया जा रहा है। 1910 में क्लारा जेटकिन नाम की एक महिला ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बुनियाद रखी थी। वस्तुतः इस दिन को मनाने का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देते हुए उनके प्रति सम्मान, विनम्रता और आदरभाव को प्रदर्शित करना है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का मकसद महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों यथा आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में अर्जित उपलब्धियों को मान्यता देना भी है। हर साल अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस किसी न किसी थीम पर आधारित होता है और इस बार की थीम, 'इंस्पायर इंक्लूजन' है, जिसका अर्थ एक ऐसी दुनिया है, जहां हर किसी को बराबरी का हक और सम्मान मिले। भारत के संदर्भ में दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह भी है कि हमारी युवा शिक्षित बेटियां टेलीविजन/फिल्मों द्वारा परोसी जा रही अश्लीलता को निःसंकोच स्वीकार कर रही हैं एवं कई प्रकार के घटिया कार्यक्रमों के निर्माण, प्रचार एवं प्रसार में बढ़-चढक़र हिस्सा ले रही हैं। आजकल फेसबुक/इंस्टाग्राम पर स्वयं लड़कियां बढ़-चढक़र अश्लीलता का प्रदर्शन करती मिल जाएंगी। अतएव इंटरनेट का अंधाधुंध सदुपयोग-दुरुपयोग युवा पीढ़ी के स्वतः अनुशासन का मामला बन चुका है। भारत की महिला साक्षरता दर विश्व के औसत 79.7 प्रतिशत से कम है। देश की आजादी के बाद से महिला साक्षरता में तेजी से वृद्धि हुई है।

जहां 1947 में कुल महिला साक्षरता दर मात्र 18 प्रतिशत थी, वह 2011 में बढक़र 74.04 प्रतिशत हो गई थी। सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं के योगदान के मामले में वैश्विक औसत 37 प्रतिशत की तुलना में भारत में महिलाओं का योगदान मात्र 17 प्रतिशत है। यदि महिलाएं भी पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करें तो इससे वर्ष 2025 तक भारत की वार्षिक जीडीपी में 2.9 ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि हो सकती है। इसी तरह भारत की विधायिकाओं में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत ही कम है। लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या कुल सांसदों की दस प्रतिशत भी नहीं है और राज्यों की विधानसभाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 5 प्रतिशत से भी कम है। यद्यपि भारतीय संविधान में हर महिला को गरिमा और शालीनता के साथ जीने का अधिकार मिला है, तथापि महिलाओं के प्रति अत्याचारों के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। ताजातरीन मामला पश्चिम बंगाल से 100 किलोमीटर दूर संदेशखाली में महिलाओं के कथित रेप और उत्पीडन से जुड़ा हुआ है। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के आंकड़ों पर गौर फरमाएं तो आप पाएंगे कि पिछले 65 वर्षों में बलात्कार, यौन शोषण, हत्या, दहेज, तेजाब फेंकने और जलाने जैसी घटनाओं में कई गुना वृद्धि दर्ज की गई है। गृह मंत्रालय के एनसीआरबी विभाग के आंकड़ों के मुताबिक 2022 में महिलाओं के प्रति 445256 आपराधिक मामले दर्ज किए गए थे जिनमें उत्तर प्रदेश में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामलों में सबसे अधिक 65743 एफआईआर दर्ज की गईं। इसके बाद महाराष्ट्र 45331, राजस्थान 45058, पश्चिम बंगाल 34738 और मध्य प्रदेश में 32765 एफआईआर दर्ज हुईं। भारत में दर्ज किए गए कुल मामलों में अकेले इन पांच राज्यों का योगदान ही 223635 अर्थात 50.2 प्रतिशत बनता है।

इस हिसाब से देखें तो हर घंटे लगभग 51 प्राथमिकी दर्ज की गईं। वहीं प्रति लाख आबादी पर महिलाओं के खिलाफ अपराधों की दर 66.4 थी। भारतीय दंड संहिता के तहत महिलाओं के खिलाफ अधिकांश अपराध पति या उसके रिश्तेदारों द्वारा अंजाम दिए गए। जैसे महिलाओं के प्रति क्रूरता 31.4 प्रतिशत, महिलाओं का अपहरण 19.2 प्रतिशत, महिलाओं का शीलभंग करने के इरादे से हमला 18.7 प्रतिशत और बलात्कार 7.1 प्रतिशत मामले दर्ज हुए हैं। महिला सशक्तिकरण पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है और प्रायः इस मुद्दे पर चर्चा भी होती रहती है, लेकिन जब तक जमीनी स्तर पर महिलाओं को सशक्त नहीं बनाया जाता और उनकी सुरक्षा को यकीनी नहीं बनाया जाता, तब तक अपने दायरे में सिमटी आधी आबादी की सक्रिय भागीदारी के बिना एक सुदृढ़ विकसित और कल्याणकारी भारत की कल्पना करना बेमानी होगा। पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयों में बालिकाओं, महिलाओं के आदर-सम्मान के प्रति किशोरों/नवयुवकों को जागरूक करने की जरूरत है तो वहीं घर और विद्यालयों में संस्कारों और चरित्र निर्माण की शिक्षा दिए जाने की भी आवश्यकता है। सरकारों को चाहिए कि महिला पुलिस थानों/चौकियों की संख्या बढ़ाए, साथ ही देश के सभी थानों/चौकियों में महिला पुलिस कर्मचारियों की संख्या भी बढ़ाई जानी चाहिए। ज्यादा जनसंख्या वाले गांव एवं कस्बों के अंदर पुलिस गश्त नियमित तौर पर होनी चाहिए। पंचायतों की मीटिंग तथा आम सभाओं में महिला पुलिस अधिकारियों की भागीदारी को भी सुनिश्चित बनाया जाना चाहिए ताकि महिला पुलिस अफसर ग्राम सभाओं की मीटिंग में आने वाली महिलाओं से वार्तालाप कर सकें और महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हो। महिला शिक्षक कर्मचारियों को भी महिला अधिकारों की जागरूकता बढ़ाने हेतु इस काम में नियोजित किया जा सकता है। नारी अपराधों के दोषियों को कठोर से कठोरतम दंड (फांसी तक) तत्काल दिए जाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

संपूर्ण भारतवर्ष के स्कूलों के पाठ्यक्रम में बदलाव लाकर बच्चों को संस्कार आधारित संस्कृतिनिष्ठ शिक्षा-दीक्षा देकर सुसंस्कृत परिमार्जित किया जाना चाहिए ताकि यही बच्चे युवा बनकर मर्यादित, संयमित, व्यसनमुक्त, सुविचार/दुर्भावना मुक्त एवं पारिवारिक व सामाजिक मूल्यों पर आधारित नैतिकता से परिपूर्ण जीवन जीएं और स्वस्थ तथा सुंदर भारतीय समाज के सपने को साकार करें। सरकारी स्तर से बढक़र पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर सभी संस्थाओं के सक्रिय सहयोग से ही महिला उत्थान व महिला सम्मान को सुनिश्चित बनाया जा सकता है। याद रखें केवल बातें कहने भर से नारी सम्मानित नहीं होगी, हमको नारी के जीवन का सदा अलंकरण करना होगा, तभी नारी से नारायणी की परिकल्पना साकार होगी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

महिला दिवस का बैंगनी, हरे और सफेद रंगों से क्या है कनेक्शन और किसने तय किये? जानें

8 मार्च को को पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है. इस दिवस की शुरुआत आज से लगभग 115 साल पहले अमेरिका से हुई थी. दुनिया में इस खास दिवस को मनाने में कुछ खास रंगों का अपना अलग ही महत्व है. इन रंगों में बैगनी, हरा और सफ़ेद रंग शामिल है. अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर इन तीन रंगों को ही इस दिवस के लिए क्यों चुना गया चलिये जानते है.

8 मार्च को को पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है. इस दिवस की शुरुआत आज से लगभग 115 साल पहले अमेरिका से हुई थी जब 1908 में अमेरिका में महिलाओं ने अपने हक के लिए एक बड़ा आन्दोलन किया था.

महिलाओं के इस आंदोलन वाले दिन को संयुक्त राष्ट्र ने सालों बाद एक वार्षिक आयोजन के रूप में मान्यता दी थी. साल 1908 में अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में 15 हजार से अधिक महिलाओं ने अपने काम के घंटो को कम करने के लिए आंदोलन किया था.

दुनिया में इस खास दिवस को मनाने में कुछ खास रंगों का अपना अलग ही महत्व है. इन रंगों में बैगनी, हरा और सफ़ेद रंग शामिल है. इन रंगों का प्रयोग इस दिवस के आयोजन को और खास बना देता है. अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर इन तीन रंगों को ही इस दिवस के लिए क्यों चुना गया चलिये जानते है.

महिला दिवस पर रंगों का महत्व:

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन में रंगों का महत्व अब के समय में काफी बढ़ गया है. ये तीनों रंग इस दिवस के आयोजन के प्रतीक बन गए है. इस दिवस पर लोग महिलाओं को खासकर इन रंगों के फुल देकर उनका सम्मान करते है.

कैसे चुने गए ये तीनों रंग:

एक रिपोर्ट के मुताबिक इन तीनों रंगों (बैंगनी, हरा और सफ़ेद) को साल 1908 में ब्रिटेन की डब्ल्यूएसपीयू यानी वीमेंस सोशल एंड पॉलिटिकल यूनियन (Women's Social Political Union) द्वारा तय किया गया था. जो इस दिवस के आयोजन में महत्वपूर्ण स्थान रखते है.

साथ ही इन रंगों को अपना अलग ही महत्व है. ये सभी रंग किसी न किसी संदेश के प्रतीक है. जिनके बारें में आप नीचे पढ़ सकते है.

बैंगनी रंग - न्याय और गरिमा का प्रतीक
हरा रंग- आशा और उम्मीद का प्रतीक
सफ़ेद रंग- शुद्धता और शांति का प्रतीक

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस थीम 2024:

साल 2024 का अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का अभियान "इंस्पायर इंक्लूजन" (Inspire Inclusion) पर आधारित है और इस साल का थीम ₹महिलाओं में निवेशः प्रगति में तेजी लाना₹ (Invest in women: Accelerate progress) है. जो एक समावेशी समाज बनाने और महिला सशक्तिकरण में निवेश के महत्व पर जोर देता है.

भारत में ऐसे मनाया जाता है महिला दिवस:

दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन काफी जोरदार तरीके से किया जाता है. वैसे तो भारत में महिलाओं का सम्मान युगों-युगों से होता आ रहा है.

भारत में नारी के सम्मान में कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता' यानी जहां नारी की पूजा की जाती है वहां भगवान का वास होता है. भारत में महिलाएं हर क्षेत्र में नए मुकाम हासिल कर रही है.

आज के दौर में भारतीय नारी देश को सशक्त बनाने में अपना अहम योगदान दे रही है. साथ ही विश्व पटल पर भारत का नाम रौशन कर रही है. भारतीय नारी राजनीति, विज्ञान, रक्षा, स्पेस जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना नाम किया है.

ईडी के छापे का खेल, पूछते हैं, बीजेपी या जेल: केजरीवाल

परिवहन विशेष न्यूज

एसडी सेठी] ।दिल्ली के कथित शराब घोटाले से जुडे केस में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अब तक 8 समन भेजे हैं। आठों बार ईडी के सामने पेशी पर गैरहाजिर रहने वाले केजरीवाल ने आरोप लगाते हुए कहा कि अगर वह भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो जाए तो ये समन मिलना बंद हो जाएगे।

उल्लेखनीय है कि ईडी के हर समन को आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविंद केजरीवाल ने अवैध बताकर उसे राजनीति से प्रेरित करार दिया है। केजरीवाल ने तंज कसते हुए कहा ईडी का छापा डालकर पूछा जाता है कि कहां जाओगे बीजेपी में या जेल में?

केजरीवाल की हठधर्मिता से आजीज ईडी ने अब अदालत का रूख किया है और नई याचिका दायर की है।जिसके बाद केजरीवाल की यह प्रतिक्रिया आई है। अदालत की फेंकी कोडी के आगे केजरीवाल ने कोर्ट से 12 मार्च के बाद की कोई भी तारीख मुकर्रर करने की गुहार लगाई है। कोर्ट ने केजरीवाल को कोर्ट में 16 मार्च को पेश होने का आदेश दिया है। लेकिन केजरीवाल ने कोर्ट में फिजिकल पेश होने के बजाये वीडियो

कांफ्रेंसिंग के जरिए पेश होने बात की है । लेकिन कोर्ट ने साफ कर दिया कि केजरीवाल को फिजिकल कोर्ट में पेश होने की हिदायत दी है। वहीं सीएम अरविंद केजरीवाल ने मोदी सरकार पर तंज कसते हुए कहा है कि लोगों को ईडी से परेशान करवा के बीजेपी में शामिल किया जाता है।ईडी की रेड करवा के पूछा जाता है कि 'कहां जाओगे-बीजेपी या जेल ?जो बीजेपी में जाने से मना करता है , उन्हें जेल भेज देते हैं।केजरीवाल ने कहा कि आज सत्येंद्र जैन , मनीष सिसौदिया, और संजय जैन अगर बीजेपी में शामिल हो जाए तो कल ही उन्हे बेल हो जाएगी। आगे कहा कि आज मैं बीजेपी में चला जाऊं तो मुझे ईडी के समन आना बंद हो जाएगे।

संजय सिंह और मनीष सिसोदिया को कोर्ट से नहीं मिली राहत, शराब घोटाले में फिर बढ़ी न्यायिक हिरासत

संजय सिंह और मनीष सिसोदिया को दिल्ली की अदालत से राहत नहीं मिली। गुरुवार को दिल्ली कोर्ट ने दोनों की न्यायिक हिरासत 19 मार्च तक बढ़ा दी है। इससे पहले 02 मार्च को कोर्ट में पेशी के बाद सात मार्च तक न्यायिक हिरासत बढ़ाई गई थी। बता दें कि शराब घोटाले के बाद मामले में मनीष सिसोदिया को 26 फरवरी 2023 को सीबीआई ने गिरफ्तार किया था।

एजेंसी ने कहा कि आरोपी बिना कोई ठोस कारण बताए फुटेज मांग रहे थे, जो मामले के मौजूदा चरण में स्वीकार्य नहीं है। ईडी के रुख का एक आरोपी की ओर से पेश वकील नितेश राणा ने विरोध किया।

नई दिल्ली। संजय सिंह और मनीष सिसोदिया को दिल्ली की अदालत से राहत नहीं मिली। गुरुवार को दिल्ली कोर्ट ने दोनों की न्यायिक हिरासत 19 मार्च तक बढ़ा दी है। इससे पहले 02 मार्च को कोर्ट में पेशी के बाद सात मार्च तक न्यायिक हिरासत बढ़ाई गई थी।

गुरुवार को दिल्ली की कोर्ट में दोनों को पेश किया था, इस पर विशेष न्यायाधीश एम के नागपाल ने मनीष सिसोदिया और संजय सिंह की न्यायिक हिरासत अवधि बढ़ा दी। बता दें कि ईडी ने न्यायिक हिरासत बढ़ाने की मांग करते हुए कहा कि मामला महत्वपूर्ण चरण में है और अगर रिहा किया गया तो आरोपी जांच में बाधा डाल सकते हैं।

आरोपी अपना रहे हैं हथकंडे

ध्यान देने वाली बात है कि ईडी ने बृहस्पतिवार को दिल्ली की अदालत में याचिका दायर कर आरोप लगाया कि कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपी कार्रवाई में देरी करने के हथकंडे अपना रहे हैं। ईडी ने हिरासत की अवधि के दौरान पूछताछ की कार्रवाई की ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग सहित सीसीटीवी फुटेज की एक प्रति की मांग करने वाले आरोपियों के आवेदन का विरोध करते हुए यह बात कही।

एजेंसी ने कहा कि आरोपी बिना कोई ठोस कारण बताए फुटेज मांग रहे थे, जो मामले के मौजूदा चरण में स्वीकार्य नहीं है। ईडी के रुख का एक आरोपी की ओर से पेश वकील नितेश राणा ने विरोध किया। उन्होंने आरोप लगाया कि ईडी अपने तुच्छ आवेदन के साथ मामले में जांच की प्रक्रिया को छोड़ना चाहता है।

पिछले साल हुई थी गिरफ्तारी

मनीष सिसोदिया को दिल्ली के कथित शराब घोटाले के मामले में 26 फरवरी 2023 को सीबीआई ने गिरफ्तार किया था। इसके बाद शराब नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी ने भी सिसोदिया की गिरफ्तारी की थी। वहीं, संजय सिंह को पिछले साल ईडी ने गिरफ्तार किया था।

दिल्ली में फ्री बिजली पर केजरीवाल सरकार का बड़ा फैसला, कैबिनेट बैठक के बाद सीएम ने कही ये बात

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने गुरुवार को फ्री बिजली को लेकर बड़ा फैसला किया है। केजरीवाल सरकार में मंत्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली के लोगों को बिजली पर सब्सिडी मिलती रहेगी। बता दें गुरुवार को मुख्यमंत्री के घर पर कैबिनेट बैठक बुलाई गई थी। फैसले के बाद मुख्यमंत्री ने दिल्ली के लोगों को बिजली सब्सिडी के फैसले पर बधाई दी है।

नई दिल्ली। दिल्ली के लोगों के लिए बड़ी खुशखबरी है। मंत्री आतिशी ने कैबिनेट बैठक के बाद बड़ी घोषणा की है। आतिशी ने कहा कि दिल्ली के लोगों को बिजली पर सब्सिडी मिलती रहेगी। बता दें गुरुवार को मुख्यमंत्री के घर पर कैबिनेट बैठक बुलाई गई थी।

केजरीवाल ने लोगों को दी बधाई

फैसले के बाद मुख्यमंत्री ने दिल्ली के लोगों को बिजली सब्सिडी के फैसले पर बधाई दी है। अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, ₹दिल्ली के लोगों को मैं बहुत बहुत बधाई देता हूँ। आपकी 24 घंटे बिजली (जीरो पॉवर कट) और फ्री बिजली 31 मार्च 2025 तक के लिए बढ़ा दी गयी है। इसमें वकील भाइयों के चैम्बर की भी फ्री बिजली शामिल है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिजली सब्सिडी को लेकर कई लोगों के मन में संशय था, अगले साल मिलेगी, नहीं मिलेगी? मैं आपको बता दूँ कि इन लोगों ने तो इसे रोकने की पूरी कोशिश की, लेकिन आपके बेटे ने ये काम भी करवा ही लिया।

दिल्ली-पंजाब में मिलती फ्री बिजली- केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल ने आगे कहा कि आपकी जानकारी के लिए बता दूँ कि 24 घंटे बिजली और फ्री बिजली केवल दिल्ली और पंजाब में मिलती है। बाक़ी पूरे देश में लंबे लंबे पॉवर कट लगते हैं और हज़ारों रुपये के बिजली बिल भरने पड़ते हैं, क्योंकि दिल्ली में ईमानदार और पढ़े लिखे लोगों की सरकार है।

वहीं, मंत्री आतिशी ने कहा कि मुझे यह घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि आज की कैबिनेट बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि दिल्ली के लोगों के लिए मुफ्त बिजली बिल और सब्सिडी 2024-2025 में भी जारी रहेगी।

साउथ दिल्ली में बदमाशों ने घर में घुसकर युवक को मार डाला, मचा हड़कंप

परिवहन विशेष न्यूज

29 वर्षीय गौरव सिंघल देवली गांव के पास जिम चलाता था। युवक की हत्या से स्वजनों में कोहराम मच गया है। उनका रो-रोकर बुरा हाल है। हत्या के बाद शादी को लेकर परिवार की खुशी मातम में बदल गई है। युवक (मृतक) की शुक्रवार को बारात जानी थी। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया गया है।

दक्षिणी दिल्ली। देवली एक्सटेंशन स्थित राजू पार्क के पास एक युवक की घर में घुसकर बदमाशों ने हत्या कर दी। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया गया है।

शुक्रवार को जानी थी युवक की बारात

जानकारी के मुताबिक, युवक (मृतक) की शुक्रवार को बारात जानी थी। मृतक की पहचान गौरव सिंघल के रूप में की गई है।

जिम चलाता था गौरव

29 वर्षीय गौरव सिंघल देवली गांव के पास जिम चलाता था। युवक की हत्या से स्वजनों में कोहराम मच गया है। उनका रो-रोकर बुरा हाल है। हत्या के बाद शादी को लेकर परिवार की खुशी मातम में बदल गई है।

घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। साथ ही पुलिस मामले की जांच-पड़ताल में जुटी हुई है।

जानकारी के मुताबिक, पुलिस को लगभग 12.30 बजे राजू पार्क के पास देवली एक्सटेंशन में हत्या के संबंध में पीसीआर कॉल मिली थी। इसके बाद पुलिस टीम के मौके पर पहुंचने पर पता चला कि गौरव सिंघल उम्र 29 साल पर तेज धार वाले हथियार से हमला किया गया था और उसे इलाज के लिए प्राइवेट में ले जाया गया था। जहां बाद में उसे मृत घोषित कर दिया गया।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की अनोखी जानकारी...

परिवहन विशेष न्यूज

विश्व के सबसे बेहतरीन व अनूठे विश्वविद्यालय के बारे में कुछ रोचक तथ्य। हमें गर्व है कि हम मालवीय जी की इस महान कृति के हम सेवक हैं...

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के १०० गौरवशाली वर्ष के इतिहास पर एक नजर डालते हैं और जानते हैं इस विश्वविद्यालय से जुड़े कई ऐसे तथ्य।।।।।

१. सर्वप्रथम प्रयाग राज की सड़कों पर अपने अभिन्न मित्र बाबू गंगा प्रसाद वर्मा और सुंदरलाल के साथ घूमते हुए मालवीय जी ने हिन्दू विश्वविद्यालय की रूपरेखा पर विचार किया।

२. १९०४ ई में जब विश्वविद्यालय निर्माण के लिए चर्चा चल रही थी तब कइयों ने इसकी सफलता पर गहरा शक भी प्रगट किया था। कइयों को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ऐसा भी विश्वविद्यालय वाराणसी की धरती पर निर्मित किया जा सकता है।

3. नवंबर १९०५ में महामना मदन मोहन मालवीय ने हिन्दू विश्वविद्यालय निर्माण के लिए अपना घर त्याग दिया।

४. तत्कालीन काशीनरेश महाराजा प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में बनारस के मिंट हाउस में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए पहली बैठक बुलाई गई।

५. जुलाई १९०५ ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रस्ताव पहली बार सार्वजनिक रूप से प्रकाशित किया गया।

६. दिसम्बर १९०५ ई. में वाराणसी में कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। ठीक एक जनवरी १९०६ ई. को कांग्रेस अधिवेशन के मंच से ही काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा की गई।

7. जनवरी १९०५ ई. में प्रयाग में साधु संतों ने भी काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए स्वीकृति दे दी।

८. उस वक्त दरभंगा महाराज सर रामेश्वर बहादुर सिंह भी वाराणसी में 'शारदा विश्वविद्यालय' की स्थापना करना चाहते थे, लेकिन मालवीय जी कि योजना को सुनकर उन्होंने भी 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' निर्माण के लिए अपनी सहमति दे दी।

९. दरभंगा नरेश को बाद में हिन्दू युनिवर्सिटी सोसाइटी का प्रमुख बनाया गया।

१०. पं. मदन मोहन मालीवय ने १५ जुलाई १९११ को हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए एक करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखा था।

११. बीएचयू पूरी दुनिया में अकेला ऐसा विश्वविद्यालय है जिसका निर्माण भिक्षा मांगकर मिली राशि से किया गया है।

१२. महामना मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में २० लोगों को पूरे देश में घूम घूमकर भिक्षा मांगने के लिए नियुक्त किया गया।

१३. विश्वविद्यालय निर्माण के लिए नियुक्त हुए प्रबुद्ध भिक्षार्थियों में राजाराम पाल सिंह, पं. दीन दयाल शर्मा, बाबू गंगा प्रसाद वर्मा, बाबू ईश्वर शरन, पं. गोकर्ण नाथ मिश्रा, पं. इकबाल नारायण गुर्टू, राय रामनुज दयाल बहादुर, राय सदानंद पांडेय बहादुर, लाला सुखबरी सिन्हा, बाबू वृजनंदन प्रसाद, राव वैजनाथ दास, बाबू शिव प्रसाद गुप्त, बाबू मंगला प्रसाद, बाबू राम चंद्र, बाबू ज्वाला प्रसाद निगम, ठाकुर महादेव सिंह, पं. परमेश्वर नाथ सप्रू, पं. विशंभर नाथ वाजपेयी, पं. रमाकांत मालवीय तथा बाबू त्रिलोकी नाथ कपूर शामिल थे।

१४. २८ जुलाई १९११ को मालवीय जी ने अयोध्या नगरी से भिक्षाटन की शुरुआत की। इससे पूर्व उन्होंने सरयू नदी में स्नान किया और श्रीरामलला के दर्शन भी किए।

१५. सन १९११ में ही मालवीय जी ने लाहौर और रावलपिंडी (वर्तमान पाकिस्तान) में भी भिक्षाटन किया। इस दौरान उनके साथ लाला लाजपत राय भी मौजूद रहे।

१६. मुजफ्फरनगर में भिक्षाटन के दौरान अजीब वाकया हुआ जब सड़क पर एक गरीब भिखारिन ने अपनी दिनभर की कमाई मालवीय जी को काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय निर्माण के लिए समर्पित कर दिया।

१७. मालवीय जी प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की तर्ज पर आवासीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना चाहते थे।

१८. शुरू शुरू में विश्वविद्यालय में सात कॉलेजों की स्थापना का प्रस्ताव पारित हुआ। इनमें, संस्कृत कॉलेज, कला एवं साहित्य कॉलेज, विज्ञान एवं तकनीकि कॉलेज, कृषि कॉलेज, वाणिज्य (कॉमर्स) कॉलेज, मेडिसिन कॉलेज और म्यूजिक एवं फाइन आर्ट्स कॉलेज शामिल थे।

१९. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रस्ताव के समय देश में कुल पांच विश्वविद्यालय मौजूद थे; कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लाहौर और इलाहाबाद में।

२०. मालवीय जी का यह स्पष्ट मत था कि विश्वविद्यालय में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाए।

२१. विश्वविद्यालय के नाम में 'हिन्दू' शब्द को लेकर भी मालवीय जी को कइयों से तिरस्कार भी झेलना पड़ा। उस वक्त मालवीय जी ने हिन्दुत्व को समावेशी बताते हुए इसे अल्पसंख्यकों के सशक्तिकरण का आधार माना।

२२. अक्टूबर सन १९१५ ईस्वीं में बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी बिल पारित हुआ। इसके बाद इस विश्वविद्यालय के निर्माण की मंजूरी ब्रिटिश हुकूमत ने दे दी थी।

२३. ८ फरवरी १९१६ ई के दिन बसंत पंचमी के पावन अवसर पर दोपहर १२ बजे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास का कार्यक्रम शुरू हुआ।

२४. इस मौके पर वायसरॉय लॉर्ड चार्ल्स हार्डिंग मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे।

२५. उस वक्त बनारस के कलेक्टर थे मिस्टर लेम्बर्ट जिन्होंने इंजीनियर राय छोटेलाल साहब के साथ मिलकर पूरी व्यवस्था का खाका तैयार किया था।

२६. बीएचयू के शिलान्यास स्थल पर मदनवेदी का निर्माण किया गया था।

२७. पुष्पवर्षा के बीच वायसराय लार्ड चार्ल्स हार्डिंग ने विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया।

२८. काशी के संस्कृत विद्वानों ने हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में कोई रुचि नहीं दिखाई थी।

२९. यही नहीं शिलान्यास समारोह को लेकर काशी में विशेष उत्साह भी नहीं दिखा।

३०. दो मुद्दों पर काशी की जनता ने शिलान्यास का विरोध भी किया था।

३१. पहला, शिलापट्ट पर सम्राट शब्द का संस्कृत में उल्लेख।

३२. दूसरा, शिलापट्ट पर काशी के धर्माचार्यों या शंकराचार्य का नाम ना उललिखित होना।

33. विवाद इतना गहरा गया कि विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह के बहिष्कार की घोषणा काशी की जनता ने कर दिया।

३४. शिलान्यास समारोह में अंग्रेजों के शामिल होने पर नगवां इलाके के संभ्रांत व्यक्ति खरपत्तू सरदार ने कड़ी आपतति दर्ज कराई थी।

३५. बाद में मालवीय जी को खरपत्तू को वचन देना पड़ा किया शिलान्यास के बाद विश्वविद्यालय के किसी भी कार्यक्रम में अंग्रेज शिरकत नहीं करेंगे।

३६. जबतक मालवीय जी जीवित रहे तबतक कोई भी अंग्रेज अधिकारी विश्वविद्यालय के किसी भी आधिकारिक कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सका।

३७. विश्वविद्यालय स्थापना के ताम्रपत्र में कुल तीन जगह 'ॐ' लिखा हुआ है। भारतीय परंपरा में तीन बार ॐ का जाप करना अत्यंत ही शुभ और पुण्यकारी माना गया है।

३८. विश्वविद्यालय के ताम्रपत्र के अनुसार 'मनु की संतानों को अनुशासन और न्याय की शिक्षा देने के लिए ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।'

३९. विश्वविद्यालय की स्थापना में महामना मदन मोहन मालवीय जी की क्या भूमिका है इसका ताम्रपत्र में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

४०. कुछ लोगों का मानना है कि ऐनिबेसेंट के नाम का उल्लेख भी इस ताम्रपत्र में नहीं है। वहीं कुछ लोग मानते हैं कि ताम्रपत्र में ऐनिबेसेंट के नाम का उल्लेख मालवीय जी ने 'वासनति वागमिता' के रूप में कराया था।

४१. ताम्रपत्र में विश्वविद्यालय के लिए दान देने वाले राजाओं के नाम नहीं हैं बलकि उनके राज्यों के नाम लिखे गए हैं। जैसे मेवाड़, काशी, कपूर्थला आदि।

४२. ताम्रपत्र में विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय 'परमात्मा' को दिया गया है।

४३. ताम्रपत्र में लॉर्ड हार्डिंग को 'धीर वीर प्रजाबंधु' लिखा गया है। इसे लेकर वाराणसी की जनता ने मालवीय जी का उपहास भी उड़ाया और व्यंगचित्र भी बनाये।

४४. सबसे पहले विश्वविद्यालय निर्माण के लिए वाराणसी के हरहुआ इलाके में भूमि उपलब्ध कराने का विचार महाराज प्रभुनारायण को आया था। बाद में इसे मालवीय जी ने खारिज कर दिया।

४५. वाराणसी के दक्षिण में १ ००एकड़ भूमि (५. किमी) को तत्कालीन काशीनरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह ने महामना को विश्वविद्यालय निर्माण के लिए दान में दे दिया।

४६. शिलान्यास के वर्ष १९१६ ई को गंगा में भयानक बाढ़ आई और विश्वविद्यालय की भूमि पूरी तरह से जलमग्न हो गई। पहले विश्वविद्यालय को गंगा के बिल्कुल किनारे बसाने का विचार था।

४७. इसके बाद मां गंगा को प्रणाम करते हुए विश्वविद्यालय परिसर को गंगा नदी से थोड़ी दूर बसाने का निर्णय लिया गया।

४८. कुल १२ गांवों को खाली कराकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है।

४९. इन १२ गावों में भोगावीर, नरियां, आदित्यपुर, करमजीतपुर, सुसुवाही, नासीपुर, नुवांव, डाफी, सीर, छित्तुपुर, भगवानपुर और गरिवानपुर शामिल हैं।

५०. बिजनौर के धर्मनगरी निवासी राजा ज्वाला प्रसाद ने काशी हिन्दू विश्वविद्याल का नक्शा तैयार किया तथा अपने दिशानिर्देश में ईमारतों को मूर्त रूप दिया।

५१. विश्वविद्यालय को प्राप्त पूरी जमीन अर्द्धचंद्राकार है।

५२. विश्वविद्यालय के अर्द्धचंद्राकार डिजाइन और इसके बीचो बीच सथित विश्वनाथ मंदिर को देखकर काशी नरेश विभूति नारायण सिंह ने इसे शिव का त्रिपुंड और बीच में सथित शिव की तीसरी आंख बताया था।

५३. यहां निर्मित भवन इण्डो गोथिक स्थापत्य कला के भव्य नमूने हैं।

५४. शुरुआत में विश्वविद्यालय की भाषा को अंग्रेजी रखा गया हालांकि मालवीय जी ने इसे हिन्दी में किए जाने का विश्वास महात्मा गांधी को दिलाया था।

५५. युवाओं को तकनीकी ज्ञान देने के लिए आजादी से पहले ही विश्वविद्यालय में बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज (बी.ई.एन.सी.ओ.) १९१९ ई, कॉलेज ऑफ माइनिंग एंड मेटलॉजी १९२ ई और कॉलेज ऑफ टेक्नॉलॉजी १९ २ ई की शुरुआत कर दी गई थी।

५६. विश्वविद्यालय में तीन संस्थान हैं : चिकित्सा (इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज), तकनीक (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलोजी) और कृषि (इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रिकल्चर साइंसेज)।

५७. विश्वविद्यालय में ११ संकाय हैः चिकित्सा, कला, वाणिज्य, शिक्षा विधि, प्रबंधतंत्र, दृश्यकला, संस्कृति विद्याधर्म, विज्ञान, समाज विज्ञान, संगीत, महिला महाविद्यालय।

५८. वाराणसी में बीएचयू से संबद्ध चार महाविद्यालय मौजूद हैं: डीएवी पीजी कॉलेज, बसंता कॉलेज फॉर वुमेन, आर्य महिला कॉलेज, बसंता कॉलेज कमक्षा।

५९. विश्वविद्यालय से ७० किमी दक्षिण में मीरजापुर जनपद में बरकछा नामक स्थान पर 'राजीव गांधी दक्षिणी परिसर' सथित है।

६०. विश्वविद्यालय के भीतर प्रेस, हवाई अड्डा (रन-वे), पोस्ट ऑफिस, केंद्रीय विद्यालय और प्रमुख बैंकों के कार्यालय मौजूद हैं।

६१. महिला शिक्षा : आजादी से पूर्व १९ ६- ७ ई. में विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय में १०० लड़कियां स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण कर रही थीं।

६२. मालवीय जी का स्वप्न था कि गंगा को नहर के माध्यम से विश्वविद्यालय के अंदर लाया जाए लेकिन एक दुर्घटना की वजह से यह कार्य रोक दिया गया।

६३. हिन्दू विश्वविद्यालय का कार्य सर्वप्रथम काशी में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज के एक भवन में शुरू हुआ।

६४. विश्वविद्यालय के लिए आचार्यों का चयन बिना किसी कमेटी, रेज्यूमे या सिफारिश के किया गया।

६५. कुछ विद्वानों को निमंत्रण देकर, कुछ स्वयं की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में पढ़ाने पहुंचे।

६६. यहां पढ़ाने वाले कुछ विद्वान तो ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी धन-सम्पतति तक विश्वविद्यालय के नाम कर दी।

६७. बीएचयू के आजीवन रजिस्ट्रार और चीफ वार्डन रहे श्यामाचरण डे ने अपनी पूरी सम्पतति विश्वविद्यालय के नाम कर दी।

६८. श्यामाचरण डे आजीवन एक रुपया की तनख्वाह पर विश्वविद्यालय की ओर से मिली जिम्मेदारियों का निर्वहन करते रहे।

६९. सभी प्रोफेसर, वो चाहे जिस भी विषय के विद्वान रहे हों कुर्ता-धोती और कंधे पर रखने वाला दुपट्टा पहनकर ही विश्वविद्यालय में पढ़ाने आते थे।

७०. अंग्रेजी भाषा के प्रोफेसर निक्सन भी कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर धोती कुर्ता पहनकर कृष्ण मंदिर का घंटा बजाया करते थे।

७१. १९ ० में जब महामना को बंबई में गिरफ्तार किया गया तो बीएचयू से २४ छात्रों के एक दल के साथ एक छात्रा कुमारी शकुंतला भार्गव भी बंबई में धरना देने के लिए पहुंची थी।

७२. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान चंद्रशेखर आजाद, राजगुरू, रामप्रसाद बिसमिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि क्रांतिकारियों की गतिविधियों का केंद्र काशी और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ही था।

७३. महाराज प्रभुनारायण सिंह के पौत्र और बाद में काशी नरेश बने महाराजा विभूति नारायण सिंह आजीवन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रहे।

७४. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंघचालक माधवराव सदाशिव गोलवलकर 'गुरू जी' ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ही जूलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएशन तक की शिक्षा ग्रहण की और बाद में यहां अध्यापन का कार्य भी किया।

७५. मालवीय जी के निमंत्रण पर आरएसएस के तत्कालीन सरसंघचालक डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आए थे।

७६. बीएचयू परिसर में ही हेडगेवार और गोलवलकर के बीच मुलाकात हुई। बाद में गोलवलकर आरएसएस के सरसंघचालक बने।

७७. आरएसएस और मालवीय जी के बीच मधुर संबंधों का ही नतीजा रहा कि विश्वविद्यालय परिसर में ही संघ के नाम दो कमरों का प्लॉट अलॉट हुआ।

७८. १९२९ से १९४२ के बीच संघ की कई शाखाएं विश्वविद्यालय परिसर में खुल चुकी थीं।

७९. १९४८ ई. में महात्मा गांधी की हत्या के बाद तत्कालीन कुलपति गोविन्द मालवीय ने संघ के भवन को अपने कब्जे में ले लिया। संघ पर से प्रतिबंध हटने के बाद भवन दुबारा आरएसएस को सौंप दिया गया।

८०. ८ अप्रैल १९ ८ ईस्वी को रामनवमी के दिन विश्वविद्यालय परिसर में 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पेवेलियन' का शिलान्यास मालवीय मदन मोहन मालवीय, हेडगेवार और गोलवलकर की अगुवाई में हुआ।

८१. अपनी भुजाओं के बल पर शेर को मारने वाले बचाऊ पहलवान महामना मदन मोहन मालवीय के अभिन्न मित्र थे। बचाऊ पहलवान ने मालवीय जी के प्राणों की रक्षा के लिए खुद के प्राणों की बलि दे दी थी।

८२. विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति होने का गौरव राय बहादुर सर सुंदरलाल को प्राप्त हुआ।

८३. इनके बाद सर पीएस शिवस्वामी अय्यर ने इस पद को सुशोभित किया।

८४. कालांतर में वर्ष १९१९ से लेकर १९ ९ तक पं. मदन मोहन मालवीय ने विश्वविद्यालय के कुलपति पद की शोभा को बढ़ाई।

८५. २४ सितम्बर १९ ९ को सर्वपल्ली राधाकृष्णन विश्वविद्यालय के दूसरे कुलपति के रुप में इस अति पावन पद पर काबिज हुए।

८६. राधाकृष्णन आठ वर्षों तक विश्वविद्यालय के कुलपति बने रहे।

८७. राधाकृष्णन के बाद अमरनाथ झा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

८८. अमरनाथ झा के बाद क्रमशः पं. गोविन्द मालवीय, आचार्य नरेन्द्र देव, सीपी रामास्वामी अैय्यर, वीएस झा, एनएच भगवती, त्रिगुण सेन, एसी जोशी, कालू लाल श्रीमाली आदि ने विश्वविद्यालय के कुलपति पद को सुशोभित किया।

८९. प्रख्यात वैज्ञानिक शांति स्वरूप भटनागर ने विश्वविद्यालय के अतिलोकप्रिय कुलगीत की रचना की।

९०. पुरावनस्पति वैज्ञानिक बीरबल साहनी, भौतिक वैज्ञानिक जयंत विष्णु नार्लीकर, भूपेन हजारिका, अशोक सिंहल, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हरिवंश राय बच्चन जैसी महान विभूतियों ने इस विश्वविद्यालय की कीर्ति में चार चांद लगाया।

९१. विश्वविद्यालय परिसर के भीतर ही विशाल विश्वनाथ मंदिर सथित है।

९२. इस मंदिर का शिलान्यास ११ मार्च १९ १ में कृष्णास्वामी ने किया।

९३. मालवीय जी चाहते थे कि भव्य विश्वनाथ मंदिर उनके जीवन काल में ही बन जाए लेकिन ऐसा शायद विधि को मंजूर नहीं था।

९४. मालवीय जी के अंतिम समय में उद्योगपति जुगलकिशोर बिरला ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह बीएचयू परिसर में नियत स्थान पर ही भव्य विश्वनाथ मंदिर का निर्माण जल्द से जल्द कराएंगे।

९५. १७ फरवरी १९५८ को महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान विश्वनाथ की स्थापना इस मंदिर में हुई।

९६. बीएचयू सथित विश्वनाथ मंदिर पूरे भारत में सबसे ऊंचा शिवमंदिर है। मंदिर के शिखर की ऊंचाई ७६ मीटर (२५० फीट) है। यह मंदिर विश्वविद्यालय के केंद्र में सथित है।

९७. ६० से भी ज्यादा देशों के विद्यार्थी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, संकायों और संस्थानों में पढ़ाई कर रहे हैं।

९८. महामना मदन मोहन मालवीय का आदर्श वाक्य था, 'उत्साहो बलवान राजन्"। अर्थात, उत्साह पूर्वक कर्म में लगो तभी शक्तिशाली बन सकते हो।

९९. बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के निर्माण में अपना सबकुछ न्यौछावर करने वाले महामना मदन मोहन मालवीय जी को स्वतंत्रता के ६७ वर्ष बाद देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

गीता पर शपथ क्यों दिलाई जाती है?

एक बार विष्णु भगवान बैकुंठ लोक में शेष शय्या पर आंखें मूंदे लेटे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे.

देवी लक्ष्मी उनकी चरण सेवा कर रही थीं. भगवान को मन में ही मुस्काता देख देवी को कौतूहल हुआ.

देवी लक्ष्मी ने उनसे प्रश्न किया- भगवन आप संपूर्ण जगत का पालन करते हुए भी अपने ऐश्वर्य के प्रति उदासीन से होकर इस क्षीर सागर में नींद ले रहे हैं, इसका क्या कारण है?

श्रीहरि पुनः मुस्कुराए और अपनी मोहक मुस्कान बिखेरते हुए बोले- हे प्रिये मैं नींद नहीं ले रहा बल्कि अपनी अंतर्दृष्टि से अपने उस तेज का साक्षात्कार कर रहा हूं देवी जिसका योगी अपनी दृष्टि से दर्शन कर लेते हैं.

जिस शक्ति के अधीन यह समस्त संसार है मैं जब भी उसका मन में दर्शन करता हूं तब आपको ऐसा प्रतीत होता है कि मैं नींद में डूबा हूं परंतु ऐसा है नहीं.

भगवान ने इतनी रहस्यमय तरीके से बात कही कि लक्ष्मीजी को कुछ बातें समझ में आईं कुछ नहीं आईं.

उन्होंने पुनः प्रश्न किया- हे नाथ आपके अतिरिक्त भी कोई शक्ति है जिसका ध्यान स्वयं आप करते हों. यह बात तो मुझे घोर विस्मय में डालती है.

श्रीहरि ने कहा- देवी इस बात को अच्छी प्रकार से समझने के लिए आपको गीता के रहस्य समझने होंगे.

गीता के समस्त अध्याय मेरे उस शरीर के अंग हैं जिसकी आप सेवा करती हैं.

गीता के आरंभ के पांच अध्यायों को मेरे पांच मुख जानें.

छठे से पंद्रहवें अध्याय को मेरी दस भुजाएं समझिए.

सोलहवां अध्याय तो मेरा उदर है जहां क्षुधा शांत होती है.

अंतिम के दो अध्यायों को मेरे चरण कमल समझिए.

भगवान ने गीता के अध्यायों की इस प्रकार व्याख्या कर दी लक्ष्मीजी की उलझन घटने की बजाय और बढ़ने लगी. भगवान ने भांप लिया कि देवी के मन में क्या चल रहा है.

श्रीहरि ने पुनः कहा-देवी जो व्यक्ति गीता के एक भी अध्याय अथवा एक श्लोक का भी प्रतिदिन पाठ करता है वह सुशर्मा की तरह सभी पापों से मुक्त हो जाता है.

अब तो देवी लक्ष्मी और उलझ गईं.

उन्होंने संयत भाव में अपनी अधीरता व्यक्त करते हुए- हे नाथ यह आपकी क्या लीला है. एक के बाद एक आप पहेलियां ही कहते जा रहे हैं. कृपया आप मेरी जिज्ञासा शांत करें.

भगवान पुनः मुस्कुराने लगे और उन्होंने लक्ष्मीदेवी को सुशर्मा की कथा सुनानी शुरू की.

सुशर्मा एक घोर पापी व्यक्ति था. वह हमेशा भोग-विलास में डूबा रहता. मदिरा और मांसाहार इसी में जीवन बिताता. एक दिन सांप काटने से उसकी मृत्यु हो गई.

उसे नरक में यातनाएं झेलीं और फिर से पृथ्वी पर एक बैल के रूप में जन्म लिया.

अपने मालिक की सेवा करते बैल को आठ साल गुजर गए. उसे भोजन कम मिलता लेकिन परिश्रम जरूरत से ज्यादा करनी पड़ती.

एक दिन बैल मूर्च्छित होकर बाजार में गिर पड़ा. बहुत से लोग जमा हो गए. वहां उपस्थित लोगों में से कुछ ने बैल का अगला जीवन सुधारने के लिए अपने-अपने हिस्से का कुछ पुण्यदान करना शुरू किया.

उस भीड़ में एक वेश्या भी खड़ी थी. उसे अपने पुण्य का पता नहीं था फिर भी उसने कहा उसके जीवन में जो भी पुण्य रहा हो उसका अंश बैल को मिल जाए.

बैल मरकर यमलोक पहुंचा. बैल के हिस्से में जमा पुण्य का हिसाब-किताब होना शुरू हुआ तो एक बड़े आश्चर्य की बात हुई. ऐसे आश्चर्य की बात जिसके बारे में यदि धरतीलोक पर किसी व्यक्ति को कहो तो विश्वास ही न करें.

बैल के हिस्से में सर्वाधिक पुण्य उस वेश्या का दान किया हुआ आया था. उसी वेश्या के किए पुण्यदान के कारण बैल को नर्कलोक से मुक्ति हो गई.

इतना ही नहीं उसी पुण्यफल से पृथ्वी लोक का भोग करने के लिए मानव रूप में जन्म देकर भेजा गया. उसके पुण्य इतने थे कि विधाता ने उससे पृथ्वीलोक पर जाने से पहले उसकी इच्छा भी पूछी. ऐसा सौभाग्य करोड़ों में किसी-किसी धर्मात्मा को ही मिलता है.

इंसान के रूप में जाने से पहले बैल ने मांगा- हे परमात्मा आप मुझे मानवरूप में पृथ्वी पर भेजने का जो उपकार कर रहे हैं उससे मैं धन्य हो गया हूं. अब आपसे और क्या मांगू. बैलयोनि में मेरा जन्म मेरे पूर्व के कर्मों के दंडस्वरूप ही रहा होगा. इसलिए मैं चाहता हूं कि मनुष्य रूप में जाकर मैं उन कर्मों में न पड़ूं जो मेरा भावी खराब करेंगे. मनुष्य रूप में इसकी आशंका सर्वाधिक है.

परमात्मा ने पूछा- तो बताओ मैं तुम्हारा कैसे प्रिय करूं, अपनी एक इच्छा बताओ

उसने मांगा- मुझे बस वह क्षमता प्रदान करें कि मुझे पूर्वजन्म की समस्त बातें स्मरण रहें. उनका स्मरण करके मैं कर्मों से भटकने से स्वयं को रोक सकूंगा. बस इतनी सी कृपा और कर दे.

परमात्मा ने उसकी इच्छा स्वीकार ली और उसे वह योग्यता प्रदान कर दी. पृथ्वीलोक पर आने के बाद उसे पूर्वजन्म स्मरण थे इसलिए उसने सबसे पहले उपकार का फल चुकाने का निर्णय किया.

पृथ्वी पर आकर उसने उस वैश्या को तलाशना शुरू किया जिसके पुण्य से उसे मुक्ति मिली थी. आखिरकार उसने उस वैश्या को खोज ही निकाला.

उसने वेश्या को सारी बातें बताई और फिर पूछा- देवी ! आप धन्य हैं. आपके कर्म तो सबसे नीच कर्मों में आते हैं फिर भी आपके पास इतना संचित पुण्य कैसे था, यह घोर आश्चर्य की बात है. मैं जानना चाहता हूं कि कौन सा पुण्य आपने मुझे दान किया था?

वेश्या ने एक तोते की ओर इशारा करके कहा- वह तोता प्रतिदिन कुछ पढ़ता है. उसे सुनकर मेरा मन पवित्र हो गया. वही पुण्य मैंने तुम्हें दान कर दिया था.

सुशर्मा के आश्चर्य का तो कोई अंत ही रहा. एक स्त्री ने उस पुण्यफल का दान किया जिसके बारे में उसे पता तक नहीं है और वह पुण्य इतना प्रभावी है कि उसकी अधम योनि ही बदल गई.

उसने तोते को आदरपूर्वक प्रणाम किया और उसके ज्ञान का रहस्य पूछा. तब तोते ने अपने पूर्वजन्म की कथा सुनाई.

तोता बोला- पूर्वजन्म में मैं विद्वान होने के बावजूद अभिमानी था और सभी विद्वानों के प्रति ईर्ष्या रखता था. उनका अपमान और अहित करता था.

मरने के बाद मैं अनेक लोकों में भटकता रहा. फिर मुझे तोते के रूप में जन्म मिला लेकिन पुराने पाप के कारण बचपन में ही मेरे माता-पिता की मृत्यु हो गई.

मैं रास्ते में कहीं अचेत पड़ा था. तभी दैवयोग से वहां से कुछ ऋषि-मुनि गुजरे. मुझे इस अवस्था में देखकर उन्हें दया आई और मुनि मुझे साथ उठा लाए.

आश्रम में लाकर मुझे एक पिंजरे में वहां रख दिया जहां विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती थी.

मैंने वहां गीता का पूरा ज्ञान सीखा. सुनते-सुनते गीता का प्रथम अध्याय मुझे कंठस्थ हो गया. इससे पहले कि मैं अन्य अध्याय सीख पाता एक बहेलिये ने वहां से चुराकर इन देवी को बेच दिया.

मैं अपने स्वभाववश इनको प्रतिदिन गीता के श्लोक सुनाता रहता हूं. वही पुण्य इन्होंने आपको दान किया और आप मानवरूप में आए.

श्रीहरि ने लक्ष्मीजी से कहा- देवी जो गीता का प्रथम अध्याय पढ़ता या सुनता है उसे भवसागर पार करने में कोई कठिनाई नहीं होती.

तो इस प्रकार भगवान ने श्रीमद्भगवद्गीता के विभिन्न अध्यायों को अपने शरीर का अंग मानते हुए बताया है कि गीता में साक्षात उनका वास है.

गीता को स्पर्श करने का अर्थ है आप श्रीनारायण के अंगों का स्पर्श कर रहे हैं. भगवान का स्पर्श करके सौगंध लेने के बाद कोई असत्य नहीं कहेगा, इसी विश्वास के साथ गीता की सौगंध दी जाती है.

विशेष,,, भगवद्गीता कर्म की व्याख्या करता सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है जो सिखाती है कि व्यवहार में मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिए1 असत्य बोलने, लालच और मोह में पड़कर अपने निकटजनों को अनुचित सलाह देने और धर्म के विरूद्ध जाना मनुष्य का सिर्फ अपना ही नहीं बल्कि पूरे कुल के नाश का कारण हो जाता है1 गीता यह सब सिखाती है1 इसलिए ऐसे ग्रंथ से उत्तम और क्या होगा जो साक्षी को न्याय की सौगंध के लिए /जो समझदार को सत्य को बताने को मजबूर करे1

बीजेपी बिजेड़ी गठाबंधन को लेकर क्या है जनता का मूड? बीजेपी डेटा इकट्ठा कर रही है

मनोरंजन सासमल ,स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : बीजेपी यह डेटा इकट्ठा कर रही है कि अगर बीजेडी-बीजेपी गठबंधन होता है तो इसका राज्य की राजनीति पर क्या असर पड़ेगा। बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व ने इसके लिए राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक रणनीतिकार टीम को जिम्मेदारी दी है । आम लोगों के रुख के बारे में जानकारी जुटाकर शाम तक देने को कहा गया है ।उधर, दिल्ली में बीजेपी गठाबंधन केलिये बड़ी बैठक चल रही है । प्रदेश चुनाव प्रभारी विजयपाल सिंह तोमर के आवास पर प्रदेश भाजपा नेताओं से चर्चा चल रही है। जानकारी के मुताबिक, बैठक में इस बात पर चर्चा चल रही है कि दोनों पक्षों के बीच होने वाली गठाबंधन का स्वरूप क्या होगा ।

बीजेडी के बीजेपी गठबंधन होने से तस्वीर धीरे-धीरे साफ़ होती जा रही है। भाजपा नेता लेखाश्री सामंतसिंघर ने बताया कि दोनों दलों के बीच बातचीत आगे बढ़ी है । बीजेडी उपाध्यक्ष देवी मिश्रा ने कहा, "मौजूदा आम चुनाव के संदर्भ में हमारी पार्टी ने रणनीति के सभी पहलुओं पर चर्चा की है । बिजेड़ी अपना फैसला 2036 की दिशा को सामने रखकर लेगी ।

उपकुलपति प्रोफ़ेसर (डॉ.) श्री मानस रंजन पाणिग्रही जी ने कहा कि कम्प्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल के बढते चलन एवं इंटरनेट के अधिक उपयोग से साइबर अपराध बढ रहे है।

संगम विश्वविद्यालय के विधि विद्यालय द्वारा निशुल्क विधिक सहायता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। स्थानीय संगम विश्वविद्यालय के विधि विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा संगम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर (डॉ.) श्री करुणेश सक्सेना एवं कुल सचिव प्रोफ़ेसर (डॉ.) श्री राजीव मेहता के मार्गदर्शन में महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय मंगरोप में बालिकाओं एवं महिलाओं के लिये उचित, निष्पक्ष न्याय प्रक्रिया सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विधिक सहायता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों के रूप में रिटायर्ड जज श्री शिव कुमार शर्मा जी, संगम विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रोफ़ेसर (डॉ.) श्री मानस रंजन पाणिग्राही जी, मंगरोप विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती वंदना कौशिक जी एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री महेंद्र कुमार शर्मा जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

उपकुलपति प्रोफ़ेसर (डॉ.) श्री मानस रंजन पाणिग्रही जी ने कहा कि कम्प्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल के बढते चलन एवं इंटरनेट के अधिक उपयोग से साइबर अपराध बढ रहे है। साइबर अपराध देश, समाज एवं व्यक्ति की सुरक्षा एवं वित्ततीय स्थिति के लिए खतरा है। मुख्य अतिथि श्री शिव कुमार जी शर्मा एवं माननीय अतिथि श्री महेंद्र जी शर्मा ने महिलाओं के अधिकारों के संरक्षण, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, बाल विवाह प्रतिषेध, निःशुल्क विधिक सहायता, पीड़ति प्रतिकर स्कीम, मध्यस्थता कार्रवाई एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के आयामों के संबंध में जानकारी दी। संगम विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक एवं भाषण जैसी गतिविधियों द्वारा विधिक जागरूकता फैलाने का सफल प्रयास किया। कार्यक्रम के अंत में विधि विभाग के कार्यकारी अधिष्ठाता डॉक्टर ओमप्रकाश सोमकुंवर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के सफल संयोजन में समन्वयक शशांक शेखर सिंह व सह समन्वयक आदित्य दाधीच एवं विश्वविद्यालय विधिक सहायता समिति के अन्य सदस्य अवतार चौबे, गौरव सक्सेना का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर विधि विभाग के अन्य संकाय सदस्यों डॉ. सोनाक्षी शर्मा, वर्तिका मिश्रा, डॉ. गोवर्धन लाल पांडे एवं फार्मेसी विभाग के संकाय सदस्य गौरव शर्मा एवं श्रीमती सुमित्रा शर्मा के साथ महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की विशेष भूमिका रही।

एडीएम ने रामद्वारा मंदिर पहुँच कर लिया फूल डोल मेले की तैयारियो का जाएजा

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा। हर वर्ष की भाती शाहपुरा जिले में होली के पश्चात आयोजित होने वाले राष्ट्रीय स्तर के फूलडोल मेले के सफल आयोजन हेतु एडीएम मुकेश कुमार मीणा ने गुरुवार को रामद्वारा मंदिर पहुँच तैयारियो का जाएजा लिया एडीएम मीणा ने समीक्षा के दौरान वीआईपी कक्ष का अवलोकन किया तथा आगमन - निकास द्वार पर लगने वाली भीड़ के सुचारू संचालन हेतु सीसीटीवी कैमरा लगवाने हेतु निर्देश दिये। नगर परिषद चेयरमैन रघुनन्दन सोनी ने भी आयोजन के दौरान सुविधाजनक पार्किंग व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान रामद्वारा मंदिर के मुख्य संत नवनीत राम , नगर परिषद आयुक्त राम किशोर सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी मोजूद रहे।

रकारी वाहनों में ही होगा ईवीएम का परिवहन, वाहनों की होगी जीपीएस ट्रैकिंग

लखनऊ। चुनाव के दौरान ईवीएम का परिवहन सिर्फ सरकारी वाहनों से हो सकेगा। किसी प्रकार के निजी वाहन का प्रयोग ईवीएम को लाने या ले जाने के लिए नहीं किया जा सकेगा। लोकसभा चुनाव में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) का परिवहन सरकारी वाहनों या सरकार की ओर से अधिकृत वाहनों ही किया जाएगा। वाहनों की जीपीएस ट्रैकिंग भी की जाएगी। भारत निर्वाचन आयोग ने ईवीएम की सुरक्षा को लेकर सख्त दिशा-निर्देश जारी किए हैं। विधानसभा चुनाव-2022 में वाराणसी में एक निजी वाहन में ईवीएम मिली थी। बीते दिनों लखनऊ आए आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार ने उस घटना का जिक्र भी किया था। आयोग ने वाराणसी की घटना से सबक लेते हुए स्पष्ट किया है कि ईवीएम को एक जगह से दूसरी जगह केवल सरकारी वाहनों या सरकार की ओर से अधिकृत वाहनों में ही लेकर जाएंगे। ईवीएम परिवहन में लगे वाहनों में जीपीएस भी लगाया जाएगा। निर्वाचन आयोग ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को सभी राजनीतिक दलों से समान व्यवहार करने और पक्षपात करने वाले अफसरों पर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। साथ ही सभी डीईओ को राजनीतिक दलों की ओर से मतदाता सूची से संबंधित किसी भी शिकायत पर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। चुनावी अपराधों से जुड़ी गतिविधियों शामिल लोगों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई कर एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए हैं। चुनाव के लिए राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड सहित अन्य राज्यों और नेपाल की सीमा से जुड़े 30 जिलों में 566 चेक पोस्ट स्थापित की जाएगी। इनमें आबकारी विभाग की 38 और अन्य विभागों की 31 चेक पोस्ट भी शामिल हैं।

मंत्र के तीन तत्व : (शब्द - संकल्प - साधना)

1.मंत्र का पहला तत्त्व है-:

शब्द-: शब्द मन के भावों को वहन करता है, मन के भाव शब्द के वाहन पर चढ़कर यात्रा करते हैं, कोई विचार सम्प्रेषण का प्रयोग करे, कोई सजेशन या ऑटोसजेशन का प्रयोग करे, उसे सबसे पहले ध्वनि का, शब्द का सहारा लेना पड़ता है।

वह व्यक्ति अपने मन के भावों को तेज ध्वनि में उच्चारित करता है, जोर-जोर से बोलता है, ध्वनि की तरंगे तेज गति से प्रवाहित होती है, फिर वह उच्चारण को मध्यम करता है, धीरे-धीरे करता है, मंद कर देता है, पहले ओठ, दांत, कंठ सब अधिक सक्रिय थे, वे मंद हो जाते हैं, ध्वनि मंद हो जाती है, होठों तक आवाज पहुंचती है पर बाहर नहीं निकलती।

जोर से बोलना या मंद स्वर में बोलना- दोनों कंठ के प्रयत्न हैं, ये स्वर तंत्र के प्रयत्न हैं, जहां कंठ का प्रयत्न होता है वह शक्तिशाली तो होता है किन्तु बहुत शक्तिशाली नहीं होता, उसका परिणाम आता है किन्तु उतना परिणाम नहीं आता जितना हम इस मंत्र से उम्मीद करते हैं, मंत्र की परिणति या मूर्धन्य तब वास्तविक परिणाम आता है जब कंठ की क्रिया समाप्त हो जाती है, और मंत्र हमारे दर्शन केन्द्र में पहुंच जाता है।

यह मानसिक क्रिया है, जब मंत्र की मानसिक क्रिया होती है, मानसिक जप होता है तब न कंठ की क्रिया होती है, न जीभ हिलती है, न होंठ एवं दांत हिलते हैं, स्वर-तंत्र का कोई प्रकंपन नहीं होता, मन ज्योति केन्द्र में केन्द्रित हो जाता है, प्श्यन्ति वाक शैली में पूरे मंत्र को ललाट के मध्य में देखने का अभ्यास किया जाये, उच्चारण नहीं, केवल मंत्र का दर्शन, मंत्र का साक्षात्कार, मंत्र का प्रत्यक्षीकरण।

इस स्थिति में मंत्र की आराधना से वह सब उपलब्ध होता है जो उसका विधान है, मानसिक जप के बिना मन की स्वस्थता की भी हम कल्पना नहीं कर सकते, मन का स्वास्थ्य हमारे चैतन्य केन्द्रों की सक्रियता पर निर्भर है, जब हमारे दर्शन केन्द्र और ज्योति केन्द्र सक्रिय हो जाते हैं तब हमारी शक्ति का स्रोत फूटता है, और मन शक्तिशाली बन जाता है।

नियम है - जहां मन जाता है, वहां प्राण का प्रवाह भी जाता है, जिस स्थान पर मन केन्द्रित होता है, प्राण उस ओर दौड़ने लगता है, जब मन को प्राण का पूरा सिंचन मिल जाता है और शरीर के उस भाग के सारे अवयवों को, अणुओं और परमाणुओं को प्राण और मन का सिंचन मिलता है तब वे सारे सक्रिय हो जाते हैं, जो कण सोये हुए हैं, वे जाग जाते हैं।

चैतन्य केन्द्र को जाग्रत हुआ तब मानना चाहिये जब उस स्थान पर मंत्र ज्योति में डूबा हुआ दिखाई पड़ने लग जाये, जब मंत्र बिजली के अक्षरों में दिखने लग जाय तब मानना चाहिये वह चैतन्य केन्द्र जाग्रत हो गया है, मंत्र का पहला तत्त्व है- शब्द और शब्द से अशब्द, शब्द अपने स्वरूप को छोड़कर प्राण में विलीन हो जाता है, मन में विलीन हो जाता है तब वह अशब्द बन जाता है।

2.मंत्र का दूसरा तत्त्व है-:

संकल्प-: साधक की संकल्प शक्ति दृढ़ होनी चाहिये, यदि संकल्प शक्ति दुर्बल है तो मंत्र की उपासना उतना फल नहीं दे सकती जितने फल की अपेक्षा की जाती है, मंत्र साधक में विश्वास की दृढ़ता होनी चाहिये, उसकी श्रद्धा और इच्छाशक्ति गहरी होनी चाहिये, उसका आत्म-विश्वास जागृत होना चाहिये, साधक में यह विश्वास होना चाहिये कि जो कुछ वह कर रहा है अवश्य ही फलदायी होगा, वह अपने अनुष्ठान में निश्चित ही संभवतः सफल होगा।

सफलता में काल की अवधि का अन्तर आ सकता है, किसी को एक महीने में, किसी को दो चार महीनों में और किसी को वर्ष भर बाद ही सफलता मिले, बारह महीने में प्रत्येक साधक को मंत्र का फल अवश्य ही मिलना चालू हो जाता है, संकल्प तत्त्व में श्रद्धा समन्वित है, श्रद्धा का अर्थ है- तीव्रतम आकर्षण, केवल श्रद्धा के बल पर जो घटित हो सकता है, वह श्रद्धा के बिना घटित नहीं हो सकता।

पानी तरल है, जब वह जम जाता है, सघन हो जाता है तब वह बर्फ बन जाता है, जो हमारी कल्पना है, जो हमारा चिन्तन है वह तरल पानी है, जब चिन्तन का पानी जमता है तब वह श्रद्धा बन जाता है, तरल पानी में कुछ गिरेगा तो वह पानी को गंदला बना देगा, बर्फ पर जो कुछ गिरेगा, वह नीचे लुढ़क जायेगा, उसमें घुलेगा नहीं, जब हमारा चिन्तन श्रद्धा में बदल जाता है तब वह इतना घनीभूत हो जाता है कि बाहर का प्रभाव कम से कम होता है।।

3.मंत्र का तीसरा तत्त्व है-:

साधना-: मंत्र शब्द भी है, आत्म विश्वास भी है, संकल्प भी है तथा श्रद्धा भी है, किन्तु साधना के अभाव में मंत्र फलदायी नहीं हो सकता, जब तक मंत्र साधक आरोहण करते-करते मंत्र को प्राणमय न बना दे, तब तक सतत साधना करता रहे, वह निरन्तरता को न छोड़े, योगसूत्र में पतंजलि कहते हैं- स्दीर्घकाल नैरन्तर्य सत्कारा सेवितःस ध्यान की तीन शर्त है- दीर्घकाल, निरन्तरता एवं निष्कपट अभ्यास।

साधना में निरन्तरता और दीर्घकालिता दोनों अपेक्षित है, अभ्यास को प्रतिदिन दोहराना चाहिये, आज आपने ऊर्जा का एक वातावरण तैयार किया, कल उस प्रयत्न को छोड़ देते हैं तो वह ऊर्जा का वायुमण्डल स्वतः शिथिल हो जाता है, एक मंत्र साधक तीस दिन तक मंत्र की आराधना करता है और इकतीसवें दिन वह उसे छोड़ देता है, फिर बतीसवें दिन उसे प्रारम्भ करता है तो मंत्र साधना शास्त्र कहता है, कि उस मंत्र साधक की साधना का वह पहला दिन ही मानना चाहिये।

साधना का काल दीर्घ होना चाहिये, ऐसा नहीं कि काल छोटा हो, दीर्घकाल का अर्थ है- जब तक मंत्र का जागरण न हो जायें, मंत्र चैतन्य न हो, जो मंत्र शब्दमय था वह एक ज्योति के रूप में प्रकट न हो जायें, तब तक साधना चलती रहनी चाहिये, जब तक साधना में मंत्र के तीनों तत्त्वों का समुचित योग नहीं होता तब तक साधक को साधना की सफलता नहीं मिल सकती।

अध्यात्म की शैव-धारा में ओऊम्नमः शिवाय' एक महामंत्र है, इस महामंत्र की सिद्धि जीवन की सिद्धि है, इस मंत्र की साधना से भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों उपलब्धियां प्राप्त होती है, आवश्यकता है उसे अपना कर अनुभव करने की..।

वेद शास्त्रों और ऋषियों महात्माओं के मुखारविन्द से, स्वाध्याय एवं स्वानुभूति से जो निष्कर्ष आया है उन्हीं का निरूपण करने की चेष्टा मैंने की है। और आत्मियता के भाव के साथ आप तक पहुँचाया है, इसमें किसी प्रकार का अहंभाव एवं कृत्रिमता का संयोगम नहीं है पोस्ट में किसी तरह की त्रुटि हो तो एक बार पुनः क्षमा चाहूंगा।।

जिला कलक्टर और पुलिस अधीक्षक पहुंचे ग्राम पंचायत स्तरीय जनसुनवाई में

जनसुनवाई में आए 21 प्रकरण, आमजन की सुनी समस्याएं और हाथोहाथ समाधान के दिए निर्देश मौक़े पर ही पेंशन का सत्यापन होने पर आई पारी देवी के चेहरे पर मुस्कान

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

शाहपुरा। राज्य सरकार के निर्देशानुसार माह के प्रथम गुरुवार को ग्राम पंचायत स्तरीय जनसुनवाई आयोजित की गई। जिला कलक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत गुरूवार को जिला पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार कावट के साथ शाहपुरा की ग्राम पंचायत रहड़ में आयोजित जनसुनवाई में पहुँचे।

जन सुनवाई में प्राप्त परिवादो के निस्तारण करने हेतु ज़िला कलेक्टर शेखावत ने संबंधित अधिकारीयो को निर्देशित करते हुए कहा कि आम नागरिकों की समस्याओं का त्वरित निराकरण करते हुए राज्य व केन्द्र सरकार की फ्लैगशिप एवं जलकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति को दिलाना सुनिश्चित करें।अटलसेवा केन्द्र रहड में जन सुनवाई के दौरान कुल 21 प्रकरण जिसमें पंचायती राज के 14, समाज कल्याण विभाग के 02, राजस्व विभाग के 03, महिला एवं बाल विकास विभाग के 01. सार्वजनिक निर्माण विभाग का 01 प्रकरण प्राप्त हुआ जिसमें से 03 प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया।

जनसुनवाई के दौरान पारी देवी बागरिया ने अंगुठा नही आने से पेशन सत्यापन नहीं होने की फरियाद जिला कलक्टर महोदय राजेन्द्र सिंह शेखावत से की। जिला कलक्टर महोदय के निर्देश पर विकास अधिकारी चुनाराम विश्नोई ने फरियादी के मोबाईल से ओटीपी लेकर पंचायत समिति कार्यालय से तत्काल पेशन सत्यापन करवाया। पारी देवी बागरिया ने जिला कलक्टर शेखावत को बताया कि वह विधवा महिला है तथा उनका बेटा बाहर कमाने गया है। पेशन का मौक़े पर ही सत्यापन करवाने पर पारी देवी ने ज़िला कलेक्टर का धन्यवाद अर्पित किया ।इस दौरान उपखंड अधिकारी, विकास अधिकारी तथा समस्त ब्लॉक स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

क्या दुनियाभर में ईवी का बुलबुला फूट गया है? मांग में गिरावट से पैदा हुई घबराहट की स्थिति

इलेक्ट्रिक वाहन वैश्विक सड़कों पर अपना दबदबा बनाने का वादा करते हैं और बैटरी से चलने वाले पर्सनल मोबिलिटी ऑप्शंस की लोकप्रियता में बढ़ोतरी किसी भी चीज से कम नहीं रही है। सिर्फ एक दशक से भी कम समय में, टेस्ला और BYD जैसी कंपनियों ने कई दशकों पुराने पारंपरिक कार निर्माताओं के लिए एक बड़ी चुनौती पेश की है। लेकिन जहां हाल का समय शानदार रहा है, वहीं नजदीकी भविष्य का कोई भरोसा नहीं नजर आ रहा है। खासतौर पर इलेक्ट्रिक कारों की मांग कम हो रही है। और दुनिया भर के प्रमुख ऑटोमोबाइल बाजारों में से कई में बिक्री की बढ़ोतरी दर कम होने की उम्मीद है।

परिवहन विशेष न्यूज

अलग-अलग श्रेणी में ज्यादातर ईवी निर्माताओं के लिए पिछले चार वर्ष बेहद फायदेमंद रहे हैं। बढ़ते बाजार में नए-नए मॉडलों को उतारा गया और रिकॉर्ड बिक्री के साथ भरपूर कमाई की गई है। 2021 में ईवी की बिक्री 6.75 मिलियन थी, जो पिछले वर्ष की तुलना में 108 प्रतिशत ज्यादा थी। यह 2022 में 3.66 मिलियन यूनिट्स की और बढ़ोतरी हुई और 2023 में 14.2 मिलियन पर रही। इन आंकड़ों में फुल इलेक्ट्रिक मॉडल और साथ ही प्लग-इन हाइब्रिड दोनों शामिल हैं। लेकिन अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर 2023 तक ही खतरे के संकेत दिखाई देने लगे।

ईवी पुश पर हल्की ब्रेक

दुनिया भर के कई सबसे बड़े ऑटोमोटिव और ईवी बाजारों में, ईवी की मांग में थोड़ी लेकिन महत्वपूर्ण गिरावट देखी जा रही है।

चीन दुनिया का सबसे बड़ा ऑटोमोटिव और ईवी बाजार है। चाइना एसोसिएशन ऑफ ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (CAAM) के आंकड़ों के अनुसार, चीन में जनवरी में न्यू-एनर्जी व्हीकल्स (NEV) की बिक्री 729,000 यूनिट्स पर थी। जो एक महीने पहले की तुलना में 39 प्रतिशत की सीधी गिरावट थी। ईवी का उत्पादन 33 फीसदी घटकर 787,000 हो गया। चाइना पैसेंजर कार एसोसिएशन (CPCA) के मुताबिक, इसके दो मुख्य कारण है - कुछ लोकप्रिय मॉडलों की बढ़ती कीमतें और साथ ही NEV की खरीद पर स्थानीय सरकारों के घटते प्रस्ताव। एसएंडपी ग्लोबल कमोडिटी इनसाइट्स से पता चलता है कि जनवरी में देश में सभी नई कारों की बिक्री में ईवी का 29.9 फीसदी हिस्सा था, जो मई 2023 से पहली बार 30 फीसदी से नीचे गिर गया।

फिर अमेरिका है, जो दुनिया के सबसे बड़े ऑटोमोटिव बाजारों की सूची में दूसरा स्थान रखता है। यहां ईवी का बाजार बढ़ रहा है, लेकिन चिंता की बात यह है कि यह उतनी तेजी से नहीं बढ़ रहा है, जितनी पहले भविष्यवाणी की गई थी। यहां सभी नई कारों की बिक्री में ईवी का 7.6 प्रतिशत हिस्सा था, जो 5.9 प्रतिशत से बढ़कर हुआ। लेकिन मीडिया रिपोर्ट के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले साल के अंतिम महीनों में ऐसी कार मॉडल की बिक्री में सिर्फ 1.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

उद्योग के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि जमीनी हकीकत यह है कि अमेरिकी पहले से कहीं ज्यादा ईवी खरीद रहे हैं। लेकिन कई औरों के ईवी में निवेश करने की भविष्यवाणी की गई थी, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। या कम से कम अभी तक तो नहीं किया है। सॉलिड डीलर और कंपनी छूट की कमी को पूरी तरह से दोष दिया जा रहा है। जीएम की सीईओ मैरी बारा ने हाल ही में कहा ₹यह सच है, ईवी की बढ़ोतरी की रफ्तार धीमी हो गई है, जिसने कुछ अनिश्चितता पैदा कर दी है। हम मांग के मुताबिक निर्माण करेंगे।₹ पहले जीएम ने ईवी के उत्पादन में कटौती की और बाद में फोर्ड ने भी ऐसा ही किया है।

यहां तक कि यूरोप के कई बाजारों में भी ईवी की मांग कम होती दिख रही है। जर्मनी ने ऐसे वाहनों के लिए प्रोत्साहन कार्यक्रम बंद कर दिया। इससे मांग पर तत्काल नकारात्मक प्रभाव पड़ा। ब्रिटेन में, सोसाइटी ऑफ मोटर मैन्युफैक्चरर्स एंड ट्रेडर्स ने बताया कि हाल के वर्षों की तुलना में ईवी की बिक्री उतनी तेज नहीं है। यहां के विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार का 2024 में बिकने वाली सभी नई कारों में से 22 प्रतिशत का शून्य-उत्सर्जन वाहन (ZEV) जनादेश पूरी तरह से उत्सर्जन मुक्त होना चाहिए, इसके चूक जाने की संभावना है।

अभी करना होगा इंतजार

तो क्या ईवी सिर्फ एक सनक है जो फैशन की दुनिया में कपड़ों की शैलियों की तरह फीकी पड़ जाएगी? ज्यादातर विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि ऐसा होने की संभावना नहीं है। उनका दावा है कि ईवी एक लंबा खेल है, न कि तत्काल हिट जैसा कि कई अन्य लोगों ने अब तक सोचा था। न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में 2024 में अमेरिका में ईवी की बिक्री घटेगी या नहीं, इस पर प्रकाश डाला गया है कि ₹ईवी अब नई नहीं हैं।₹ इसमें कहा गया, ₹हालांकि, 2024 में, सवाल यह है कि वास्तव में, खरीदने के लिए कौन बचा है? एलन मस्क के प्रशंसक और अन्य तकनीकी ट्रेंडसेटर सभी मूल रूप से अपने ईवी खरीद चुके हैं, और अब प्रमुख वाहन निर्माताओं को उन ग्राहकों से मुकाबला करना है जो वास्तव में कारों की परवाह नहीं करते हैं।₹

हालांकि, निर्माता यह सुनिश्चित करने के लिए उत्सुक हैं कि उनकी अकाउंट्स बुक में हरा रंग फीका न पड़े या यह और भी खराब न हो जाए, यानी लाल न हो जाए। टेस्ला से लेकर BYD तक, कई ब्रांडों ने चीन के साथ-साथ अमेरिका में भी कीमतों में कटौती का एलान किया है। ताकि संभवतः पिछले ऊंचाई पर जा रहे ग्रोथ ट्रेजेक्ट्री को फिर से शुरू किया जा सके। यहां तक कि भारत में भी, जहां इलेक्ट्रिक कारों की स्वीकृति और अपनाना काफी कम है, टाटा मोटर्स और एमजी मोटर इंडिया जैसी कंपनियों ने हाल ही में अपने कई फुल इलेक्ट्रिक मॉडलों की कीमतों में कटौती की है। क्या यह तरीका काम करेगा? फिलहाल यह इंतजार करो और देखो का खेल हो सकता है।

इलेक्ट्रिक वाहन पेट्रोल-डीजल कारों की तुलना में उत्सर्जित कर सकते हैं 1850 गुना ज्यादा कण, अध्ययन में दावा

एक लेटेस्ट अध्ययन में दावा किया गया है कि इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) आधुनिक गैस से चलने वाली कारों की तुलना में ब्रेक और टायरों से ज्यादा मात्रा में पार्टिकुलेट मैटर छोड़ सकते हैं। एमिशन एनालिटिक्स के अध्ययन के मुताबिक, उत्सर्जन 1,850 गुना ज्यादा हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन के लिए बढ़ती चिंता ने पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्पों में बहुत ज्यादा दिलचस्पी पैदा की है। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि ईवी पेट्रोल और डीजल कारों की तुलना में पर्यावरण के लिए बेहतर हैं क्योंकि वे कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पैदा करते हैं।

एमिशन एनालिटिक्स की रिपोर्ट के मुताबिक, ईवी का ज्यादा वजन टायरों के तेजी से खराब होने और हवा में हानिकारक रसायन छोड़ने का कारण बनता है। ज्यादातर टायर कच्चे तेल से हासिल सिंथेटिक रबर से बने होते हैं।

पेट्रोल इंजन की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहनों में भारी बैटरी होती हैं। यह अतिरिक्त वजन ब्रेक और टायरों पर ज्यादा दबाव डालता है। जिससे टायरों की घिसावट बढ़ जाती है।

रिपोर्ट में टेस्ला मॉडल Y और फोर्ड F-150 लाइटनिंग का उदाहरण देते हुए बताया गया है कि दोनों कारों में बैटरियों का वजन लगभग 1,800 पाउंड है। अध्ययन के अनुसार, आधे टन की बैटरी वाली इलेक्ट्रिक कार से टायर के घिसाव से निकलने वाला उत्सर्जन मॉडर्न पेट्रोल कार से निकलने वाले निकास उत्सर्जन से 400 गुना ज्यादा हो सकता है।

उबर ने यूरोप से ईवी पर जोर देने का किया आग्रह

एक अन्य विकास में, मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि उबर ने दशक की शुरुआत में 2030 तक अमेरिका, कनाडा और यूरोपीय शहरों में अपनी 100 प्रतिशत सवारी को इलेक्ट्रिक वाहनों में ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सीईओ दारा खोस्रोशाही ने फास्ट कंपनी के एक कॉलम में लिखा, ₹कठोर वास्तविकता यह है कि उबर नीति निर्माताओं और व्यवसायों से मजबूत कार्रवाई के बिना अपने शून्य-उत्सर्जन लक्ष्यों तक नहीं पहुंच पाएगा।₹ उन्होंने आगे कहा, ₹दुर्भाग्य से, ठीक उसी समय जब हमें इस मोड़ के जरिए तेजी लाने की जरूरत है, कई सरकारें और वाहन निर्माता धीमे हो रहे हैं।₹

जब उबर ने 2030 तक प्रमुख बाजारों में 100 प्रतिशत शून्य-उत्सर्जन राइड हासिल करने का लक्ष्य रखा था। तब कंपनी ने अगले साल के आखिर तक चालकों को ईवी में शिफ्ट करने में मदद करने के लिए 800 मिलियन डॉलर का भी योगदान दिया था।

फिलीपींस के इस शहर में दोपहिया वाहनों के लिए फुल फेस हेलमेट पर लगा प्रतिबंध, हैरान कर देगी वजह

परिवहन विशेष न्यूज

दोपहिया वाहन सुरक्षा को लेकर आखिरकार वैश्विक स्तर पर सरकारें और मोटर चालक दोनों ध्यान दे रहे हैं। हालांकि, एक विचित्र कदम में, फिलीपींस के एक शहर ने फुल-फेस हेलमेट के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है।

दोपहिया वाहन सुरक्षा को लेकर आखिरकार वैश्विक स्तर पर सरकारें और मोटर चालक दोनों ध्यान दे रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा सरकारें दोपहिया वाहन सवारों के लिए सुरक्षा प्रणालियों और राइडिंग गियर को अनिवार्य कर रही हैं। हर देश में कम से कम हेलमेट पहनना अनिवार्य है। हालांकि, इन सबके बीच एक विचित्र कदम में, फिलीपींस के एक शहर ने फुल-फेस हेलमेट के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है।

फिलीपींस के पश्चिमी विसायस क्षेत्र के एक नगरपालिका, बाकोलोड शहर में, फुल-फेस मोटरसाइकिल हेलमेट के इस्तेमाल पर प्रतिबंध का एलान किया गया है। हालांकि, प्रतिबंध का कारण शहर में हाल ही में हुआ हथगोले से हुआ एक हमला है। एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 27 फरवरी को शहर के एक भीड़भाड़ वाले इलाके में फुल-फेस हेलमेट पहने हुए एक व्यक्ति ने ग्रेनेड फेंका, जिससे तीन लोग घायल हो गए और दो वाहन क्षतिग्रस्त हो गए।

हालांकि संदिग्ध ने अपनी पहचान छिपाने के लिए मोटरसाइकिल हेलमेट का इस्तेमाल किया था, लेकिन फिर भी उसे पुलिस ने पकड़ लिया। हमले की गंभीरता को देखते हुए, भविष्य में इसी तरह की घटनाओं को रोकने के लिए सरकार ने कठोर कदम उठाए हैं। हमले के अगले दिन सिटी गवर्नमेंट ने कार्यकारी आदेश 86 जारी किया, जो शहर के भीतर फुल-फेस हेलमेट पर प्रतिबंध लगाता है।

इसके अलावा, सरकार ने शहर में मोटरसाइकिलों के लिए रफ्तार की सीमा 40 किमी प्रति घंटा तक सीमित कर दी है। साथ ही आसपास पुलिस की मौजूदगी बढ़ा दी है। हालांकि, खुले-चेहरे वाले या तीन-चौथाई हेलमेट का इस्तेमाल अभी भी शहर में किया जा सकता है।

फिलीपींस में कई मोटरसाइकिल चालकों फुल-फेस हेलमेट पसंद करते हैं। यह फैसला उनके लिए अनुचित लग सकता है। खासकर इसलिए, क्योंकि यह व्यापक प्रतिबंध मोटरसाइकिल पर व्यक्तिगत सुरक्षा को महत्व नहीं देता है। जब सवाल सवार की सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा का हो, तो यह एक कठिन फैसला होगा।

दोपहिया वाहन फिलीपींस के लास्ट-मील गतिशीलता क्षेत्र का एक मजबूत हिस्सा बने हुए हैं। हालांकि, यह पहला मौका नहीं होगा जब सरकार ने कानून लागू करने के नाम पर दोपहिया वाहन सवारों के लिए विशिष्ट आदेश जारी किए हैं। इससे पहले, सरकार ने फ्रंट लाइसेंस प्लेट, रैंडम पुलिस चेकपॉइंट और अन्य चीजों को अनिवार्य कर दिया था।

मस्क की टेस्ला रोडस्टर एक सेकंड से भी कम समय में पकड़ेगी 100 Kmph की रफ्तार, बुगाटी के CEO ने दिया जवाब

बुगाटी के सीईओ मेट रिमेक ने इस दावे पर चौंकाने वाली प्रतिक्रिया दी। फेसबुक पोस्ट पर एक टिप्पणी का जवाब देते हुए, जहां एक यूजर ने मस्क के दावों के बारे में बताया, रिमेक ने संभावित उपलब्धि की तकनीकी व्यवहार्यता को स्वीकार किया, लेकिन एक शर्त के साथ।

पारवहन विशेष न्यूज

जैसे-जैसे इलेक्ट्रिक वाहन क्रांति रफ्तार पकड़ रही है, यहां तक कि परफॉर्मेंस कार सेगमेंट में भी, टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ने कंपनी के आगामी रोडस्टर के बारे में ज्यादा प्रचार शुरू कर दिया है। मस्क ने हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर खुलासा किया कि टेस्ला ईवी परफॉर्मेंस की सीमाओं को आगे बढ़ाने के लिए SpaceX (स्पेसएक्स) के साथ मिलकर काम कर रही है। उन्होंने दावा किया कि रोडस्टर 1 सेकंड से भी कम समय में 0 से 60 मील प्रति घंटे (0-100 किमी प्रति घंटे) का दमदार एक्सीलरेशन हासिल करेगी।

यदि यह कामयाब होती है, तो यह स्प्रिंट समय मौजूदा रिकॉर्ड धारक, 2.2 मिलियन डॉलर की Rimac Nevera (रिमेक नेवेरा) को पछाड़ देगी। जिसने 1.74 सेकंड में रिकॉर्ड बनाया था।

बुगाटी के सीईओ मेट रिमेक ने इस दावे पर चौंकाने वाली प्रतिक्रिया दी। फेसबुक पोस्ट पर एक टिप्पणी का जवाब देते हुए, जहां एक यूजर ने मस्क के दावों के बारे में बताया, रिमेक ने संभावित उपलब्धि की तकनीकी व्यवहार्यता को स्वीकार किया, लेकिन एक शर्त के साथ।

रिमेक ने लिखा, ₹यह संभव है, लेकिन थ्रस्टर्स के साथ।₹ उन्होंने बताया कि उनकी कंपनी पहले ही ऐसा करने का सिमुलेशन कर चुकी है। हालांकि, उन्होंने बताया कि व्यावहारिक कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि 2-3 सेकंड के भीतर हवा छोड़ने से अतिरिक्त भार - टैंक, कम्प्रेसर, वॉल्व, नोजल और इसी तरह के कंपोनेंट्स ले जाने का असर पड़ता है।

उन्होंने कहा, ₹फैन के साथ भी ऐसा ही है। वे आपको सिर्फ ज्यादा पकड़ देते हैं, लेकिन आपको 1 सेकंड से कम में 0-100 किमी/घंटा से नीचे स्पीड करने के लिए पहियों पर लगभग 30.000 एनएम की जरूरत होती है। जिसका मतलब है कि आपको बड़े मोटर, इनवर्टर, गियरबॉक्स, ड्राइवशाफ्ट आदि की जरूरत होती है।₹

इसके अलावा, उन्होंने कहा कि वाहन को अतिरिक्त डाउनफोर्स के लिए फैन का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने के लिए असाधारण रूप से हल्का रहना चाहिए। क्योंकि भारी कारें टायरों को जल्दी से ओवरलोड कर देती हैं, खासकर इलेक्ट्रिक कारें। रिमेक ने कहा, ₹तो इसे हासिल करने का वास्तव में एकमात्र तरीका है थ्रस्टर्स। लेकिन साथ ही यह बहुत सारी कमियां भी लाते हैं।₹

इन संभावित प्रतिद्वंद्वियों के बीच कीमत के अंतर की बात करें तो, टेस्ला मॉडल 200,000 डॉलर से 250,000 डॉलर (लगभग 2 करोड़ रुपये तक) की अपेक्षित कीमत के साथ, रिमेक नेवेरा के 2.2 मिलियन डॉलर (लगभग 18.23 करोड़ रुपये) के कीमत को काफी कम कर देगा।

जीवन को समझिए

पी.के. खुराना

मैं एक संन्यासी हूं, पर मैं एक गृहस्थ भी हूं, मैं सिर्फ वानप्रस्थ आश्रम में ही नहीं हूं बल्कि एक गृहस्थ संन्यासी हूं। मैंने बीस साल मीडिया घरानों में गुजारे और उसके बाद के बीस साल जनसंपर्क में रहा।

स्पिरिचुअल हीलिंग कोई जादू-टोना नहीं है, कोई अंधविश्वास नहीं है, बल्कि एक प्रभावी टूल है जो हमारे दिल, दिमाग और आत्मा से कूड़ा चुनकर उसे निर्मल बना देती है। स्पिरिचुअल हीलिंग की सबसे बड़ी खूबी यह है कि स्पिरिचुअल हीलर को आपकी उंगली भी छूने की आवश्यकता नहीं है और यह ऑनलाइन भी हो सकती है। मैं मीडिया घरानों का शुक्रगुजार हूं कि उनकी सीख के कारण परमात्मा ने मुझ पर कृपा की और स्पिरिचुअल हीलर बनकर समाज सेवा करने के काबिल हो सका। जीवन की यह समझ मुझे 'दिव्य हिमाचल' सरीखे मीडिया घरानों ने दी है

मैं एक संन्यासी हूं, पर मैं एक गृहस्थ भी हूं, मैं सिर्फ वानप्रस्थ आश्रम में ही नहीं हूं बल्कि एक गृहस्थ संन्यासी हूं। मैंने बीस साल मीडिया घरानों में गुजारे और उसके बाद के बीस साल जनसंपर्क में रहा। एक राष्ट्रीय जनसंपर्क कंपनी के चेयरमैन के रूप में भी मीडिया घरानों, संपादकों और पत्रकारों से जुड़े रहना मेरे पेशे का हिस्सा था। मैंने गिनीज विश्व रिकॉर्ड एक लेखक के रूप में बनाया, और अब भी मैं एक कॉलमिस्ट के रूप में मीडिया से जुड़ा हुआ हूं। मीडिया घरानों से जुड़े रहने का जिक्र मैं इसलिए कर रहा हूं क्योंकि इस पेशे ने मेरे जीवन को संवारा है। मीडिया से मेरे संबंधों ने पहले मुझे हैपीनेस गुरू के रूप में तराशा और फिर एक आध्यात्मिक सिद्धगुरू बनने के यात्रापथ पर आगे बढ़ाया। मीडिया घरानों से मुझे जो सीख मिली उसने मुझे जीवन को समझने की कूवत दी। इसके अलावा, जीवन में सफलता, खुशी और खुशहाली का संदेश मैं मीडिया के माध्यम से जल्दी और ज्यादा लोगों तक पहुंचा सकता हूं, यही कारण है कि स्पिरिचुअल हीलर और सिद्धगुरू हो जाने के बाद भी मैं मीडिया से अपना साथ लगातार बनाए हुए हूं। आइए, अब समझने की कोशिश करते हैं कि मीडिया से मुझे क्या सीख मिली और उसने मेरा जीवन कैसे संवारा। अखबार में काम करने वाले दो समूहों का बड़ा महत्व है।

पहला समूह है पत्रकारों का, जो समाज के बीच रहकर खबरें टटोलते हैं और नए-नए खुलासे करते रहते हैं। खबर ढूंढना, खबर के महत्व को समझना और उसकी रिपोर्ट बनाकर सौंपना पत्रकारों की महारत है। मीडिया घरानों का दूसरा महत्वपूर्ण अंग है संपादकीय विभाग। संपादकीय विभाग के विभिन्न स्तरों के संपादकगण अपने पास आई खबरों को पढ़कर, उनमें आवश्यक काट-छांट करके, उन्हें सजा-संवारकर पाठकों अथवा दर्शकों को पेश करते हैं। पत्रकार लोग खोजी किस्म के होते हैं। छुपी घटनाओं को ढूंढ निकालना और उसे जनता के सामने पेश करना उनकी खूबी है। संपादकगण उस सूचना को तराशने का काम करते हैं। उसे काट-छांटकर और पालिश लगाकर इस काबिल बनाते हैं कि खबर में कही गई पूरी बात आसानी से सबकी समझ में आ जाए। पत्रकार खबर को विस्तार देता है और संपादक उसमें काट-छांट करता है। यह काट-छांट ही जीवन का असली सबक है। खबर में से वो हर हिस्सा निकाल देना जो अनावश्यक है, जो खबर को बोझिल बनाता है या जो खबर में कोई नई वैल्यू नहीं जोड़ता, उस सबको निकाल देना, संपादक का काम है। जैसे पत्थर में काट-छांट करके एक सुंदर मूर्ति बनती है, वैसे ही पत्रकार द्वारा दी गई खबर के अनावश्यक हिस्सों को हटाकर संपादकगण खबर को समझ में आने वाला बना देते हैं। यह घटाना इतना महत्वपूर्ण है कि यह खबर में वैल्यू जोड़ देता है। मैं दोहरा कर कहना चाहूंगा कि यह घटाना इतना महत्वपूर्ण है कि यह खबर में वैल्यू जोड़ देता है, और मीडिया घरानों में रहकर मैंने जीवन का यही सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा है। हमें जीवन में कई तरह के ऑफर आते हैं, कई तरह के अवसर मिलते हैं, कई तरह की इच्छाएं जोर मारती हैं, और हमें उनमें से अपने लिए सर्वश्रेष्ठ को चुनना होता है। जब हम किसी एक बात को चुनते हैं, उसके लिए 'हां' बोलते हैं तो इसका सीधा-सीधा मतलब है कि हमने बाकी सारे विकल्पों को 'न' बोलकर इस एक विकल्प को, इस एक काम को, इस एक प्रोजेक्ट को, इस एक अवसर को, इस एक चीज को 'हां' बोला है। यही एडिटिंग है। सही बात को चुनना, और बाकी सब को इन्कार कर देना। सही बात को सहेजना और बाकी सब को काट देना। इससे फोकस बनता है, इससे सफलता बनती है, इससे खुशहाली बनती है, इससे खुशी आती है, स्थायी खुशी आती है।

उदाहरण के लिए विराट कोहली प्रसिद्ध भी हैं, सफल भी हैं, सेलेब्रिटी भी हैं, और अमीर भी हैं। दूसरी तरफ, शाहरुख खान भी प्रसिद्ध भी हैं, सफल भी हैं, सेलेब्रिटी भी हैं, और अमीर भी हैं। इसी तरह शशि थरूर भी प्रसिद्ध भी हैं, सफल भी हैं, सेलेब्रिटी भी हैं, और अमीर भी हैं। इन तीनों में ये सारी समानताएं हैं, लेकिन एक बड़ा फर्क भी है। विराट कोहली क्रिकेटर हैं, शाहरुख खान एक्टर हैं और शशि थरूर राजनीतिज्ञ हैं। तीनों का पेशा अलग है, फोकस अलग है, तीनों ने अपनी काबिलीयत और रुचि के अनुसार अपनी मनपसंद का एक करिअर चुना तो बाकी सारे विकल्पों को 'न' कह दी। हमारा फोकस हमारी सफलता की पहली सीढ़ी है। सफल होने और सफल बने रहने के लिए जीवन में भी ऐसी ही काट-छांट की जरूरत होती है। जब हम समाधान का हिस्सा बनने को 'हां' बोलकर, लोगों की कमियां ढूंढने, शिकायतें करने, ईष्या करने, पीठ पीछे चुगली करने को 'न' बोलते हैं तो हम वास्तव में समस्याओं को 'न' बोलते हैं और जीवन खुशहाल होना शुरू हो जाता है। लोग हमें पसंद करना शुरू कर देते हैं, लोग हम पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं, लोग हमारी सिफारिश करना शुरू कर देते हैं, हमें रिकमेंड करना शुरू कर देते हैं और हमारे वो काम जो कभी हमें बहुत कठिन लगते थे, कदरन आसान हो जाते हैं। मैंने शुरू में कहा कि मैं एक गृहस्थ हूं, पर एक संन्यासी भी हूं तो संन्यास को 'हां' कहने के लिए मुझे लालच को 'न' बोलना पड़ा, क्रोध को 'न' बोलना पड़ा, झूठ को 'न' बोलना पड़ा। गृहस्थ संन्यासी, सहज संन्यास की परंपरा है। सहज संन्यास में जाने के लिए कपड़े नहीं रंगवाने पड़ते, सिर नहीं मुंडाना पड़ता, जटा-जूट नहीं बनानी पड़ती, घर-परिवार-दुनिया नहीं छोडनी पड़ती। सहज संन्यास, दुनिया में रहकर दुनियावी जिम्मेदारियां निभाते हुए अपने आसपास के लोगों को जागृत करने, उनमें खुशियां बांटने, और उन्हें खुशियां बांटने के काबिल बनाने का नाम है। मैं एक सहज संन्यासी हूं।

यह मेरी खुशकिस्मती है कि परमात्मा ने मुझे स्पिरिचुअल हीलर बनाकर समाज की सेवा का औजार बनाया, समाज सेवा का साधन बनाया, समाज सेवा का टूल बनाया। मैं अपने संपर्क में आने वाले लोगों को स्पिरिचुअल हीलिंग के माध्यम से समाधि की अवस्था में ले जाकर उनकी समस्याओं का हल करने, उन्हें जागृत करने और जीवन में सफलता के साथ-साथ खुशियां बरकरार रखना सिखाता हूं। सहज संन्यास की परिकल्पना है कि स्वर्ग कोई ऐसी जगह नहीं है जहां हम 'जाएं', बल्कि स्वर्ग तो हमारे भीतर ही है, हमें बस इसका दरवाजा खोलना है। स्पिरिचुअल हीलिंग खुशियों भरे इस स्वर्ग का दरवाजा खोल देती है। स्पिरिचुअल हीलिंग कोई जादू-टोना नहीं है, कोई अंधविश्वास नहीं है, बल्कि एक प्रभावी टूल है जो हमारे दिल, दिमाग और आत्मा से कूड़ा चुनकर उसे निर्मल बना देती है। स्पिरिचुअल हीलिंग की सबसे बड़ी खूबी यह है कि स्पिरिचुअल हीलर को आपकी उंगली भी छूने की आवश्यकता नहीं है और यह ऑनलाइन भी हो सकती है। मैं मीडिया घरानों का शुक्रगुजार हूं कि उनकी सीख के कारण परमात्मा ने मुझ पर कृपा की और स्पिरिचुअल हीलर बनकर समाज सेवा करने के काबिल हो सका। जीवन की यह समझ मुझे 'दिव्य हिमाचल' सरीखे मीडिया घरानों ने दी है। 'दिव्य हिमाचल' का शुक्रिया,

संपादक की कलम से

कांग्रेस खुद पर अफसोस करे

कांग्रेस खुद पर अफसोस या गुस्सा करे, अहंकार की दौलत में बिक रहा जमाना। जाहिर है हिमाचल से राज्यसभा की यात्रा ने एक सरकार के वजूद को छील दिया और इस छिछालेदर में सारी खुन्नस निकल गई। राजनीति अपनी बस्ती नहीं चुन सकती, तो अपनी ही अस्थि उठानी पड़ेगी, वरना भाजपा के कुल 25 विधायकों के सामने कांग्रेस के चालीस इतने सक्षम थे कि अभिषेक मनु सिंघवी यहां से राज्यसभा का तिलक लगाकर लौटते, मगर लुटिया डूबी जहां आशाएं तैर रही थीं। इस गिनती पर कौन भरोसा करे जिसने भाजपा के हर्ष में अपनी तौहीन कबूल की। आश्चर्य यह कि जिस अकड़ से सत्ता चल रही थी, उसकी हड्डी पसली एक कर दी, लेकिन आत्मबोध का आचरण खुद को साबित नहीं कर सका। सुलगती सूलियों को तिनके समझकर, कांग्रेस ने अपने ही हाथों को जलाया इस कद्र। ऐसे में भाजपा का जीतना जनादेश की गवाही नहीं, लेकिन कांग्रेस का हारना जगहंसाई जरूर है। कौन सा शिखर और कौनसी तोपें थीं इस दुर्ग की, कयामत घर से निकली और सारे गुरूर को जला गई। ऐसे में गलत कौन? जनता जिसने कांग्रेस को सत्ता सौंपी या व जो बागी हो गए। क्यों न इस सल्तनत को दोषी मानें जो हिमाचल में निरंकुश और दिल्ली में अंधी थी। कब कांग्रेस अपनी हैसियत से 'आलाकमान' की हेकड़ी से बाहर नेतृत्व का कौशल दिखा पाएगी। यहां वह नेतृत्व भी हारा जिसने हिमाचल में सुक्खू सरकार का मौजूदा आकार बनाया और वह सत्ता भी हारी जिसने यारों का सहारा बनाया। एक एक करके गिनेंगे तो कितने कैबिनेट रैंक बिखर गए और बिखरा वह असंतुलन जो हिमाचल में कांग्रेस को संगठित नहीं कर पाया। आश्चर्य यह कि मुख्यमंत्री के गृह जिला से तीन विधायकों ने बगावत की, तो अपनी ही पार्टी को हराने में सुधीर शर्मा व राजिंद्र राणा ने शहादत दी। एक आसान सी जीत में अगर सुक्खू सरकार फिसल गई, तो सरकार के असंतुलन ही खा गए सरकार को। 'चादर फट गई पांव में नाखून बढ़े थे, शहनशाह की किस्ती में छेद बड़े थे।' अब एक बदसूरत तस्वीर में कांग्रेस का तामझाम और दिल्ली का दरबार खुद को होश में लाने के लिए प्रयासरत है। चोट खाने के बाद दिल का हाल पूछा जा रहा है, अपनी नब्ज को दूसरे हाथ में देकर मापा जा रहा है। यानी छह विधायक छंट गए, विक्रमादित्य सिंह ने मंत्री पद छोड़ दिया और कितने सबूत चाहिएं कि आग किस कद्र लगी है। कांग्रेस को खुद पर भरोसा कब होगा। हिमाचल में सरकार का गठन जिस तरह हुआ, उसमें नालायकी, अहंकार, टकराव और उपेक्षा थी। फैसलों की फेहरिस्त में अपने ही विधायकों के अपमान अगर जुड़ रहे थे, तो कहीं बंदूक के साये सत्ता को अपने नशे की हिफाजत की चिंता थी। पहले मंत्रिमंडल के आकार में और फिर इसके प्रकार में कान ही तो पकड़े गए। जिस कांगड़ा ने दस विधायक दिए, उसका सबसे क्षमतावान चेहरा इतना मजबूर किया कि वह आज सरकार के विरुद्ध तलवार बन गया। मंत्रियों को मजदूर और गैर विधायकों को अंगूर खिलाकर आत्मसंतुष्टि तो हो सकती है, लेकिन सरकारें यूं नहीं चलतीं। आश्चर्य यह कि सरकार के बीच खड़े राजिंद्र राणा, सुधीर शर्मा व तमाम विक्षुब्ध विधायकों की न कोई सुन रहा था और न ही सुनना चाहता था। बहरहाल कांग्रेस 'आलाकमान' को इतना होश तो आया कि पर्यवेक्षक शिमला की गलियों में अपनी ही सरकार को ढूंढ रहे हैं। जनता ने तश्तरी पर सौंपी थी जो सत्ता, आज उसकी लाज बचाने के लाले पड़े हैं। इस दृश्य में भाजपा थी ही नहीं, लेकिन उसे अगर सियासी धाम परोसी गई, तो कांग्रेस को अब जनता क्यों अपना नसीब सौंपे। जिन्हें इंतकाम लेना था, ले लिया। जिन्होंने अहंकार में चूर होकर जितनी सरकार चलानी थी, चला ली, लेकिन बहुत कुछ खोना पड़ा हिमाचल को। पहली बार अस्थिरता के दामन में हिमाचल का लोकतांत्रिक विश्वास चकनाचूर हो रहा है। यह वह प्रदेश है जो तीसरी शक्ति को हमेशा पटकनी देता रहा ताकि कांग्रेस बनाम भाजपा के बीच सियासी तासीर सुदृढ़ हो, लेकिन यहां तो यह भ्रम भी टूट गया।

इंतजार, अभी और इंतजार

चुनाव करीब हैं और नेता जी अपने शासनकाल की सफलता का लेखा-जोखा करने चले हैं। पिछली बार जब चुनाव जीते थे, उन्होंने वायदों के लाल गालीचे बिछा दिए थे। कहा था, वायदे का पक्का हूं, अपने शासनकाल में एक भी आदमी भूख से मरने नहीं दूंगा। एक भी बेकार को नौकरी के लिए छटपटाने नहीं दूंगा। लोगों के दफ्तरी काम चौबीस घंटे में करवा देने का वायदा तो पुरानी बात है, अब नई बात यह कि सरकारी कारिंदा आपके घर से आपके काम की गुजारिश नहीं, आप से काम का हुक्म लेकर जाएगा, और काम पूरा करने की सूचना सरकारी हस्ताक्षर सहित आपके घर पहुंचा कर दम लेगा। यह वायदा केवल एक सूबे से नहीं मिला था, जहां-जहां जिस सूबे में नए चुनाव की दुदुंभि बजी, वहां-वहां बेचारे लोगों (जो अब चुनाव के करीब जनता जनार्दन कहलाए जा रहे थे) ने पाया कि लगभग हर चुनाव में उतरे सूबे के गद्दीधारकों ने कम-ज्यादा ऐसे ही वचन देकर पिछली चुनावी महाभारत जीती थी। अब फिर जीतना चाहते थे। ऐसा होता है, सदा ही ऐसे होता है। वायदों की अधूरी इमारत को अधर में लटका नई इमारत की नींव रख दी जाती है। वोट पड़ गए तो अधूरी इमारतें अपनी कहानी सुनाने के लिए श्रोता भी तलाश नहीं कर पाती। आधी छोड़ पूरी की ओर भागे, दुविधा में दोनों गए, न माया मिली न राम। नहीं, यहां यह बात फिट नहीं बैठेगी। यहां तो अधूरी इमारतों, अधूरे वचनों की बारात सजी है। मतदाता को दूल्हा बनने का अवसर मिलता है, सिर्फ मतदान दिवस पर। उसके बाद तो वह पांच बरस अपनी खो गई बारात, या शुरू हो गई बैंड, बाजा और बारात ही तलाशता रहता है। लेकिन जिन्होंने वायदा किया था, उन्होंने पूरी वायदाखिलाफी की हो, ऐसा अंधेर भी नहीं है। जगह-जगह आपको खुदी हुई सडक़ें, अधूरे बने पुल आज भी अपनी अपूर्णता का रोना रोते नजर आते हैं। जैसे कहते हों, देखो वचन देने वालों की नीयत में खोट नहीं था। अब बीच में सौदा पटाने वाला दलाल या ठेकेदार ही छूमंतर हो गया। उसे घर से मना कर लाने से तो रहे। क्या करें, कभी मालिक की नीयत में खोट हो गया, कभी कामगार ने मुंह फेर लिया। पास करने वाले अफसर की नाक के नीचे हमारी पेश की गई डाली नहीं आई, तब काम तो रुकना ही रुकना था। फिर अभी अगले चुनाव भी तो कोसों दूर थे, बस नेताओं को इस परिवार पोषण का मर्ज और जनता के प्रति स्मृति भ्रम का रोग हो गया। जनता गुम हो गई इसी भूलभलैया में। सदियों के रोग हैं, दशकों में थोड़ा निबट जाते। यहां बालाई आमदनी की गौरवशाली परम्परा है, हर बरस उसकी श्रीवृद्धि हो रही है। फिर इस बीच अधूरे पुल कैसे पूरे हो जाते, खुदी हुई सडक़ें कैसे भर जातीं? इस देश के लोगों में भी असीम धीरज है भय्या।

बस इन्हीं खुदी हुई सडक़ों और अधूरे पुलों से ही काम चला लेते हैं। शुक्र करो कम से कम यहां इनके निशां तो नजर आ जाते हैं, जो बता देते हैं कि वायदा करने वालों की नीयत इनती बुरी न थी। वरना यहां तो चलन रहा है कि कागजों में ही उनके निशान गुम हो जाते हैं। अब लेना-देना, जमा खाता सब चुकता हो गया। गरीब देश और भी गरीब हो गया, इसकी क्या हैरानी? हां कुछ नेता किस्म के लोग अवश्य फटीचर साइकिल से उडऩ खटोला हो गए। अब अट्टालिकाओं के परिसर में गाडियां खड़ी करने नहीं, हैलीकाप्टर खड़े करने का ठेका दिया जा रहा है। जनता असीम धीरज के साथ पुराने वायदों की अपूर्णता को भूल नए वायदों का लाल गालीचा बिछाने का इंतजार करती हैं। उनके जीर्णोद्धार आज के नेपथ्य में वही जाना-पहचाना संगीत बजता रहता है, 'इंतजार, और अभी और अभी।'

सुरेश सेठ

राय

खत्म करें संसदीय विशेषाधिकार

सर्वोच्च अदालत की संविधान पीठ ने संविधान पीठ का ही फैसला बदल दिया। फर्क इतना था कि 1998 की पीठ पांच न्यायाधीशों की थी, जिसने 'नरसिम्हा राव बनाम सीबीआई' मामला सुना था और 3-2 न्यायाधीशों के बहुमत से फैसला सुनाया था। अब संविधान पीठ सात न्यायाधीशों की है। मुद्दा संविधान के अनुच्छेद 105 (2) और 194 (2) के तहत सांसदों और विधायकों के, सदन के भीतर, विशेषाधिकार का है। पहला केस झामुमो सांसदों को दी गई घूस का था, जिसके एवज में उन्होंने तत्कालीन नरसिम्हा राव सरकार के समर्थन में वोट दिए थे। वह अल्पमत सरकार थी और बहुमत के लिए कई सांसदों को 'खरीदा' गया था। विशेषाधिकार यह रहा है कि सांसद और विधायक सदन में अपना वोट बेच सकते थे। संविधान पीठ ने भी इसे 'माननीयों' का विशेषाधिकार करार दिया था। ऐसी घूस के लिए उनके खिलाफ आपराधिक मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था। यदि 'माननीय' रिश्वत लेकर, रिश्वत देने वाले पक्ष के बजाय, किसी और को वोट देता है, तो उसके खिलाफ मुकदमा चलाया जा सकता था। नरसिम्हा राव सरकार के संदर्भ में संविधान पीठ का फैसला था कि न्यायपालिका विधायिका के सदन की कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं कर सकती, तो देश को निराशा हुई थी, क्योंकि विशेषाधिकार निरंकुश था। सांसद और विधायक सदन के भीतर कुछ भी बोल सकते थे, कोई भी सवाल पूछ सकते थे, भाषणों की भाषायी मर्यादा लांघ सकते थे, झूठ बोल कर गलत तथ्य पेश कर सकते थे, किसी की छवि बिगाड़ सकते थे, लेकिन वे दंडनीय नहीं थे।

स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने 11 सांसदों की सदस्यता बर्खास्त कर दी थी, क्योंकि उन्होंने सदन में सवाल पूछे थे, लेकिन प्रायोजित सवाल पूछने के लिए घूस सदन के बाहर ली थी। बहरहाल अब सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ के सर्वसम्मत फैसले ने न केवल पुराना फैसला अप्रभावी और अप्रासंगिक बना दिया है, बल्कि सांसदों और विधायकों के विशेषाधिकार की परिभाषा ही बदल दी है। यह फैसला 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है, क्योंकि यह संसदीय लोकतंत्र को अपेक्षाकृत ईमानदार, स्वच्छ, शुचितापूर्ण और जिम्मेदार बना सकता है। 'माननीयों' की भेड़-बकरी की तरह खरीद-फरोख्त थम सकती है। सात न्यायाधीशों के फैसले के बाद अब घूस लेकर वोट देना, पैसे लेकर सवाल पूछना अथवा विशेष तरह से भाषण देना, सदन में किसी पर, कुछ भी आरोप लगाते हुए बोलना संसदीय विशेषाधिकार नहीं होगा। संविधान पीठ ने अनुच्छेद 105 (2) और 194 (2) की नई व्याख्या कर दी है। यह उसका संवैधानिक विशेषाधिकार भी है। अब दायित्व संसद पर है कि वह ऐसे संसदीय विशेषाधिकार को ही खत्म करे। संविधान में संशोधन करना संसद का विशेषाधिकार है। दरअसल हमारे सांसदों और विधायकों के विशेषाधिकार विदेशी नकल की देन हैं। ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' (संसद का निचला सदन) के विशेषाधिकारों की तर्ज पर भारतीय संविधान में भी यह व्यवस्था की गई थी। यह भारतीय संस्कृति की मूल भावना का ही उल्लंघन माना जाना चाहिए, क्योंकि हमारी संस्कृति में 'राजा' को कानून से ऊपर नहीं माना जाता। वह भी दंडनीय है, लेकिन ब्रिटेन में मानते हैं कि राजा कोई गलती ही नहीं कर सकता। अब भारतीय संस्कृति का अनुसरण करते हुए हमारी संसद को भी संसदीय विशेषाधिकारों से जुड़े अनुच्छेदों में पर्याप्त संशोधन करने चाहिए। विशेषाधिकार को तो बिल्कुल ही समाप्त कर देना चाहिए। संसद में 'माननीय' जनता के प्रतिनिधि हैं और एक निश्चित पार्टी के चुनाव चिह्न पर जीत कर संसद में पहुंचे हैं। उन्हें जनता और पार्टी के प्रति निष्ठा बनाए रखनी चाहिए। दलबदल और क्रॉस वोटिंग के मामले हम देखते रहे हैं।

गहन विचार

'मोदी का परिवार' अभियान विपक्षी दलों के लिये

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री मोदी ने परिवार ना होने को लेकर विपक्ष के हमले पर पलटवार करते हुए पूरे भारत को अपना परिवार करार दिया और अपने जीवन को एक खुली किताब बताते हुए कहा कि लोगों की सेवा करने के सपने के साथ उन्होंने कम उम्र में ही घर छोड़ दिया था।

बिहार की राजधानी पटना में आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव के बयान कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पास परिवार ही नहीं है। वो हिंदू नहीं हैं। हिंदू अपनी मां के श्राद्ध में दाढ़ी-बाल बनवाता है। मोदी की माताजी का जब देहांत हुआ तो उन्होंने बाल-दाढ़ी क्यों नहीं बनवाया? इस तरह के बेतुके, आधारहीन एवं अमर्यादित बयान के विरोध में पूरी भारतीय जनता पार्टी उतर आई है। अब भाजपा और विपक्षी दलों के बीच 'परिवारवाद' के मुद्दे पर वार-पलटवार जारी है। मोदी के परिवार एवं विपक्षी दलों के परिवारवाद को लेकर बड़ी बहस चल रही है लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में भी भाजपा को विपक्ष के एक आरोप 'चौकीदार चोर है' का भारी लाभ मिला था, तब भाजपा ने 'मैं भी चौकीदार' अभियान चलाया था। उसी तरह वर्ष 2024 के आम चुनाव से पूर्व 'मोदी का परिवार' अभियान शुरू कर दिया है, जिसका भाजपा को भरपूर लाभ मिल सकता है, विपक्षी दलों की इस भूल के कारण भाजपा न केवल 370 सीटों के लक्ष्य को हासिल करेगी, बल्कि उनका गठबंधन 400 से पार जायेगा। निश्चित ही चुनाव का समय बहुत संवेदनशील होता है, जिसमें विवादित एवं व्यक्तिगत बयानों से बचना जरूरी होता है। विशेषतः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता और उनकी चुनावी रणनीति से भड़के कांग्रेस के नेता राहुल गांधी, आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव एवं विपक्षी दलों के नेता अपनी जुबान संभाल नहीं पा रहे। जैसे-जैसे मोदी एवं भाजपा का चुनावी अभियान तीक्ष्ण, उग्रएवं नियोजित होता जा रहा है, वैसे-वैसे उनके प्रति विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं की बौखलाहट बढ़ती जा रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने परिवार ना होने को लेकर विपक्ष के हमले पर पलटवार करते हुए पूरे भारत को अपना परिवार करार दिया और अपने जीवन को एक खुली किताब बताते हुए कहा कि लोगों की सेवा करने के सपने के साथ उन्होंने कम उम्र में ही घर छोड़ दिया था। लगता है मोदी के परिवारवादी राजनीति के बयानों का विपक्ष के पास कोई प्रभावी जवाब नहीं है, तभी ऐसे बचकाने बयानों से दूषित राजनीति करने से विपक्षी दल स्वयं को बचा नहीं पा रहे हैं, दूसरी ओर मोदी ने ऐसे राजनेताओं एवं राजनीतिक दलों पर हमला बोलते हुए कहा कि विपक्षी नेताओं एवं दलों के अलग-अलग चेहरे हो सकते हैं, लेकिन झूठ और लूट का उनका चरित्र समान है। प्रधानमंत्री मोदी ने लालू के आरोप पर पलटवार करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण में आकंठ डूबे इंडी गठबंधन के नेता बौखलाते जा रहे हैं। मोदी निश्चित रूप से एक बड़े 140 करोड़ लोगों के परिवार से जुड़े हुए हैं। देश की जनता के सामने मोदी का जीवन खुली किताब जैसा है। देशवासी मोदी को भली-भांति जानते हैं, समझते हैं। उनकी पल-पल की खबर रखते हैं। देर रात तक अगर मोदी काम करते है तो देश से लाखों लोग उन्हें इतना काम नहीं करने एवं कुछ आराम करने की सलाह देते हैं, यह प्यार है मोदी परिवार का उनके प्रति। निश्चित ही मोदी ने एक सपना लेकर बचपन में घर छोड़ा था। वे देशवासियों के लिये जीने का एक सपना लेकर चले थे। मोदी का कोई निजी सपना नहीं है, देश एवं देशवासियों के सपने ही उनके संकल्प हैं। इसलिए देश के 140 करोड़ लोग ही उनका परिवार हैं, जिसमें युवा, बेटियां, बुजुर्ग सभी हैं। जिनका कोई नहीं है, उनके मोदी हैं। मेरा भारत मेरा परिवार, इसी भावना का विस्तार लेकर वे सपनों को सच के साथ सिद्ध करने के लिए जी रहे हैं। पूरा देश मोदी का परिवार है।

भाजपा के बड़े नेताओं ने सोशल मीडिया एक्स पर अपने नाम के आगे 'मोदी का परिवार' लिखने का एक महा-अभियान शुरु कर दिया है, जो विपक्षी दलों के लिये भारी पड़ने वाला है। चुनाव के माहौल में विपक्षियों के बयान को भाजपा ऐसा मुद्दा बना लेती है, जिससे खुद विपक्षी नेता घिरते नजर आते हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में रफाल की डील को लेकर जब राहुल गांधी ने 'चौकीदार चोर है' कहा तो भाजपा ने 'मैं भी चौकीदार' की ऐसी मुहिम चलाई कि वह विपक्ष पर ही भारी पड़ी। लालू के बयान के बाद अब 'मोदी का परिवार' मुहिम को भाजपा उसी तरह फोकस कर रही है। भाजपा नेताओं के मुताबिक, यह पूरी मुहिम चुनाव प्रचार के दौरान भी दिखाई देगी। यह अभियान चुनाव तक जारी रहेगा। भाजपा कांग्रेस सहित विपक्षी गठबंधन पर परिवारवाद को लेकर निशाना साधती रही है। हाल ही में हुए भाजपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में भी गृहमंत्री अमित शाह ने परिवारवाद को लेकर विपक्ष पर खूब तंज कसा था। लोकसभा के आखिरी सत्र में प्रधानमंत्री मोदी ने परिवारवाद क्या है, इसकी पूरी परिभाषा ही दे डाली थी। अब जब लालू यादव का मोदी को लेकर बयान आया तो भाजपा परिवारवाद पर और उग्र हुई है।

नरेन्द्र मोदी के दर्शन, उनकी व्यापक सोच, उनके विकासमूलक कार्यक्रमों, उनके व्यक्तित्व, उनकी बढ़ती ख्याति व उनकी कार्य-पद्धतियां पर विपक्षी दल एवं उनके नेताओं द्वारा कीचड़ उछालने की हदें पार हो रही हैं, उनके खिलाफ अमर्यादित भाषा का उपयोग हो रहा हैं, चुनावी सभाओं एवं चर्चाओं में भाषा की मर्यादा बिखर रही है, लेकिन मोदी अपने उद्बोधन में भाषा की मर्यादा को कायम रखते हुए कड़वे सच एवं यथार्थ को भी शालीनता एवं सहजता से परोस रहे हैं। विपक्ष के बेतुके बयानों एवं आरोपों से चुनावी परिदृश्य पल-पल बदलते हुए भाजपा की जीत को सहज बना रहे हैं। देखा जाये तो प्रधानमंत्री ने समूचे देश को अपना परिवार कहकर विपक्ष के बुने जाल में फंसने की बजाय उसके इरादों पर पानी फेर दिया कि ऐसे अशालीन एवं बचकाने बयानों से उन्हें हराया नहीं जा सकता। उनके इस कथन का कोई मतलब है तो यही कि विपक्ष जो कुछ कहने और सिद्ध करने की कोशिश कर रहा है, उसमें कोई दम नहीं। क्या अब भी विपक्ष मोदी को निशाना बनाने से परहेज करेगा, राहुल गांधी, लालू एवं विपक्ष अपनी ऐसी ही बेवकूफी से अपनी ही जड़ें खोद रहा है। क्योंकि मोदी को निशाना बनाने की राजनीति विपक्ष के लिये हमेशा नुकसानदायी रही है, मोदी अधिक चमके हैं, अधिक सशक्त बने हैं। इसका जवाब भी मोदी ने ही दिया कि भारतीय समाज नकारात्मकता को सहन कर लेता है, स्वीकार नहीं करता है।' आज जैसे बुद्धिमानी एक "वैल्यू" है, वैसे ही बेवकूफी भी एक "वैल्यू" है और मूल्यहीनता के दौर में यह मूल्य काफी प्रचलित है। लेकिन आज के माहौल में इस "वैल्यू" को फायदेमंद मानना राजनीति की एक अपरिपक्वता एवं नासमझी ही कही जायेगी। कांग्रेसी नेताओं एवं अन्य दलों के नेताओं की फिसली जुबान से भाजपा को संजीवनी ही मिल रही है।

मोदी का जहां तक संबंध है, विपक्ष के आरोपों को उन्होंने हमेशा बहुत गंभीरता से लिया है, उनके आहत मन को उनकी चुटकियों और उक्तियों में समझा जा सकता है। अपशब्दों और आरोपों से वह आहत हैं और उन्होंने यह भी छिपाया नहीं। उन्होंने अपनी ओर से भी शालीनता से सुनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। विपक्ष परिवार एवं परिवारवादी राजनीति के शोर के साथ विरोध में जुट रहा है, मोदी देश की असंख्य जनता के दिलों में जगह बनाने में कामयाब हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने विपक्ष की ओर इशारा करते हुए कहा कि 'ये लोग तो अपने और अपने लोगों के लिए जी रहे हैं, लेकिन मोदी देश के 25 करोड़ परिवारों का सदस्य है। मेरे लिए 25 करोड़ परिवार ही सुरक्षा कवच हैं, जिसे आप इन शस्त्रों से कभी भेद नहीं सकते।' यह एक तरह से विपक्ष की ओर इशारा भी है कि हमले की उसकी तैयारी मुकम्मल नहीं है, निस्तेज एवं आधारहीन आरोपों की विपक्षी संस्कृति उसके लिये ही नुकसान का कारण बनती रही है। प्रधानमंत्री के जवाब ने बता दिया कि मजबूत सत्ता पक्ष के सामने बिखरे हुए विपक्ष की मंजिल अभी दूर है।

टैक्स बेनिफिट के लिए इन सरकारी स्कीम में करें निवेश, चेक करें लिस्ट

अगर आप भी टैक्स बचाने का प्लान कर रहे हैं तो आज हम आपको सरकार द्वारा शुरू की गई स्कीमों के बारे में बताएंगे जिसमें आपको टैक्स बेनिफिट का लाभ मिलता है। इसका मतलब है कि आप अपने रिटर्न के साथ कर छूट का भी लाभ उठा सकते हो। इन स्कीम में आपको रिटर्न के साथ आप टैक्स डिडक्शन के लिए भी क्लेम कर सकते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्र सरकार (Central Government) कई तरह की स्कीम चला रही है। इन स्कीम में लाभार्थी को मुनाफा के साथ टैक्स सेविंग (Tax Saving) का फायदा भी मिलता है।

अगर आप भी टैक्स सेविंग को लेकर प्लान बना रहे हैं तो आज हम आपको कुछ सरकारी योजनाओं के बारे में बताएंगे जिससे आप आसानी से टैक्स छूट का लाभ उठा सकते हैं।

पीपीएफ

पब्लिक प्रोविडेंट फंड (PPF) एक स्मॉल सेविंग स्कीम है। इसमें इनकम टैक्स एक्ट (Income Tax Act) के सेक्शन 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक का टैक्स बेनिफिट मिलता है। आप पीपीएफ में 1 साल में अधिकतम 1.5 लाख रुपये तक का निवेश कर सकते हैं। वहीं न्यूनतम आपको 500 रुपये का निवेश करना होता है।

इसमें आपको 15 साल तक निवेश करना होता है। जिस पर निवेशक को 7.1 फीसदी का ब्याज मिलता है।

सुकन्या समृद्धि योजना

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के तहत भारत सरकार ने सुकन्या समृद्धि योजना (Sukanya Samriddhi Yojana) शुरू की है। इस योजना में आप बेटी की पढ़ाई और शादी के लिए निवेश कर सकते हैं। इसमें आपको हर साल न्यूनतम 250 रुपये और अधिकतम 1.5 लाख रुपये का निवेश करना होता है।

अगर निवेश नहीं किया जाता है तो अकाउंट फ्रीज हो जाएगा। इस योजना में 8 फीसदी इंटरेस्ट मिलता है। सरकार इसमें गारंटी रिटर्न के साथ टैक्स बेनिफिट भी देती है। इस स्कीम में भी आयकर अधिनियम के 80 सी धारा के तहत 1.5 लाख रुपये तक का टैक्स बचा सकते हैं।

कर्मचारी भविष्य निधि

कर्मचारी भविष्य निधि (EPFO) में रिटायरमेंट के बाद भी इनकम जारी रखने के लिए कई कर्मचारी निवेश करते हैं। इस स्कीम में कर्मचारी के साथ कंपनी द्वारा एक फिक्स्ड अमाउंट इन्वेस्ट किया जाता है। निवेश की गई राशि पर सरकार ब्याज भी देती है।

यह स्कीम भी टैक्स सेविंग स्कीम के अंदर शामिल होती है। इस योजना में भी आप इनकम टैक्स 80 सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक का कर छूट का लाभ उठा सकते हैं।

नेशनल सेविंग स्कीम

नेशनल सेविंग स्कीम (National Saving Scheme) में भी टैक्स सेविंग का लाभ मिलता है। इस स्कीम में निवेश राशि पर 7.70 फीसदी का ब्याज दिया जाता है। आप इस स्कीम में 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक का टैक्स छूट का लाभ उठा सकते हैं।

इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम्स

म्यूचुअल फंड की इक्विटी लिंक्ड सेविंग्स स्कीम्स (ELSS) भी टैक्स सेविंग के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। इसमें निवेशक को 80सी के तहत 1.50 लाख रुपये तक का टैक्स बेनिफिट मिलता है।

सुकन्या अकाउंट को रखना है एक्टिव, 31 मार्च से पहले करें ये काम

भारत सरकार ने बेटियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुकन्या समृद्धि योजना (Sukanya Samriddhi Yojana) शुरू की है। इस योजना में आप अपनी बेटी की पढ़ाई या शादी के लिए निवेश कर सकते हैं। अगर आप इस योजना में निवेश कर रहे हैं तो आपको सुकन्या अकाउंट (Sukanya Acount) को एक्टिव रखने के लिए 31 मार्च से पहले उसमें मिनिमम अमाउंट डिपॉजिट करना होगा।

नई दिल्ली। हर महीने वित्तीय नियमों में बदलाव होता है। वहीं एक वित्त वर्ष में हमें कुछ काम को जरूर करना होता है। ऐसे में आज हम बताएंगे कि सुकन्या योजना के लाभार्थी को इस महीने कौन-सा काम जरूर करना है।

भारत सरकार द्वारा शुरू की गई सुकन्या समृद्धि योजना (Sukanya Samriddhi Yojana) में निवेशक को एक साल में मिनिमम अमाउंट जमा करना जरूरी है। अगर वह ऐसा नहीं करते हैं तो उनका अकाउंट फ्रीज हो सकता है। चालू वित्त वर्ष 2023-24 का आखिरी महीना शुरू हो चुका है। ऐसे में 31 मार्च से पहले निवेशक को सुकन्या अकाउंट (Sukanya Account) में मिनिमम अमाउंट डिपॉजिट करना होगा।

अगर निवेशक ऐसा नहीं करता है तो अकाउंट फ्रीज के साथ उसे योजना के बाकी बेनिफिट भी नहीं मिलेगा।

कितना है मिनिमम अमाउंट

सुकन्या योजना एक स्मॉल सेविंग स्कीम (Small Saving Scheme) है। इसमें आप अपनी बेटी की पढ़ाई और उसकी शादी के लिए निवेश कर सकते हैं। इस योजना में सरकार 8.2 फीसदी का ब्याज देती है।

सुकन्या अकाउंट को एक्टिव रखने के लिए निवेशक को एक वित्त वर्ष में कम से कम 250 रुपये जा करना होता है। बता दें कि इस अकाउंट में 1 साल में 1.5 लाख रुपये तक का ही निवेश कर सकते हैं। अगर आपने भी पिछले एक साल में सुकन्या अकाउंट में निवेश नहीं किया है तो आपको 31 मार्च से पहले अकाउंट में पैसे जमा करना होगा।

आखिर क्यों महंगा हो रहा है सोना? करीब एक हफ्ते से लगातार बढ़ रहे हैं दाम

सोना निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। युद्ध के समय निवेशक सोना में निवेश करना पसंद करते हैं। दरअसल यह एक सिक्योर इन्वेस्टमेंट का ऑप्शन है। अगर इस हफ्ते की बात करें तो इस हफ्ते लगातार सोने की कीमत में इजाफा देखने को मिल रहा है। ऐसे में कई लोगों के मन में सवाल है कि आखिर किस वजह से सोने की कीमतों में इजाफा हो रहा है।

नई दिल्ली। सोना-चांदी निवेश के लिए काफी सिक्योर ऑप्शन है। भारत में शादी हो या फिर दिवाली जैसे शुभ अवसर पर गोल्ड खरीदना शुभ माना जाता है। ऐसे में अधिकतर भारतीय सोने में निवेश करते हैं।

वैश्विक स्तर पर भी जब भी युद्ध की स्थिति होती है तो निवेशक गोल्ड में निवेश करना पसंद करते हैं। दरअसल, गोल्ड काफी सिक्योर ऑप्शन होता है। इस हफ्ते सोने की कीमतों में शानदार तेजी देखने को मिली है। पिछले कुछ दिनों से सोने की कीमतों में तेजी देखने को मिली है। बीते दिन बुधवार को गोल्ड रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। अमेरिका में फेड चेयरमैन जेरोम पॉवेल ने संकेत दिये हैं कि इस साल के अंत में फेड दर में कटौती हो सकती है। इस संकेत के बाद जहां एक तरफ डॉलर में गिरावट देखने को मिली है तो दूसरी तरफ सोने को अतिरिक्त प्रोत्साहन मिला।

अमेरिकी सोना वायदा 0.8% बढ़कर 2,158.2 डॉलर पर बंद हुआ। चांदी 1.9% बढ़कर 24.15 डॉलर पर पहुंच गई।

रॉयटर्स एजेंसी के अनुसार न्यूयॉर्क स्थित मेटल ट्रेडर ताई वोंग ने कहा कि

सोने में तेजी की संभावना है क्योंकि तेजी की भावना हावी बनी हुई है। हालांकि, बुलियन को पॉवेल की समग्र टिप्पणियों को समझने और शुक्रवार की रोजगार रिपोर्ट देखने में थोड़ा समय लग सकता है। बता दें कि जब उच्च अमेरिकी ब्याज दरें बांड जैसी प्रतिस्पर्धी परिसंपत्तियों पर रिटर्न बढ़ाती हैं और डॉलर को बढ़ावा देती हैं, तो सोने को नुकसान होता है, जिससे विदेशी खरीदारों के लिए सराफा महंगा हो जाता है।

दिल्ली-एनसीआर वालों के लिए गुड न्यूज, कम हुए सीएनजी के दाम, चेक करें लेटेस्ट रेट

आज से दिल्ली में सीएनजी की नई कीमते जारी हो गई है। बता दें कि इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (IGL) ने सीएनजी की कीमतों में 2.5 रुपये की कटौती की है। मंगलावर को संचालित महानगर गैस (MGL) ने सीएनजी की कीमतों में कटौती की थी। चलिए जानते हैं कि सीएनजी (Compressed Natural Gas) की नई कीमत क्या है?

नई दिल्ली। CNG Price 7 March 2024: मई 2022 से पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई राष्ट्रीय स्तर पर कोई बदलाव नहीं हुआ है। हालांकि, सीएनजी की कीमतों को लेकर अपडेट आया है।

इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (IGL) ने सीएनजी की कीमतों में कटौती की है।

राजधानी दिल्ली और एनसीआर में सीएनजी की कीमतों में 2.5 रुपये की कटौती हुई है। वर्तमान में दिल्ली में सीएनजी की कीमत 74.09 रुपये हो गई है। यह नई कीमतें आज सुबह से लागू हो गई है।

राज्य संचालित महानगर गैस (MGL) ने मंगलवार को सीएनजी (CNG Price) की कीमतों में 2.5 रुपये की कटौती की है।

सीएनजी की कीमत में क्यों आई गिरावट

आईजीएल ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि 7 मार्च 2024 (गुरुवार) को सुबह 6 बजे आईजीएल के सभी क्षेत्रों में सीएनजी की कीमतों में 2.5 रुपये प्रतिकिलोग्राम की कटौती हुई है। दिल्ली में सीएनजी की कीमत 74.09 रुपये प्रतिकिलोग्राम है। वहीं, नोएडा, ग्रेटर नोएडा में यह 78.70 रुपये प्रति किलोग्राम होगी।

सीएनजी के लेटेस्ट रेट

राजधानी दिल्ली में सीएनजी की कीमत 74.09 रुपए प्रति किलोग्राम है।

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में पेट्रोल की कीमत 106.31 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 94.27 रुपये प्रति लीटर है।

नोएडा में सीएनजी की कीमत 78.70 रुपये प्रति किलोग्राम है।

ग्रेटर नोएडा में सीएनजी की कीमत 78.70 रुपये प्रति किलोग्राम है।

गाजियाबाद में सीएनजी की कीमत 78.70 रुपये प्रति किलोग्राम है।

गुरुग्राम में सीएनजी की कीमत 82.12 रुपये प्रति किलोग्राम है।

यह भी पढ़ें- सिक्योर्ड लोन से कितना अलग है अन सिक्योर्ड पर्सनल लोन, यहां जानें पूरी डिटेल

पेट्रोल-डीजल के रेट

मई 2022 से राष्ट्रीय स्तर पर पेट्रोल-डीजल की कीमतों में राष्ट्रीय स्तर पर कोई बदलाव नहीं हुआ है। रोजाना सुबह 6 बजे सरकारी तेल कंपनियां पेट्रोल-डीजल की कीमतों को अपडेट करते हैं।

आज भी राष्ट्रीय स्तर पर इनकी नई कीमत जारी हो गई है। हालांकि, आज भी इनकी कीमत स्थिर बने हुए हैं।

बिटकॉइन बना रहा नए रिकॉर्ड, क्या आपको भी करना चाहिए निवेश?

क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन का जादू कई निवेशकों के सर पर चढ़ कर बोल रहा है। हाल की रिपोर्ट में बिटकॉइन ने नया रिकॉर्ड स्तर बनाया है। बता दें कि इस हफ्ते एक बिटकॉइन (Bitcoin Price) 69202 डॉलर (57.4 लाख रुपये) के पार पहुंच गया है। ऐसे में कई निवेशक इसमें निवेश का सोच रहे हैं। चलिए जानते हैं कि आपको किस वजह से इसमें निवेश नहीं करना चाहिए।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अमेरिका, यूरोप और चीन की तरह भारत में भी पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी (Cryptocurrency) में निवेश को लेकर लोगों में क्रेज बढ़ा है। हालांकि पिछले डेढ़ साल से क्रिप्टो बाजार एक तरह से फ्लैट ही चल रहा था, लेकिन पिछले एक हफ्ते से इसमें तेजी दर्ज की जा रही है।

बाजार की सबसे बड़ी क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन (Bitcoin) में भी जबरदस्त तेजी देखी जा रही है। पिछले एक साल की बात करें तो यह करीब तीन गुना तक बढ़ चुकी है। ऐसे में कई निवेशक इसकी तरफ आकर्षित भी हो रहे होंगे। लेकिन क्या बिटकॉइन में निवेश फायदे का सौदा है, या निवेशकों को इससे बचना चाहिए?

इस हफ्ते बिटकॉइन (Bitcoin Price) 69,202 डॉलर (57.4 लाख रुपये) के पार पहुंच गया। यह ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गया। अगर इसमें आई तेजी की बात करें तो पिछले 1 साल में बिटकॉइन की कीमत लगभग 3 गुना बढ़ गई है। आज हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि आपको किस वजह से इसमें निवेश नहीं करना चाहिए।

बिटकॉइन क्या है?

बिटकॉइन एक तरह का डिजिटल करेंसी है। माना जाता है कि इसकी शुरुआत वर्ष 2009 में हो गई थी। अब धीरे-धीरे यह करेंसी दुनिया में काफी निवेशकों को पसंद आने लग गई है। वर्तमान में इसकी कीमत लाखों रुपये के बराबर हो गई है तो कई निवेशक इसमें निवेश करना चाहते हैं।

बता दें कि इसकी पेमेंट क्रिप्टोग्राफी के जरिये होती है। इस वजह से इसे क्रिप्टोकरेंसी (Cryptocurrency) भी कहा जाता है।

बिटकॉइन में हो रही लेन-देन डिजिटल माध्यम में मैसेज के जरिये होती है। इसका मतलब है कि यह शेयर बाजार में हो रही ट्रेडिंग से काफी अलग है। दरअसल, इसे केंद्रीय बैंक ने अप्रूव या औपचारिक तौर पर स्वीकार नहीं किया है। इसलिए इसका एक्सचेंज निजी तौर पर किया जाता है।

जिस प्रकार शेयर बाजार में निवेश के लिए डीमैट अकाउंट की जरूरत होती है। ठीक, इसी प्रकार बिटकॉइन में ट्रेड करने के लिए एक खास सॉफ्टवेयर की जरूरत होती है।

कितनी है बिटकॉइन की कीमत

पिछले कुछ सालों में बिटकॉइन में तेजी देखने को मिल रही है। ऐसे में इसकी कीमतों में तेजी की मुख्य वजह बिटकॉइन ईटीएफ (Bitcoin ETF) है। दरअसल बिटकॉइन ईटीएफ को मंजूरी मिल गई है, जिसके बाद से इसकी कीमतों में तेजी देखने को मिला है।

एक रिपोर्ट के अनुसार 10 नवंबर 2021 में बिटकॉइन की कीमत 68,789 डॉलर थी। वहीं जुलाई 2022 में इसकी कीमत 20,547.81 डॉलर हो गई थी। इस साल जनवरी में इसकी कीमत 42,034 डॉलर थी। केवल 5 दिन में इसकी कीमत 20 फीसदी से ज्यादा का उछाल देखने को मिला है।

बिटकॉइन में आई इस तेजी के बाद निवेशक इसमें निवेश करने का सोच रहें है। बता दें कि इसमें निवेश नहीं करना चाहिए। दरअसल, इसमें रिस्क तो है पर इस करेंसी की कोई मान्यता भी नहीं है।

क्यों नहीं करना चाहिए निवेश

भारत में बिटकॉइन को रेगुलेट नहीं किया गया है। इसका मतलब है कि इसे कोई मान्यता नहीं दी गई है। आरबीआई (Reserve Bank Of India) और सेबी (SEBI) ने क्रिप्टो को लेकर कोई नियमाक नहीं बनाया है। यहां तक कि इसको स्वीकारा भी नहीं गया है।

बिटकॉइन की ट्रेडिंग में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। अगर यह बहुत तेजी से उठता है तो बहुत तेजी से गिरता भी है। बिटकॉइन के उतार-चढ़ाव को दर्शाने वाला डेरिब्रिट डीवोल इंडेक्स (Rebrit Devol Index) 76 फीसदी चढ़ चुका है।

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने बिटकॉइन के निवेशक को कह दिया है कि अगर उनके साथ बिटकॉइन को लेकर धोखाधड़ी हो जाती है तो इसकी जिम्मेदारी उनकी खुद होगी। यानी कि इसमें आरबीआई कोई मदद नहीं करेगा।

क्रिप्टोकरेंसी की कोई तय वैल्यू नहीं होता है। अगर कुछ लोग भी क्रिप्टो से बाहर निकालने का फैसला ले लेते हैं तो इसकी वैल्यू जीरो हो जाएगी।

क्रिप्टो को लेकर कई स्कैम भी हो चुके हैं। ऐसे में इन स्कैम हो जाने के भारत सरकार आपकी कोई मदद नहीं करेगा। वर्तमान में दुनिया के कुछ देशों में ही इस वैध किया गया है।

क्या भारत में बिटकॉइन वैध है?

भारत में क्रिप्टोकरेंसी को लेकर कोई भी केंद्रीय प्रधिकरण जारी नहीं हुआ है। इसका मतलब है कि इसकों लेकर कोई विनियम नहीं बनाए गए हैं। इसका साफ मतलब है कि भारत में यह वैध करेंसी नहीं है। भले ही यह भारत में अवैध नहीं पर इसको लेकर कोई निश्चित प्रतिबंध भी नहीं है।

अगर भारत में कोई निवेशक क्रिप्टो में निवेश करता है को उसे अपने इनक में कैलकुलेटेड प्रॉफिट और लॉस रिपोर्ट देना जरूरी है।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से शुरू कर सकते हैं खुद का बिजनेस, जानें कैसे कर सकते हैं आवेदन

कई लोग जॉब छोड़कर खुद का बिजनेस शुरू करते हैं। ऐसे में सरकार भी आत्मनिर्भरता पर जोर दे रही है। इसके लिए सरकार ने पीएम मुद्रा लोन योजना (PM Mudra Yojna) शुरू की है। इस स्कीम में सरकार लाभार्थी को बिजनेस शुरू करने के लिए आर्थिक लाभ देती है। अगर आप भी बिजनेस शुरू करने का सोच रहे हैं तो जानते हैं कि आप इसके लिए कैसे अप्लाई करें।

नई दिल्ली। आज के समय में कई लोग खुद का बिजनेस शुरू करना चाहते हैं। ऐसे में सरकार भी आत्मनिर्भर और स्टार्टअप को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए भारत सरकार ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PM Mudra Yojna) शुरू की है। इस स्कीम के जरिये आप भी अपना बिजनेस शुरू करने के लिए लोन ले सकते हैं। इस स्कीम में मिलने वाले लोन का इंटरेस्ट रेट बैंकों की तुलना काफी कम होता है।

पीएम मुद्रा योजना युवाओं का खुद का बिजनेस शुरू करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है। इसका स्कीम में आसान किस्तों में लोन दिया जाता है। पीएम मुद्रा योजना में 10 लाख रुपये तक का लोन दिया जाता है।

चलिए, जानते हैं कि आप भी इस स्कीम के लिए कैसे अप्लाई कर सकते हैं।

कैसे करें आवेदन

आपको पीएम मुद्रा लोन योजना की अधिकारिक वेबसाइट पर जाना है।

इसमें आपको मुद्रा लोन के ऑप्शन को सेलेक्ट करना है।

अब आप अप्लाई पर क्लिक करें।

इसके बाद आपको रजिस्ट्रेशन पर जाकर सभी जरूरी जानकारी भरना है और ओटीपी (OTP) जनरेट करना है।

ओटीपी दर्ज करने के बाद आपको लोन के लिए आवेदन केंद्र को सेलेक्ट करना है।

इसके बाद सभी जरूरी डॉक्यूमेंट को अपलोड करना है।अब आप सबमिट पर क्लिक करना है जिसके बाद आपको एप्लीकेशन नंबर मिल जाएगा।

आप एप्लीकेशन नंबर के जरिये आसानी से स्टेटस चेक कर सकते हैं।

कौन-से डॉक्यूमेंट है जरूरी

आईडी प्रूफ
एड्रेस प्रूफ
बिजनेस प्रूफ
पासपोर्ट साइज फोटो
क्या है योजनी की पात्रता
भारतीय नागरिक ही इस स्कीम का लाभ उठा सकते हैं।

अगर कोई व्यक्ति बैंक या वित्तीय संस्था का डिफॉल्टर है तो उसे इस स्कीम का लाभ नहीं मिलेगा।

योजना का लाभ पाने के लिए किसी एजेंट की आवश्यकता नहीं होती है।

इस स्कीम का लाभ पाने के लिए ऑनलाइन आसानी से अप्लाई कर सकते हैं।

शिव

लोक कल्याणकारी हैं तो संकट विनाशक भी

शिवरात्रि का पर्व भी दुःखों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है....

सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाया हुआ है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव ही होंगे। शिव को महाकाल कहा जाता है, अर्थात समय। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्रित कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है। भगवान शिव भोले भण्डारी है और जग का कल्याण करने वाले हैं। भगवान शिव आदिदेव है, देवों के देव है, महादेव हैं। सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दुःखों को हरने वाले हैं। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुण मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है, जो शिवत्व का जन्म दिवस है। यह शिव से मिलन की रात्रि का सुअवसर है। इसी दिन निशीथ अर्धरात्रि में शिवलिंग का प्रादुर्भाव हुआ था। इसीलिये यह पुनीत पर्व सम्पूर्ण देश एवं दुनिया में उल्लास और उमंग के साथ मनाया जाता है। यह पर्व सांस्कृतिक एवं धार्मिक चेतना की ज्योति किरण है। इससे हमारी चेतना जाग्रत होती है, जीवन एवं जगत में प्रसन्नता, गति, संगति, सौहार्द, ऊर्जा, आत्मशुद्धि एवं नवप्रेरणा का प्रकाश परिव्याप्त होता है। यह पर्व जीवन के श्रेष्ठ एवं मंगलकारी व्रतों, संकल्पों तथा विचारों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

शिव सभी देवताओं में वे सर्वोच्च हैं, महानतम हैं, दुःखों को हरने वाले हैं। वे कल्याणकारी हैं तो संहारकर्ता भी हैं। सृष्टि के कल्याण हेतु जीर्ण-शीर्ण वस्तुओं का विनाश आवश्यक है। इस विनाश में ही निर्माण के बीज छुपे हुए हैं। इसलिये शिव संहारकर्ता के रूप में निर्माण एवं नव-जीवन के प्रेरक भी है। सृष्टि पर जब कभी कोई संकट पड़ा तो उसके समाधान के लिये वे सबसे आगे रहे। जब भी कोई संकट देवताओं एवं असुरों पर पड़ा तो उन्होंने शिव को ही याद किया और शिव ने उनकी रक्षा की। समुद्र-मंथन में देवता और राक्षस दोनों ही लगे हुए थे। सभी अमृत चाहते थे, अमृत मिला भी लेकिन उससे पहले हलाहल विष निकला जिसकी गर्मी, ताप एवं संकट ने सभी को व्याकुल कर दिया एवं संकट में डाल दिया, विष ऐसा की पूरी सृष्टि का नाश कर दें, प्रश्न था कौन ग्रहण करें इस विष को। भोलेनाथ को याद किया गया गया। वे उपस्थित हुए और इस विष को ग्रहण कर सृष्टि के सम्मुख उपस्थित संकट से रक्षा की। उन्होंने इस विष को कंठ तक ही रखा और वे नीलकंठ कहलाये। इसी प्रकार गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिये भोले बाबा ने ही सहयोग किया। क्योंकि गंगा के प्रचंड दबाव और प्रवाह को पृथ्वी कैसे सहन करें, इस समस्या के समाधान के लिये शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को समाहित किया और फिर अनुकूल गति के साथ गंगा का प्रवाह उनकी जटाओं से हुआ। ऐसे अनेक सृष्टि से जुड़े संकट और उसके विकास से जुड़ी घटनाएं हैं जिनके लिये शिव ने अपनी शक्तियों, तप और साधना का प्रयोग करके दुनिया को नव-जीवन प्रदान किया। शिव का अर्थ ही कल्याण है, वही शंकर है, और वही रुद्र भी है। शंकर में शं का अर्थ कल्याण है और कर का अर्थ करने वाला। रुद्र में रु का अर्थ दुःख और द्र का अर्थ हरना-हटाना। इस प्रकार रुद्र का अर्थ हुआ, दुःख को दूर करने वाले अथवा कल्याण करने वाले।

शिवरात्रि का पर्व भी दुःखों को दूर करने एवं सुखों का सृजन करने का प्रेरक है। भोलेनाथ भाव के भूखे हैं, कोई भी उन्हें सच्ची श्रद्धा, आस्था और प्रेम के पुष्प अर्पित कर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर सकता है। दिखावे, ढोंग एवं आडम्बर से मुक्त विद्वान-अनपढ़, धनी-निर्धन कोई भी अपनी सुविधा तथा सामर्थ्य से उनकी पूजा और अर्चना कर सकता है। शिव न काठ में रहता है, न पत्थर में, न मिट्टी की मूर्ति में, न मन्दिर की भव्यता में, वे तो भावों में निवास करते हैं।

शिवरात्रि का व्रत करने वाले इस लोक के समस्त भोगों को भोगकर अंत में शिवलोक में जाते हैं। शिवरात्रि की पूजा रात्रि के चारों प्रहर में करनी चाहिए। शिव को बिल्वपत्र, धतूरे के पुष्प तथा प्रसाद में भांग अति प्रिय हैं। लौकिक दृष्टि से दूध, दही, घी, शकर, शहद- इन पाँच अमृतों (पंचामृत) का पूजन में उपयोग करने का विधान है। महामृत्युंजय मंत्र शिव आराधना का महामंत्र है। शिवरात्रि वह समय है जो पारलौकिक, मानसिक एवं भौतिक तीनों प्रकार की व्यथाओं, संतापों, पाशों से मुक्त कर देता है। शिव की रात शरीर, मन और वाणी को विश्राम प्रदान करती है। शरीर, मन और आत्मा को ऐसी शान्ति प्रदान करती है जिससे शिव तत्व की प्राप्ति सम्भव हो पाती है। शिव और शक्ति का मिलन गतिशील ऊर्जा का अन्तर्जगत से एकात्म होना है। लौकिक जगत में लिंग का सामान्य अर्थ चिह्न होता है जिससे पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग की पहचान होती है। शिव लिंग लौकिक के परे है। इस कारण एक लिंगी है। आत्मा है। शिव संहारक हैं। वे पापों के संहारक हैं। शिव की गोद में पहुंचकर हर व्यक्ति भय-ताप से मुक्त हो जाता है।

भगवान शिव को रूद्र नाम से जाना जाता है रुद्र का अर्थ है रुत्दूर करने वाला अर्थात दुखों को हरने वाला अतः भगवान शिव का स्वरूप कल्याण कारक है। शिव शक्ति के प्रतीक ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की निशीथ काल में हुआ था। शिव पुराण के अनुसार सृष्टि के आरंभ में ब्रह्मा ने इसी दिन रुद्र रूपी शिव को उत्पन्न किया था। शिव एवं हिमालय पुत्री पार्वती का विवाह भी इसी दिन हुआ था। अतः यह शिव एवं शक्ति के पूर्ण समरस होने की रात्रि भी है। वे सृष्टि के सर्जक हैं। वे मनुष्य जीवन के ही नहीं, सृष्टि के निर्माता, पालनहार एवं पोषक हैं। उन्होंने मनुष्य जाति को नया जीवन दर्शन दिया। जीने की शैली सिखलाई। शिवरात्रि जागृति का पर्व है, जिसमें आत्मा का मंगलकारी शिव से मिलना होता है। यह आत्म स्वरूप को जानने की रात्रि है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का दुर्लभ आध्यात्मिक अनुभव है। यह स्वयं के भीतर जाकर अथवा अंतश्चेतना की गहराइयों में उतरकर आत्म साक्षात्कार करने का प्रयोग है। यह आत्मयुद्ध की प्रेरणा है, क्योंकि स्वयं को जीत लेना ही जीवन की सच्ची जीत है, शिवत्व की प्राप्ति है। काल के इस क्षण की सार्थकता शिवमय हो जाने में है। शक्ति माया नहीं है, मिथ्या नहीं है, प्रपंच नहीं है। इसके विपरीत शक्ति सत्य है। जीव और जगत भी सत्य है। सभी तत्वतः सत्य हैं। सभी शिवमय हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। त्रिदेवों में भगवान शिव संहार के देवता माने गए हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदि स्रोत हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिवरात्रि भोगवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध एक प्रेरणा है, संयम की, त्याग की, भक्ति की, संतुलन की। सुविधाओं के बीच रहने वालों के लिये सोचने का अवसर है कि वे आवश्यक जरूरतों के साथ जीते हैं या जरूरतों से ज्यादा आवश्यकताओं की मांग करते हैं। इस शिवभक्ति एवं उपवास की यात्रा में हर व्यक्ति में अहंकार नहीं, बल्कि शिशुभाव जागता है। क्रोध नहीं, क्षमा शोभती है। कष्टों में मन का विचलन नहीं, सहने का धैर्य रहता है। यह तपस्या स्वयं के बदलाव की एक प्रक्रिया है। यह प्रदर्शन नहीं, आत्मा के अभ्युदय की प्रेरणा है। इसमें भौतिक परिणाम पाने की महत्वाकांक्षा नहीं, सभी चाहों का संन्यास है।

शिव ने संसार और संन्यास दोनों को जीया है। उन्होंने जीवन को नई और परिपूर्ण शैली दी। पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति की जीवन में आवश्यकता और उपयोगिता का प्रशिक्षण दिया। कला, साहित्य, शिल्प, मनोविज्ञान, विज्ञान, पराविज्ञान और शिक्षा के साथ साधना के मानक निश्चित किए। सबको काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की पुरुषार्थ चतुष्टयी की सार्थकता सिखलाई। वे भारतीय जीवन-दर्शन के पुरोधा हैं। आज उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व सृष्टि के इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्रोत है। लेकिन हम इतने भोले हैं कि अपने शंकर को नहीं समझ पाए, उनको समझना, जानना एवं आत्मसात करना हमारे लिये स्वाभिमान और आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला अनुभव सिद्ध हो सकता है। मानवीय जीवन के सभी आयाम शिव से ही पूर्णत्व को पाते हैं।

– ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

पहली बार रख रहे हैं शिवरात्रि का व्रत, तो जान लें क्या खाएं और क्या नहीं

साल 2024 में 8 मार्च को महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाएगा। फाल्गुन मास में पड़ने वाली शिवरात्रि का सबसे ज्यादा महत्व होता है। भक्तगण इस दिन भोलेनाथ के लिए व्रत रखते हैं पूरी विधि-विधान से उनकी पूजा करते हैं। माना जाता है कि इससे भगवान मनचाही इच्छा पूरी करते हैं। अगर आप भी शिवरात्रि का व्रत रखने वाले हैं तो जान लें क्या खाएं और क्या नहीं।

नई दिल्ली। महाशिवरात्रि का पर्व हिंदू धर्म होली- दिवाली से कम नहीं है। भगवान शिव को समर्पित इस त्योहार की धूम उत्तर प्रदेश से लेकर मध्य प्रदेश, पंजाब से लेकर हिमाचल, कर्नाटक, बिहार, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश लगभग हर जगह देखने को मिलती है। महाशिवरात्रि का पर्व दक्षिण भारतीय कैलेंडर के अनुसार माघ के महीने में और उत्तर भारतीय कैलेंडर के अनुसार फाल्गुन महीने में मनाया जाता है। भक्तगण शिव मंदिरों में पूरे विधि-विधान के साथ पूजा करते हैं। शिवलिंग पर दूध, धतूरे के फूल, बेल पत्र आदि चढ़ाते हैं और पूरे दिन उपवास भी रखते हैं। उपवास को लेकर लोगों का मानना है कि इससे भगवान मनचाहा फल देते है। अगर आप भी पहली बार रखने जा रहे हैं महाशिवरात्रि का व्रत, तो जान लें इससे जुड़े कुछ जरूरी नियम।

शिवरात्रि व्रत के नियम

1. महाशिवरात्रि के दिन अगर आप व्रत रख रहे हैं, तो एक समय ही फलाहार करना चाहिए। मतलब आप सिर्फ एक समय ही भोजन खा सकते हैं, लेकिन अगर कोई महिला प्रेग्नेंट है या फिर किसी बीमारी से ग्रस्त हैं, तो आप दो से तीन बार भी खा सकते हैं।
2. व्रत में आप सिंघाड़े का हलवा, कुट्टू, सामा के चावल, आलू आदि का सेवन किया जा सकता है।
3. व्रत में गेहूं या चावल का सेवन नहीं करना चाहिए। इसके अलावा साबुत अनाज से बनी चीज़ें भी नहीं खानी चाहिए।

महाशिवरात्रि के व्रत में न खाएं ये चीज़ें

व्रत में लहसुन-प्याज का सेवन वर्जित होता है।

महाशिवरात्रि के दिन सफेद नमक नहीं खाना चाहिए। इसकी जगह सेंधा नमक खाया जा सकता है।

उपवास के दौरान बहुत ज्यादा तला-भुना खाना अवॉयड करें। इससे पाचन सिस्टम डिस्टर्ब हो सकता है।

व्रत में मांस, मंदिरा का सेवन बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।

महाशिवरात्रि व्रत में दिन में सोएं नहीं।

महाशिवरात्रि व्रत के लाभ

महाशिवरात्रि का व्रत रखने से धन, सम्मान, सुख-शांति की प्राप्ति होती है। अगर कोई कुंवारी कन्या यह व्रत रखती है, तो इससे विवाह में आ रही अड़चनें दूर होती हैं।

शिव के कुछ रहस्य

आदिनाथ शिव-:

सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया इसलिए उन्हें 'आदिदेव' भी कहा जाता है। 'आदि' का अर्थ प्रारंभ। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम 'आदिश' भी है।

शिव के अस्त्र-शस्त्र-:

शिव का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्रत्रिशूल है। उक्त सभी का उन्होंने ही निर्माण किया था।

भगवान शिव का नाग-:

शिव के गले में जो नाग लिपटा रहता है उसका नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

शिव की अर्द्धांगिनी-:

शिव की पहली पत्नी सती ने ही अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया और वही उमा, उर्मि, काली कही गई हैं।

शिव के पुत्र-:

शिव के प्रमुख 6 पुत्र हैं- गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा। सभी के जन्म की कथा रोचक है।

शिव के शिष्य-:

शिव के 7 शिष्य हैं जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। इन ऋषियों ने ही शिव के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया जिसके चलते भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियों की उत्पत्ति हुई। शिव ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी। शिव के शिष्य हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज इसके अलावा 8वें गौरशिरस मुनि भी थे।

शिव के गण-:

शिव के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है।

शिव पंचायत-:

भगवान सूर्य, गणपति, देवी, रुद्र और विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

शिव के द्वारपाल-:

नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल।

शिव पार्षद-:

जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं।

सभी धर्मों का केंद्र शिव-:

शिव की वेशभूषा ऐसी है कि प्रत्येक धर्म के लोग उनमें अपने प्रतीक ढूंढ सकते हैं। मुशरिक, यजीदी, साबिईन, सुबी, इब्राहीमी धर्मों में शिव के होने की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। शिव के शिष्यों से एक ऐसी परंपरा की शुरुआत हुई, जो आगे चलकर शैव, सिद्ध, नाथ, दिगंबर और सूफी संप्रदाय में विभक्त हो गई।

बौद्ध साहित्य के मर्मज्ञ अंतरराष्ट्रीय-:

ख्यातिप्राप्त विद्वान प्रोफेसर उपासक का मानना है कि शंकर ने ही बुद्ध के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने पालि ग्रंथों में वर्णित 27 बुद्धों का उल्लेख करते हुए बताया कि इनमें बुद्ध के 3 नाम अतिप्राचीन हैं- तणंकर, शणंकर और मेघंकर।

देवता और असुर दोनों के प्रिय शिव-:

भगवान शिव को देवों के साथ असुर, दानव, राक्षस, पिशाच, गंधर्व, यक्ष आदि सभी पूजते हैं। वे रावण को भी वरदान देते हैं और राम को भी। उन्होंने भस्मासुर, शुक्राचार्य आदि कई असुरों को वरदान दिया था। शिव, सभी आदिवासी, वनवासी जाति, वर्ण, धर्म और समाज के सर्वोच्च देवता हैं।

शिव चिह्न-:

वनवासी से लेकर सभी साधारण व्यक्ति जिस चिह्न की पूजा कर सकें, उस पत्थर के ढेले, बटिया को शिव का चिह्न माना जाता है। इसके अलावा रुद्राक्ष और त्रिशूल को भी शिव का चिह्न माना गया है। कुछ लोग डमरू और अर्द्ध चन्द्र को भी शिव का चिह्न मानते हैं, हालांकि ज्यादातर लोग शिवलिंग अर्थात शिव की ज्योति का पूजन करते हैं।

शिव की गुफा-:

शिव ने भस्मासुर से बचने के लिए एक पहाड़ी में अपने त्रिशूल से एक गुफा बनाई और वे फिर उसी गुफा में छिप गए। वह गुफा जम्मू से 150 किलोमीटर दूर त्रिकूटा की पहाड़ियों पर है। दूसरी ओर भगवान शिव ने जहां पार्वती को अमृत ज्ञान दिया था वह गुफा 'अमरनाथ गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है।

शिव के पैरों के निशान-:

श्रीपद- श्रीलंका में रतन द्वीप पहाड़ की चोटी पर स्थित श्रीपद नामक मंदिर में शिव के पैरों के निशान हैं। ये पदचिह्न 5 फुट 7 इंच लंबे और 2 फुट 6 इंच चौड़े हैं। इस स्थान को सिवानोलीपदम कहते हैं। कुछ लोग इसे आदम पीक कहते हैं।

रुद्र पद- तमिलनाडु के नागपट्टीनम जिले के थिरुवेंगडू क्षेत्र में श्रीस्वेदारण्येश्वर का मंदिर में शिव के पदचिह्न हैं जिसे 'रुद्र पदम' कहा जाता है। इसके अलावा थिरुवन्नामलाई में भी एक स्थान पर शिव के पदचिह्न हैं।

तेजपुर- असम के तेजपुर में ब्रह्मपुत्र नदी के पास स्थित रुद्रपद मंदिर में शिव के दाएं पैर का निशान है।

जागेश्वर- उत्तराखंड के अल्मोड़ा से 36 किलोमीटर दूर जागेश्वर मंदिर की पहाड़ी से लगभग साढ़े 4 किलोमीटर दूर जंगल में भीम के पास शिव के पदचिह्न हैं। पांडवों को दर्शन देने से बचने के लिए उन्होंने अपना एक पैर यहां और दूसरा कैलाश में रखा था।

रांची- झारखंड के रांची रेलवे स्टेशन से 7 किलोमीटर की दूरी पर 'रांची हिल' पर शिवजी के पैरों के निशान हैं। इस स्थान को 'पहाड़ी बाबा मंदिर' कहा जाता है।

शिव के अवतार-:

वीरभद्र, पिप्पलाद, नंदी, भैरव, महेश, अश्वत्थामा, शरभावतार, गृहपति, दुर्वासा, हनुमान, वृषभ, यतिनाथ, कृष्णदर्शन, अवधूत, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, किरात, सुनटनर्तक, ब्रह्मचारी, यक्ष, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, द्विज, नतेश्वर आदि हुए हैं। वेदों में रुद्रों का जिक्र है। रुद्र 11 बताए जाते हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शंभू, चण्ड तथा भव।

शिव का विरोधाभासिक परिवार-:

शिवपुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर है, जबकि शिव के गले में वासुकि नाग है। स्वभाव से मयूर और नाग आपस में दुश्मन हैं। इधर गणपति का वाहन चूहा है, जबकि सांप मूषकभक्षी जीव है। पार्वती का वाहन शेर है, लेकिन शिवजी का वाहन तो नंदी बैल है। इस विरोधाभास या वैचारिक भिन्नता के बावजूद परिवार में एकता है।

शिव निवास-:

तिब्बत स्थित कैलाश पर्वत पर उनका निवास है। जहां पर शिव विराजमान हैं उस पर्वत के ठीक नीचे पाताल लोक है जो भगवान विष्णु का स्थान है। शिव के आसन के ऊपर वायुमंडल के पार क्रमशः स्वर्ग लोक और फिर ब्रह्माजी का स्थान है।

शिव भक्त-:

ब्रह्मा, विष्णु और सभी देवी-देवताओं सहित भगवान राम और कृष्ण भी शिव भक्त है। हरिवंश पुराण के अनुसार, कैलास पर्वत पर कृष्ण ने शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी। भगवान राम ने रामेश्वरम में शिवलिंग स्थापित कर उनकी पूजा-अर्चना की थी।

शिव ध्यान -:

शिव की भक्ति हेतु शिव का ध्यान-पूजन किया जाता है। शिवलिंग को बिल्वपत्र चढ़ाकर शिवलिंग के समीप मंत्र जाप या ध्यान करने से मोक्ष का मार्ग पुष्ट होता है।

शिव मंत्र-:

दो ही शिव के मंत्र हैं पहला- ॐ नमः शिवायः। दूसरा महामृत्युंजय मंत्र- ॐ ह्रौं जू सः। ॐ भूः भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जू ह्रौं ॐ ॥ है।

शिव व्रत और त्योहार-:

सोमवार, प्रदोष और श्रावण मास में शिव व्रत रखे जाते हैं। शिवरात्रि और महाशिवरात्रि शिव का प्रमुख पर्व त्योहार है।

शिव प्रचारक-:

भगवान शंकर की परंपरा को उनके शिष्यों बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, अगस्त्य मुनि, गौरशिरस मुनि, नंदी, कार्तिकेय, भैरवनाथ आदि ने आगे बढ़ाया। इसके अलावा वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, बाण, रावण, जय और विजय ने भी शैवपंथ का प्रचार किया। इस परंपरा में सबसे बड़ा नाम आदिगुरु भगवान दत्तात्रेय का आता है। दत्तात्रेय के बाद आदि शंकराचार्य, मत्स्येन्द्रनाथ और गुरु गुरुगोरखनाथ का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

शिव महिमा-:

शिव ने कालकूट नामक विष पिया था जो अमृत मंथन के दौरान निकला था। शिव ने भस्मासुर जैसे कई असुरों को वरदान दिया था। शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया था। शिव ने गणेश और राजा दक्ष के सिर को जोड़ दिया था। ब्रह्मा द्वारा छल किए जाने पर शिव ने ब्रह्मा का पांचवां सिर काट दिया था।

शैव परम्परा-:

दसनामी, शाक्त, सिद्ध, दिगंबर, नाथ, लिंगायत, तमिल शैव, कालमुख शैव, कश्मीरी शैव, वीरशैव, नाग, लकुलीश, पाशुपत, कापालिक, कालदमन और महेश्वर सभी शैव परंपरा से हैं। चंद्रवंशी, सूर्यवंशी, अग्निवंशी और नागवंशी भी शिव की परंपरा से ही माने जाते हैं। भारत की असुर, रक्ष और आदिवासी जाति के आराध्य देव शिव ही हैं। शैव धर्म भारत के आदिवासियों का धर्म है।

शिव के प्रमुख नाम-:

शिव के वैसे तो अनेक नाम हैं जिनमें 108 नामों का उल्लेख पुराणों में मिलता है लेकिन यहां प्रचलित नाम जानें- महेश, नीलकंठ, महादेव, महाकाल, शंकर, पशुपतिनाथ, गंगाधर, नटराज, त्रिनेत्र, भोलेनाथ, आदिदेव, आदिनाथ, त्रियंबक, त्रिलोकेश, जटाशंकर, जगदीश, प्रलयंकर, विश्वनाथ, विश्वेश्वर, हर, शिवशंभु, भूतनाथ और रुद्र।

अमरनाथ के अमृत वचन-:

शिव ने अपनी अर्धांगिनी पार्वती को मोक्ष हेतु अमरनाथ की गुफा में जो ज्ञान दिया उस ज्ञान की आज अनेकानेक शाखाएं हो चली हैं। वह ज्ञानयोग और तंत्र के मूल सूत्रों में शामिल है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें भगवान शिव द्वारा पार्वती को बताए गए 112 ध्यान सूत्रों का संकलन है।

शिव ग्रंथ-:

वेद और उपनिषद सहित विज्ञान भैरव तंत्र, शिव पुराण और शिव संहिता में शिव की संपूर्ण शिक्षा और दीक्षा समाई हुई है। तंत्र के अनेक ग्रंथों में उनकी शिक्षा का विस्तार हुआ है।

शिवलिंग-:

वायु पुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है, उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। वस्तुतः यह संपूर्ण सृष्टि बिंदु-नाद स्वरूप है। बिंदु शक्ति है और नाद शिव। बिंदु अर्थात ऊर्जा और नाद अर्थात ध्वनि। यही दो संपूर्ण ब्रह्मांड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना है।

बारह ज्योतिर्लिंग-:

सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ॐकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथजी, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ, घृष्णेश्वर। ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में अनेकों मान्यताएं प्रचलित है। ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रह्मात्मलिंग' जिसका अर्थ है 'व्यापक प्रकाश'। जो शिवलिंग के बारह खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है।

दूसरी मान्यता अनुसार शिव पुराण के अनुसार प्राचीनकाल में आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फैल गया। इस तरह के अनेकों उल्का पिंड आकाश से धरती पर गिरे थे। भारत में गिरे अनेकों पिंडों में से प्रमुख बारह पिंड को ही ज्योतिर्लिंग में शामिल किया गया।

शिव का दर्शन-:

शिव के जीवन और दर्शन को जो लोग यथार्थ दृष्टि से देखते हैं वे सही बुद्धि वाले और यथार्थ को पकड़ने वाले शिवभक्त हैं, क्योंकि शिव का दर्शन कहता है कि यथार्थ में जियो, वर्तमान में जियो, अपनी चित्तवृत्तियों से लड़ो मत, उन्हें अजनबी बनकर देखो और कल्पना का भी यथार्थ के लिए उपयोग करो। आइंस्टीन से पूर्व शिव ने ही कहा था कि कल्पना ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

शिव और शंकर-:

शिव का नाम शंकर के साथ जोड़ा जाता है। लोग कहते हैं- शिव, शंकर, भोलेनाथ। इस तरह अनजाने ही कई लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम बताते हैं। असल में, दोनों की प्रतिमाएं अलग-अलग आकृति की हैं। शंकर को हमेशा तपस्वी रूप में दिखाया जाता है। कई जगह तो शंकर को शिवलिंग का ध्यान करते हुए दिखाया गया है। अतः शिव और शंकर दो अलग अलग सत्ताएं है। हालांकि शंकर को भी शिवरूप माना गया है। माना जाता है कि महेष (नंदी) और महाकाल भगवान शंकर के द्वारपाल हैं। रुद्र देवता शंकर की पंचायत के सदस्य हैं।

देवों के देव महादेव-:

देवताओं की दैत्यों से प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी। ऐसे में जब भी देवताओं पर घोर संकट आता था तो वे सभी देवाधिदेव महादेव के पास जाते थे। दैत्यों, राक्षसों सहित देवताओं ने भी शिव को कई बार चुनौती दी, लेकिन वे सभी परास्त होकर शिव के समक्ष झुक गए इसीलिए शिव हैं देवों के देव महादेव। वे दैत्यों, दानवों और भूतों के भी प्रिय भगवान हैं। वे राम को भी वरदान देते हैं और रावण को भी।

शिव हर काल में-:

भगवान शिव ने हर काल में लोगों को दर्शन दिए हैं। राम के समय भी शिव थे। महाभारत काल में भी शिव थे और विक्रमादित्य के काल में भी शिव के दर्शन होने का उल्लेख मिलता है। भविष्य पुराण अनुसार राजा हर्षवर्धन को भी भगवान शिव ने दर्शन दिए।।

महाशिवरात्रि पर्व

1. चतुर्दशी पहले ही दिन निशीथव्यापिनी हो, तो उसी दिन महाशिवरात्रि मनाते हैं। रात्रि का आठवाँ मुहूर्त निशीथ काल कहलाता है।

सरल शब्दों में कहें तो जब चतुर्दशी तिथि शुरू हो और रात का आठवाँ मुहूर्त चतुर्दशी तिथि में ही पड़ रहा हो, तो उसी दिन शिवरात्रि मनानी चाहिए।

2. चतुर्दशी दूसरे दिन निशीथकाल के पहले हिस्से को छुए और पहले दिन पूरे निशीथ को व्याप्त करे, तो पहले दिन ही महाशिवरात्रि का आयोजन किया जाता है। अतः शिवरात्रि महापर्व 8 मार्च शुक्रवार को मनाया जाएगा।

महाशिवरात्रि पर विशेष योग-:

इस बार शिवरात्रि पर विशेष शुभ योग पड़ रहे हैं, 8 मार्च को सूर्योदय से रात्रि 12:45 तक शिव नामक शुभ योग रहेगा। वही सुबह सूर्य उदय से लेकर सुबह 10:41 तक सर्वार्थ सिद्धि नामक शुभ योग भी रहेगा।

शिवरात्रि व्रत की पूजा-विधि-:

1. मिट्टी या तांबे के लोटे में जल में थोड़ा सा गंगाजल मिला कर, देसी गाय का कच्चा दूध, बेलपत्र, आक- धतूरे के फूल, चावल आदि 'शिवलिंग' पर चढ़ाना चाहिए।
2. शिव पुराण का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र या शिव के पंचाक्षर मंत्र "ॐ नमः शिवायः का जाप इस दिन करना चाहिए। साथ ही महाशिवरात्री के दिन रात्रि जागरण का भी विधान है।
3. शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार शिवरात्रि का पूजन 'निशीथ काल' में करना सर्वश्रेष्ठ रहता है। हालाँकि भक्त रात्रि के चारों प्रहरों में से अपनी सुविधानुसार यह पूजन कर सकते हैं।
4. इस दिन प्रातः जल्दी स्नान आदि से निवृत्त होकर भगवान शिव को जल अर्पित करना चाहिए और व्रत का संकल्प लेना चाहिए।
5. महाशिवरात्रि पूजन का निशीथ काल विशेष महत्व है।

निशीथ काल पूजा मुहूर्त-:

08 मार्च, शुक्रवार-
24:02 से 24:55 तक
(रात्रि 12:02 से रात्रि 12:55 बजे तक)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023